A Daily News Magazine
भोपाल
मंगलवार, 03 दिसंबर, 2024

सुबह सवेरे

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष -22 अंक-94 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

प्रसंगवश

कोर्ट में जजों की मौखिक टिप्पणी क्या क़ानून के बराबर है?

इमरान क़ुरैशी

ज्ञानवापी मामले की सुनवाई के दौरान तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ ने एक मौखिक टिप्पणी की थी। इस टिप्पणी के बाद मस्जिदों के नीचे मंदिरों के अस्तित्व की जांच के लिए सर्वे कराए जाने की मांग की झड़ी सी लग गई है। उत्तर प्रदेश के संभल में शाही जामा मस्जिद के सर्वे के लिए ट्रायल कोर्ट ने एडवोकेट कमिश्नर को नियुक्त किया था। 19 नवंबर के बाद 24 नवंबर को हुए दूसरे सर्वे के दौरान संभल में हिंसा भड़की।

पुलिस ने हिंसा में चार लोगों के मारे जाने की पुष्टि की है। इस बाद एक अन्य अदालत ने राजस्थान के अजमेर शरीफ़ दरगाह के नीचे मंदिर के अस्तित्व का पता लगाने के लिए सर्वे कराने की मांग वाली एक याचिका को स्वीकार कर लिया। मथुरा की शाही ईदगाह मस्जिद और वाराणसी के ज्ञानवापी मस्जिद में सर्वे के लिए दायर याचिकाओं पर आए फ़ैसलों के बाद अब उत्तर प्रदेश और राजस्थान की निचली अदालतों के इन फ़ैसलों ने क़ानूनी जानकारों को निराश किया है। सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ वकील प्रशांत भूषण ने कहा, 'एक मौखिक टिप्पणी (तत्कालीन सीजेआई की) क़ानून नहीं बन सकती।' लेकिन उत्तर प्रदेश और राजस्थान के इन दोनों मामलों के याचिकाकर्ता और 'हिंदू राष्ट्रीय सेना' नाम की संस्था के अध्यक्ष विष्णु गुप्ता इससे निश्चिंत हैं। उन्होंने कहा, हम ऐसी कोई भी जगह नहीं छोड़ेंगे जहां मस्जिद है।' विष्णु गुप्ता के विचार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) प्रमुख मोहन भागवत के बयान से उलट हैं। मोहन भागवत ने 2 जून 2022 को लोगों से कहा था, ÷हर मस्जिद में शिवलिंग ढूंढने की ज़रूरत नहीं है।

भारत के पिछले चीफ़ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ ने ज्ञानवापी मामले की सुनवाई के दौरान मई 2022 में एक मौखिक टिप्पणी की थी। उन्होंने कहा था कि 'प्लेसेस ऑफ़ वर्शिप एक्ट 1991' (उपासना स्थल अधिनियम) 15 अगस्त 1947 की स्थिति के अनुसार, किसी भी संरचना के धार्मिक चरित्र की 'जांच करने' पर रोक नहीं लगाता है। उपासना स्थल अधिनियम उस समय अस्तित्व में आया, जब राम जन्मभूमि आंदोलन चरम पर था। सुप्रीम कोर्ट ने इस अधिनियम को संवैधानिक मान्यता देते हुए इसे वैध ठहराया था। सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि यह अधिनियम दर्शाता है, इतिहास और उसकी ग़लतियों का इस्तेमाल वर्तमान और भविष्य को दबाने के हथियार के रूप में नहीं किया जाएगा। लेकिन तत्कालीन चीफ़ जस्टिस की अध्यक्षता वाली पांच जजों की बेंच ने ज्ञानवापी की मस्जिद कमेटी से कहा था कि वो अपनी आपत्तियां ट्रायल कोर्ट के सामने दायर करे।

तत्कालीन सीजेआई की इस मौखिक टिप्पणी को ट्रायल कोर्ट और बाद में इलाहाबाद हाई कोर्ट ने क़ानूनी अधिकार के तौर पर लिया। इन अदालतों ने कहा कि पूजा स्थल अधिनियम के तहत इस तरह के मामलों पर रोक नहीं है। इसके बाद मथुरा में कृष्ण जन्मभूमि-शाही ईदगाह मामले में भी सुनवाई को जारी रखने की मंजूरी मिली। सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ वकील संजय हेगड़े ने कहा, उपासना स्थल अधिनियम 15 अगस्त 1947 की स्थिति के अनुसार उपासना स्थल के रूप को बदलने से रोकता है। इस अधिनियम के तहत संभल और अजमेर मामलों की सुनवाई को शुरुआत में ही ख़ारिज कर दिया जाना चाहिए था। ज्ञानवापी मामले में जस्टिस चंद्रचूड़ की मौखिक टिप्पणी के कारण यह माना गया कि भले ही 15 अगस्त 1947 के अनुसार रहे उपासना स्थलों के चरित्र में बदलाव नहीं किया जा सकता लेकिन उनके चरित्र की जांच की जा सकती है।

प्रशांत भूषण कहते हैं, अदालत लोगों से बात करने के लिए एक स्थानीय आयुक्त की नियुक्ति कर सकती है। लेकिन कोई भी सर्वे करने या खुदाई की अनुमति नहीं दी जा सकती है। ख़ासकर जब यह दावा किया जा रहा हो कि 1947 से पहले वहां कुछ था। सुप्रीम कोर्ट के वकील कालीश्वरम राज कहते हैं, ज्ञानवापी मस्जिद के सर्वे में दिखाई गई उदारता ने देशभर की अदालतों को ग़लत संदेश दिया है। संसद का एक अधिनियम न केवल जनता के फ़ैसले की अभिव्यक्ति है बल्कि यह एक ऐसा उपकरण भी है जिसे देश ने धार्मिक कट्टरता के ख़तरे से खुद को बचाने के लिए विकसित किया। हमारी अदालतों और संस्थानों को इतिहास से सीख लेनी चाहिए।

यह बहुत ही तुच्छ और अफ़सोसजनक है कि जहां कोई राहत नहीं दी जा सकती वहां मुकदमे की सुनवाई हो रही है। संभल मामला पूर्व सीजेआई की बेंच के आदेश का दुर्भाग्यपूर्ण और अप्रिय नतीजा है।

संजय हेगड़े ने कहा, मौखिक टिप्पणी का कोई न्यायिक महत्व नहीं होता है। सुप्रीम कोर्ट यह कहते हुए एक आदेश या फ़ैसला दे सकता है कि अदालतों का यह कर्तव्य है कि वे ऐसे मामलों को ग़ैरकानूनी बताते हुए उन्हें बंद कर दें।प्रशांत भूषण कहते हैं, सुप्रीम कोर्ट को एक और फैसला देने की ज़रूरत है जिसमें इस बात का ज़िक्र हो कि उपासना स्थल क़ानून के लागू होने के बाद उपसाना स्थलों के चरित्र को नहीं बदला जा सकता है। सुप्रीम कोर्ट में इसको लेकर एक याचिका दायर की जा सकती है जिसमें यह मांग की जाए कि उपासना स्थल क़ानून के मद्देनज़र कोई भी सर्वे या खुदाई नहीं करवा सकता है। इससे इस तरह की बहुत सी गड़बड़ियों पर रोक लग जाएगी। कुछ वकीलों ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि सुप्रीम कोर्ट संविधान के अनुच्छेद 142 के तहत अपनी विशेष शक्तियों का इस्तेमाल करने पर भी विचार कर सकता है।

इसके तहत यह फ़ैसला दिया जा सकता है कि बिना सुप्रीम कोर्ट की अनुमति के किसी स्थान के धार्मिक चरित्र पर सवाल उठाने वाला कोई मुकदमा दायर नहीं किया जा सकता।

जून 2022 में आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत के बयान के बाद मिले सभी संकेतों से ऐसा लगता है कि संघ के रुख़ में कोई बदलाव नहीं आया है। इस बीच सुप्रीम कोर्ट ने संभल की शाही जामा मस्जिद में ट्रायल कोर्ट के सर्वे के आदेश को चुनौती देने वाली मस्जिद समिति की याचिका पर सुनवाई करते हुए मामले के गुण-दोष पर विचार नहीं किया। चीफ़ जस्टिस संजीव खन्ना और जस्टिस संजय कुमार की बेंच ने ट्रायल कोर्ट से कहा है कि जब तक सर्वे के आदेश को चुनौती देने वाली याचिका हाई कोर्ट में सूचीबद्ध नहीं हो जाती, तब तक मामले पर आगे कोई कार्रवाई न की जाए। संयोग से संभल मस्जिद भी 'स्मारक और पुरातत्व स्थल एवं अवशेष अधिनियम' की धारा 10 के अनुसार एक संरक्षित स्मारक है और एक 'राष्ट्रीय महत्व का स्मारक' है।

(बीबीसी हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश) बीबीसी

पहाड़ों पर 'बर्फबारी' ने बदल दिया है मौसम का मिजाज

● मध्यप्रदेश और राजस्थान में कड़ाके की ठंड ,20 जिलों में पारा 10 डिग्री से कम

नई दिल्ली (एजेंसी)। पहाड़ों पर हो रही बर्फबारी से मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान के कई जिलों में ठंड बढ़ गई है। मध्यप्रदेश के 10, राजस्थान के 8, उत्तर प्रदेश के 2, छत्तीसगढ़ के 2 शहरों में पारा 10 डिग्री से कम रिकॉर्ड किया गया। कश्मीर के मारवाह, किश्तवाड़ और बादवान में सीजन की पहली बर्फबारी हुई। केंद्रीय मौसम विभाग के मुताबिक अगले 24 घंटों में हिमाचल के किन्नौर, कुल्लू, लाहौल स्पीति, कांगड़ा और चंबा में बर्फबारी हो सकती है। इधर, 32 दिन बाद रविवार को दिल्ली का एक्यूआई 300 से नीचे आया। केंद्रीय पर्यावरण नियंत्रण बोर्ड के मुताबिक एक्यूआई 285 रिकॉर्ड किया गया। लेकिन दिल्ली में हवा की कैटेगरी अभी भी 'खराब' है। दक्षिण भारत में कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु में फेंगल तूफान के असर के चलते आज भी भारी बारिश हो रही है। तूफान का लैंडफॉल शनिवार शाम को हुआ, इसके बाद लगातार बारिश के कारण तमिलनाडु में 3 लोगों की मौत हुई है। मौसम विशेषज्ञ एके शुक्ला ने बताया कि 24 साल बाद दिसंबर की शुरुआत ऐसी कड़ाके की ठंड से हुई है। 2001 में 1 दिसंबर को रात का तापमान 9 डिग्री दर्ज किया गया था। इस साल भी 1 दिसंबर को प्रदेश के 12 जिलों में तापमान 10 डिग्री से नीचे रहा। शाजापुर में 6.1 डिग्री दर्ज किया गया। इसके साथ शीतलहर भी चली। वहीं, पचमढ़ी में तापमान 8.2 दर्ज किया गया। 3-4 दिसंबर को कड़ाके की ठंड का दौर शुरू हो सकता है।

ब्रिटेन में अब विदेशी वर्कर को नौकरी पाना होगा मुश्किल

लंदन (एजेंसी)। ब्रिटेन में नौकरी और पढ़ाई के लिए जाने की तैयारी कर रहे भारतीयों की परेशानी बढ़ने वाली है। ब्रिटेन में विदेशी लोगों की आबादी बढ़ती जा रही है और अब सरकार इसे कम करने का प्लान कर रही है। दरअसल, ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टारमर ने देश में आने वाले

लोगों की संख्या कम करने की योजना बनाई है। उन्होंने कहा है कि वह पॉइंट्स-बेस्ड इमिग्रेशन सिस्टम में बदलाव करेंगे। पीएम ने ब्रिटिश वर्कर्स को ट्रेनिंग देने और विदेशी कामगारों पर निर्भरता कम करने पर जोर दिया। ब्रिटिश प्रधानमंत्री की तरफ से नए इमिग्रेशन प्लान का ऐलान ऐसे समय पर किया गया है, जब हाल ही में विदेशी लोगों की संख्या को लेकर एक नया आंकड़ा सामने आया है।

अब बांग्लादेश की हर नापाक हरकत पर भारत की पैनी नजर

● डोनाल्ड ट्रंप के आने से पहले कुछ बड़ा करेंगे मोहम्मद यूनुस! ● बांग्लादेश में राजनीतिक बदलाव का द्विपक्षीय संबंधों पर असर

नई दिल्ली (एजेंसी)। बांग्लादेश में राजनीतिक उठापटक के बाद से भारत के साथ उसके संबंध भी प्रभावित हुए हैं। अब ढाका हाई कोर्ट की तरफ से 2004 के ग्रेनेड हमले में बीएनपी के कार्यवाहक अध्यक्ष तारिक रहमान, पूर्व मंत्री लुत्फोज्जमां बाबर और अन्य को बरी करने के फैसले से दोनों देशों के संबंधों में और गिरावट आ सकती है। वहीं, भारत यूनुस सरकार के कदम पर नजर बनाए हुए हैं। इसके साथ ही सवाल है कि क्या युनूस सरकार ट्रंप की यात्रा से पहले कुछ बड़ा कदम उठाएंगे। हालांकि, यह देखना अभी बाकी है कि क्या इस फैसले से रहमान की ब्रिटेन से बांग्लादेश वापसी का रास्ता साफ होता है। रहमान फिलहाल ब्रिटेन में निर्वासन में रह रहे हैं। रहमान पर आरोप है कि उसने बाबर के साथ मिलकर पूर्वोत्तर के भारत विरोधी विद्रोही समूहों को बांग्लादेश की धरती से काम करने के लिए प्रोत्साहित किया। साल 2004 में, बाबर बीएनपी-जमात शासन के तहत गृह मामलों के राज्य मंत्री थे। उस समय चटगांव बंदरगाह के माध्यम से हथियारों से भरे 10 ट्रकों की तस्करी करने की कोशिश की गई थी। यह हथियार उल्फा और अन्य पूर्वोत्तर विद्रोही समूहों के लिए थे। इसे सतर्क भारतीय एजेंसियों ने विफल कर दिया था। बाबर पर कट्टरपंथियों और आतंकवादियों को बचाने का भी आरोप है। सूत्रों ने कहा कि 10 ट्रक मामले में रहमान की भूमिका को दोषमुक्त नहीं किया।

महाराष्ट्र सीएम पर जल्द ही खत्म होगा सस्पेंस

भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष बावनकुले शपथ स्थल का निरीक्षण करने पहुंचे

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र में सीएम के नाम पर मुहर लगाने के लिए भाजपा विधायक दल की मीटिंग होगी। इस मीटिंग में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण और भाजपा के सीनियर नेता विजय रूपाणी पर्यवेक्षक के तौर पर मौजूद रहेंगे। माना जा रहा है कि इस मीटिंग में ही ऐलान किया जाएगा कि मुख्यमंत्री किसे बनाया जाएगा। भाजपा विधायक दल का नेता चुनने के लिए ही मीटिंग होनी है।भाजपा सूत्रों का कहना है कि 4 दिसंबर को भाजपा विधायक दल की मीटिंग की जाएगी, जिसमें किसी एक नेता का नाम प्रस्तावित किया जाएगा और फिर से सभी विधायकों की मंजूरी ली जाएगी। फिलहाल यही चर्चा है कि देवेंद्र फडणवीस का नाम ही भाजपा हाईकमान की ओर से प्रस्तावित किया जाएगा, लेकिन इस पर कोई पुष्टि नहीं की गई है। इसके अलावा कोई खुलकर इस मसले पर बोल भी नहीं रहा है। महाराष्ट्र के कार्यवाहक मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने कहा है कि जनता चाहती है कि सीएम वही रहें। शिंदे ने रविवार को इंटरव्यू में कहा है, मैं आम लोगों के लिए काम करता हूं। मैं जनता का मुख्यमंत्री हूं। इसी वजह से लोग मानते हैं कि मुझे ही मुख्यमंत्री बनना चाहिए। आज विधायकों के साथ शिंदे की बैठक रद्द कर दी गई। डॉक्टरों ने एकनाथ शिंदे को आराम की सलाह दी है। एनसीपी नेता अजित पवार दिल्ली पहुंच गए हैं। देवेंद्र फडणवीस भी जाएंगे। दोनों नेता संभावित मंत्रियों की लिस्ट और उनका रिपोर्ट कार्ड लेकर अमित शाह से चर्चा करेंगे। इससे पहले 28 नवंबर को शिंदे, फडणवीस और पवार तीनों दिल्ली गए थे। अब तक मिली जानकारी के अनुसार एकनाथ शिंदे पूरा जोर लगा रहे हैं कि यदि वह सीएम नहीं बनाए जा रहे हैं तो फिर होम मिनिस्ट्री जैसा ताकतवर मंत्रालय ही मिल जाए। शिवसेना के करीबी सूत्रों का कहना है कि लंबे समय से शिंदे होम मिनिस्टर बनना चाहते थे।

सीएम यादव ने ओंकारेश्वर -एकात्मधाम में टेका मत्था

हम किसी का अपमान नहीं करते, लेकिन अपने सम्मान से भी समझौता नहीं : सीएम यादव

ओंकारेश्वर (नप्र)। सोमवार को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ओंकारेश्वर पहुंचे । यहां से वे दोपहर एकात्मधाम पहुंचे। यहां मुख्यमंत्री ने आदिगुरु शंकराचार्य की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित किए। इसके बाद उन्होंने मौजूद संतों पर पुष्प न्यौछावर कर उनका स्वागत-वंदन किया। मुख्यमंत्री ने संस्कृति विभाग द्वारा लगाई प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि आदि गुरू शंकराचार्य जी की किसी से तुलना नहीं हो सकती, वे ज्ञान परंपरा में सूर्य के समान प्रकाशमान है। उनका यहां विराजना ही शुभता का सूचक है, वर्तमान में हिंसा का दौर चल रहा है ऐसे में आचार्य शंकर का जीवन दर्शन हमें शांति की प्रेरणा देता है। उन्होंने संतो को प्रणाम करते हुए कहा कि शंकराचार्य जी की परिकल्पना को पूर्ण रूप से साकार करेंगे। एकात्म धाम को चरणबद्ध तरीके से पूर्ण करने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार सनातन, संस्कृति और अध्यात्म पर फोकस कर रही है।

सीएम यादव ने संतो का स्वागत, वंदन किया। नर्मदा परिक्रमा कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि पीएम मोदी ने इस छोर से लेकर उस छोर तक देश की संस्कृति को विकसित करने का काम किया है। हमारी सरकार भी पूरी शिद्दत से काम कर रही है। सीएम ने पूजन अर्चन कर अमृतस्य मां नर्मदा पद परिक्रमा यात्रा का आगाज किया। मंच पर पहुंचे सीएम ने गुरु विवेक द्वारा शुरू की जा रही यात्रा के आगाज के साथ पुस्तक का विमोचन भी किया।

हमारी सनातन संस्कृति विशाल है- सीएम ने कहा कि हमारी सनातन संस्कृति विशाल है। हम नदी, पहाड़, प्रकृति में परमात्मा का वास देखते हैं। हम किसी का अपमान नहीं करते, लेकिन अपने सम्मान से भी समझौता नहीं। आज भी कुछ लोगों को कष्ट है कि भगवान राम अयोध्या में मुस्कुरा रहे हैं। हम प्रत्येक देवस्थान पर हर जरूरत, हर व्यवस्था को जुटाएंगे। बगैर सिंहस्थ भी हर साल धार्मिक यात्रियों की चिंता कर रहे हैं। अन्नक्षेत्र, छाया के स्थान सहित परिक्रमा मार्ग पर हर व्यवस्था करेंगे। परिक्रमावासी के पैर में कांटे लगे तो हमारा सरकार चलाना बेकार है।

मकर संक्रांति को नारी सशक्तिकरण का नाम दिया- सीएम डॉ. मोहन यादव ने कहा कि मकर संक्रांति को नारी सशक्तिकरण का नाम दिया है। गीता जयंती, गुरु पूर्णिमा, गुड़ी पड़वा सहित पर्व त्योहार में सरकार का सहकार तो होना ही चाहिए। भगवान कृष्ण अगर मथुरा से उज्जैन नहीं आते तो हो सकता है गीता सामने नहीं आती। किसी को सरकार की मंशा से कष्ट होता है तो होता रहे, चुनाव में निपटते रहेंगे।

एकात्मधाम के प्रोजेक्ट को आगे बढ़ाएगी सरकार

सीएम डॉ. मोहन यादव ने आदि गुरु शंकराचार्य की प्रतिमा को नमन कर पुष्पांजलि अर्पित की। उन्होंने कहा कि आज एकात्म धाम के प्रोजेक्ट को समझने का मौका मिला है। सनातन संस्कृति के लिए आचार्य शंकर का अद्वितीय योगदान है। सरकार इस प्रकल्प को आगे बढ़ाएगी, जो योजना बनी है, उस पर हमारी सरकार काम करेगी। उन्होंने कहा कि- जब कुरीतियां पनपती है तब परमात्मा किसी महापुरुष को भेजता है। आदि गुरु शंकराचार्य ने भी गौरवान्वित किया। शंकराचार्य जी ने कितने मोर्चों पर एक साथ काम किया, देखकर आश्चर्य होता है। संत समाज का हथियार से संबंध है। संस्कृति के लिए समाज का नेतृत्व करते हुए संत समाज इस स्तर पर जा सकते हैं। मेरा सौभाग्य है कि जन्म बाबा महाकाल की नगरी में हुआ, बाबा ओंकार भी अलग नहीं। हमारा सिंहस्थ जब होता है तो मां नर्मदा के आशीर्वाद से ही होता है। जब मां नर्मदा आशीर्वाद दे रहीं हैं तो उनका ऋण तो है ही तो ये धाम क्यों अच्छा नहीं होना चाहिए?

सड़क, रेल और हवाई सेवा को बेहतर बनाने पर फोकस

सीएम डॉ. मोहन यादव ने कहा कि सिंहस्थ को लेकर हमारी प्राथमिकता पहले से ही तय है। धार्मिक सर्किट पर अब 12 साल में एक बार नहीं, बल्कि पूरे 12 महीने काम चलता है। दो ज्योतिर्लिंग उज्जैन और ओंकारेश्वर के बीच सड़क, रेल और हवाई सेवा को बेहतर बनाने पर फोकस है। जून तक इंदौर-मुक्ताईनगर नेशनल हाईवे का काम भी पूरा हो जाएगा। ओंकारेश्वर मंदिर के स्वरूप को बेहतर करने के लिए इंजीनियर्स से चर्चा कर बेहतर काम करेंगे।

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

जिस घर में रहता हूं
कैसे कहूं कि अपना है

चीटियां कीट पतंगे और
छिपकलियां भी रहती हैं
यहां बड़े मजों से

उधर कोने में कुछ चूहों ने
बनाया है अपना बसेरा
ट्यूब लाइट की ओट में
पल रहा है चिड़ियों का परिवार

आंगन में खिले फूलों पर
मंडराती तितलियां और भौंरे
गुनगुनाते हुए चले आते हैं
घर के अंदर तक

कांप जाता हूं अचानक यह सोचकर
कि कहीं एक दिन किसी को
दिखाई न दे जाएं ईश्वर सपने में
और कहें कि सोया पड़ा हूं युगों से
धरती के भीतर- इस घर के नीचे
निकालो मुझे बाहर
और बनाओ आस्था की
एक इमारत यहां

यह भी हो सकता है कि
निकल आएं किसी की पवित्र अस्थियां
आंगन में पौधा लगाते समय
घर के एक हिस्से में होने लगे इबादत
और धर्मरक्षार्थ कुछ लोग शुरू कर दें
अखंड कीर्तन

सरकारी मुनादी के बाद
डाल दिए जाएं ताले
मेरे घर के दरवाजों पर।

- ब्रजेश कानूनगो

भोपाल का तापमान
अधिकतम 18 °c
न्यूनतम 13°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ मंगलवार, 03 दिसंबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

रक्तदान मानवता की सेवा का उत्कृष्ट उदाहरण है - उप मुख्यमंत्री शुक्ल

रक्तदाताओं का किया सम्मान

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा है कि रक्तदान मानवता की सेवा का उत्कृष्ट उदाहरण है। रक्तदान कर हम किसी की जिन्दगी बचा सकते हैं। जब हमारे रक्त से किसी का जीवन बचता है तो हमें जो सुकून व संतुष्टि मिलती है वह अकल्पनीय है। उप श्री शुक्ल ने रीवा के कृष्णा राजकपूर आडिटोरियम में आयोजित वृहद रक्तदान शिविर में रक्तदाताओं का उत्साह बढ़ाया तथा रक्तदान करने वाले रक्तवीरों का सम्मान किया।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि रक्तदान के समय हमें यह अनुभूति होती है कि हम स्वयं अपने लिये नहीं वरन अन्य के लिये भी जी रहे हैं। मनुष्य को रक्तदान अवश्य करना चाहिए क्योंकि रक्त किसी फैक्ट्री में नहीं बनता वह मनुष्य के शरीर में ही बनता है और रक्तदान कर किसी का जीवन बचाया जा सकता है। जिला प्रशासन, रेडक्रास सोसायटी, नगर निगम तथा

स्वास्थ्य विभाग के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित मेगा रक्तदान शिविर में 385 रक्तदाताओं ने पंजीयन कराया तथा 351 यूनिट रक्त का संग्रहण हुआ।

उप मुख्यमंत्री ने कहा कि रीवा के लोग हर क्षेत्र में आगे रहते हैं। आज मेगा रक्तदान शिविर में लोगों तथा विद्यार्थियों की उपस्थिति यह दर्शाती है कि रीवा वासी इस पुनीत कार्य में भी पीछे नहीं हैं और नई पीढ़ी में शहर की पुरातन संस्कृति हस्तांतरित हो रही है। उन्होंने कहा कि रीवा चिकित्सा सुविधाओं के क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है। अधिक से अधिक रक्तदान कर लोग आकाल मृत्यु को रोकने में अपनी सहभागिता का संदेश दे रहे हैं। उन्होंने विद्यार्थियों, पुलिस के जवानों, अधिकारियों तथा अन्य प्रबुद्धजनों का रक्तदान जैसे पुनीत कार्य करने के लिये धन्यवाद दिया। आयुक्त रीवा संभाग श्री बी.एस. जामोद ने कहा कि रक्तदान महादान है। आज रीवा के नागरिकों में अपार उत्साह है और वह इस पुण्य के काम अपनी भागीदारी निभा रहे हैं। उन्होंने कहा कि इससे बड़ी कोई मानव सेवा नहीं हो सकती। कमिश्नर ने बताया कि संभाग के सभी जिलों में 15 दिसंबर तक वृहद रक्तदान शिविर आयोजित होंगे। विधायक मनगवां इंजी. नरेन्द्र प्रजापति, प्रभारी कलेक्टर डॉ. सौरभ सोनवणे सहित विद्यार्थियों, पुलिस के जवानों, अधिकारियों तथा अन्य प्रबुद्धजनों ने शिविर में रक्तदान किया।

बांग्लादेश में हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचार के खिलाफ प्रदर्शन

भोपाल। बांग्लादेश में हिन्दुओं पर हो रहे लगातार अत्याचार और तोड़े जा रहे मंदिरों के विरोध में एक विराट प्रदर्शन किया जा रहा है। यह प्रदर्शन भारत माता चौराहा (डिपो चौराहा) पर 4 दिसंबर बुधवार को दोपहर 2 बजे से होगा। इसका आयोजन सकल हिन्दू समाज भोपाल द्वारा किया जा रहा है। इसमें हिन्दू समाज के साथ सभी सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठन शामिल होंगे। साथ ही बुद्धिजीवी वर्ग, शिक्षक, सेना के पूर्व कमांडर, सेवानिवृत्त अफसर, प्रोफेशनल, डॉक्टर्स भी शामिल होकर विरोध जताएँगे। इस कार्यक्रम में वक्ता के रूप में सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता अश्विनी उपाध्याय भी उपस्थित होंगे।

संक्षिप्त समाचार

ओवैसी ने अजमेर दरगाह विवाद में फिर निकाली भड़ास

मंदिर घोषित करने की मांग वाली याचिका को लेकर मोदी सरकार पर साधा निशाना

अजमेर (एजेंसी)। एआईएमआईएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी ने संभल की शाही जामा मस्जिद के सर्वेक्षण के साथ ही अजमेर शरीफ दरगाह मामले में दायर याचिका पर भी सवाल उठाए हैं। उन्होंने भाजपा पर देश को कमजोर करने वाले मुद्दे उठाने का आरोप लगाया है। ओवैसी का कहना है कि जब याचिका में सिर्फ मस्जिद में प्रवेश का अधिकार मांगा गया था, तो सर्वेक्षण का आदेश क्यों दिया गया। उन्होंने

उपासना स्थल अधिनियम का भी हवाला दिया। साथ ही अजमेर शरीफ दरगाह मामले और आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत के जनसंख्या वृद्धि पर दिए बयान पर भी प्रतिक्रिया दी। ओवैसी ने उपासना स्थल अधिनियम, 1991 का भी उल्लेख किया। इस कानून के अनुसार, किसी भी धार्मिक स्थल की स्थिति को 15 अगस्त, 1947 के बाद बदला नहीं जा सकता। उन्होंने पूछा, अगर ऐसा है तो सर्वेक्षण का आदेश क्यों दिया गया। ओवैसी ने भाजपा पर निशाना साधते हुए कहा कि देश महंगाई, बेरोजगारी, किसान आत्महत्या जैसे गंभीर मुद्दों से जूझ रहा है।

संसद में मुद्दों को लेकर इंडिया गठबंधन में मतभेद

- टीएमसी ने किया किनारा बैठक में नहीं हुई शामिल

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद के शीतकालीन सत्र में लगातार पांचवें दिन भी हंगामा हुआ। विपक्ष ने लोकसभा और राज्यसभा दोनों सदन में अडाणी और संभल मुद्दा उठाया। विपक्षी नेताओं ने वी वॉन्ट जस्टिस के नारे लगाए। सोमवार को लोकसभा में सिर्फ 14 मिनट और राज्यसभा में करीब 15 मिनट ही कार्यवाही चल सकी। इससे पहले चार दिनों के अंदर चार बैठकों में दोनों सदनों में कुल 40 मिनट ही कार्यवाही हो सकी थी। बैठक से पहले इंडिया ब्लॉक के नेताओं ने

राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे से मुलाकात की। इसमें लीडर ऑफ अपोजीशन (लोकसभा) राहुल गांधी भी शामिल हुए। हालांकि टीएमसी नेता नहीं आए। टीएमसी से जुड़े सूत्रों ने कहा कि, वे सदन में बेरोजगारी, मणिपुर, महंगाई जैसे मुद्दों पर चर्चा करना चाहते हैं। जबकि कांग्रेस सिर्फ अडाणी मुद्दे पर हंगामा कर रही है। उधर सदन स्थगन के चलते लोकसभा में आज विदेश मंत्री एस जयशंकर भारत–चीन मुद्दे पर नहीं बोल पाए। वहीं वित्त मंत्री सीतारमण भी लोकसभा में बैंकिंग लॉ संशोधन बिल पेश नहीं कर सकीं। कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने कहा, ऐसे मुद्दे हैं जिन पर सभी विपक्षी दल चर्चा करना चाहते हैं। अगर सरकार इसे चलाती है तो संसद चलेगी। सरकार को संसद को चलाने के लिए विपक्ष के साथ सहयोग करना चाहिए।

भारत आ रहा है यूरोप का सबसे शक्तिशाली युद्धपोत

राफेल जेट और परमाणु हथियारों से हमेशा रहता है लैस

पेरिस (एजेंसी)। यूरोप का सबसे शक्तिशाली युद्धपोत कहे जाने वाला फ्रांस का चार्ल्स दी गाले परमाणु ऊर्जा से चलने वाला एयरक्राफ्ट कैरियर भारत आ रहा है। करीब 42500 टन का यह परमाणु युद्धपोत इस महीने के मध्य में आ रहा है। वहीं 3 अन्य

फ्रांसीसी युद्धपोत भारत आ चुके हैं। अमेरिका के दैत्याकार सुपर कैरियर के बाद केवल फ्रांस ही है जिसके पास परमाणु ऊर्जा से चलने वाला एयरक्राफ्ट कैरियर है। फ्रांस का यह युद्धपोत ऐसे समय पर भारत पहुंच रहा है जब हिंद प्रशांत क्षेत्र में चीन की दादागिरी बढ़ रही है। इस यात्रा को भारत और फ्रांस के बीच बढ़ती दोस्ती के प्रतीक के रूप में देखा जा रहा है। वहीं पीएम मोदी और जॉर्जिया मेलोनी की मुलाकात के बाद इटली के रक्षा मंत्री भी भारत आ रहे हैं। फ्रांस के युद्धपोत यहां भारतीय युद्धपोतों और एयरक्राफ्ट कैरियर विक्रमादित्य के साथ अभ्यास कर सकता है। चार्ल्स दी गाले एयरक्राफ्ट कैरियर पर राफेल फाइटर जेट तैनात रहते हैं और इसे परमाणु बम से भी लैस किया जा सकता है। भारतीय नौसेना ने भी राफेल के नौसैनिक वर्जन का ऑर्डर दिया है। भारत जल्द ही फ्रांस को 3 अन्य स्कॉर्पिन पनडुब्बी का भी ऑर्डर दे सकता है।

पंडित धीरेंद्र शास्त्री को जान से मारने की धमकी

पंजाब के कट्टरपंथी ने कहा- उल्टी गिनती शुरू हो गई है बागेश्वर वाले बाबा

भोपाल (नप्र)। बागेश्वर धाम के पंडित धीरेंद्र शास्त्री को जान से मारने की धमकी मिली है। पंजाब के सिख कट्टरपंथी बरजिंदर परवाना ने एक मंच से कहा कि धीरेंद्र शास्त्री की उल्टी गिनती शुरू हो गई है। उन्हें मार डालेंगे। परवाना ने पंडित शास्त्री को पंजाब आने तक की चुनौती दे डाली।

दरअसल, धीरेंद्र शास्त्री ने हरिहर मंदिर को लेकर एक बयान दिया था। जिसे पंजाब के सिख कट्?टरपंथी बरजिंदर परवाना ने अमृतसर स्थित हरमंदिर साहिब यानी गोल्डन टेंपल से जोड़ दिया। धीरेंद्र शास्त्री के बयान को लेकर कहा जा रहा है कि यह गोल्डन टेंपल के लिए नहीं, बल्कि कलकी धाम संभल के लिए था। इस मामले में एंटी टेररिस्ट फ्रंट इंडिया और विश्व हिंदू तख्त प्रमुख वीरेश शांडिल्य ने पुलिस से 48 घंटे के भीतर बरजिंदर परवाना को गिरफ्तार करने की मांग की है। उन्होंने पंजाब और हरियाणा के डीजीपी को शिकायत भेजी है। शांडिल्य ने आरोप लगाया कि परवाना ने हिंदू-सिख भाईचारे को तोड़ने की साजिश की है। पंजाब के कपूरथला के कादराबाद में 26 से 30 नवंबर तक आयोजित एक समागम में मंच से बरजिंदर परवाना ने धीरेंद्र शास्त्री को धमकी दी थी।

बागेश्वर वाला बाबा अमृतसर या पंजाब में आकर दिखाए– पंजाब के कपूरथला जिले के कादराबाद गांव में 26 से 30 नवंबर तक 5 दिन का समागम था।

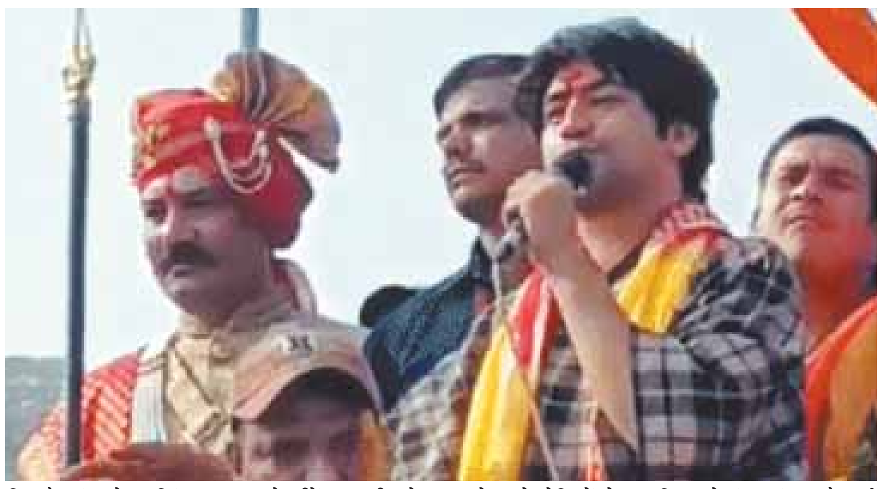

जिसके मंच से बरजिंदर परवाना ने धीरेंद्र शास्त्री को धमकी दी थी। इसका वीडियो सामने आया है।

बरजिंदर परवाना ने कहा- बागेश्वर धाम वाले साधु ने बयान दिया कि वह जो हरमंदिर है, वहां हम अपनी पूजा करेंगे। अभिषेक करेंगे और मंदिर बनाएंगे। मैं कहता हूं कि आओ, पर एक बात याद रखना, हमने इंदिरा गांधी को मारा। उसे अंदर पैर नहीं रखने दिया। यहां लाखों की फौज आई, उसे हमने गोलियों से भून दिया। बेअंत (पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री बेअंत सिंह) को चंडीगढ़ में बम से उड़ाया। परवाना ने कहा-बागेश्वर वाला बाबा नोट कर ले कि आज से उसकी उल्टी गिनती शुरू हो गई है। तुझे भी टकरेंगे और चाहे जैसे मर्जी हो, तुझे भी मार डालेंगे। तू आ तो सही। हरमंदिर साहिब तो दूर, बागेश्वर वाला बाबा अमृतसर या पंजाब में आकर दिखाए।

फिल्म 'द साबरमती रिपोर्ट' की संसद में स्क्रीनिंग

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद के बालयोगी ऑडियोटोरियम में फिल्म द साबरमती रिपोर्ट की स्पेशल स्क्रीनिंग हुई। फिल्म देखने पीएम मोदी, गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह समेत कई मंत्री–सांसद पहुंचे। विक्रांत मैसी स्टारर द साबरमती रिपोर्ट 15 नवंबर को रिलीज हुई थी। यह फिल्म 2002 गोधरा कांड और उसके बाद हुए गुजरात दंगों पर आधारित है। जिस समय यह घटना हुई, उस वक्त नरेंद्र मोदी गुजरात के सीएम थे। मोदी पर भी आरोप लगे कि उन्होंने दंगों को रोकने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाए। हालांकि, बाद में उन्हें क्लीन चिट दे दी गई थी। इससे पहले पीएम मोदी ने सोशल मीडिया पर फिल्म की सराहना की थी। उन्होंने लिखा था– यह अच्छी बात है कि सच सामने आ रहा है, वो भी इस तरह से कि आम जनता भी इसे देख सके।

आखिर मान गए किसान, दिल्ली कूच पर लगा ब्रेक

- किसानों ने खाली की सड़क, प्रदर्शन को किया स्थगित
- सरकार के साथ बैठक के बाद बनेगी अगली रणनीति

नोएडा (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के नोएडा में किसानों के प्रदर्शन पर बड़ा अपडेट सामने आया है। नोएडा के किसानों ने दोपहर से अपनी मांगों को लेकर प्रदर्शन शुरू किया था। किसानों के प्रदर्शन की घोषणा से सुबह से नोएडा से लेकर दिल्ली तक सुरक्षा व्यवस्था चुस्त-दुरुस्त रही। वहीं, किसान आंदोलन को लेकर प्रशासन की टीम लगातार प्रदर्शनकारियों के संपर्क में रही। प्रदर्शनकारी किसान संगठन के नेताओं के साथ बातचीत में तय हुआ कि अभी आंदोलन को स्थगित किया जाएगा। किसानों का प्रतिनिधिमंडल और राज्य सरकार के साथ बातचीत होगी।

इसके बाद आगे का निर्णय लिया जाएगा। वहीं, प्रदर्शनकारी किसान अब सड़क को खाली करने पर राजी हो गए हैं। इससे ट्रैफिक जाम की समस्या खत्म हो जाएगी। किसान संगठन की ओर से दिल्ली कूच पर ब्रेक लगने की जानकारी दी गई है। किसान संगठन के प्रतिनिधि ने कहा कि आंदोलन को फिलहाल स्थगित किया गया है। यूपी सरकार के साथ अगर वार्ता विफल होती है तो दिल्ली कूच पर निर्णय लिया जाएगा। किसान प्रतिनिधि अब राज्य सरकार से बातचीत करेंगे। प्रदर्शनकारी किसानों ने कहा कि फिलहाल दलित प्रेरणा स्थल पर धरना दिया जाएगा। किसानों ने बढ़ा मुआवजा का भुगतान की मांग की।

फेंगल तूफान से तमिलनाडु के तिरुवन्नामलाई में लैंडस्लाइड

मकानों पर गिरी 40 टन की बड़ी चट्टान, 7 लोग हुए लापता

कृष्णागिरी में भारी बारिश से बसें-कारें बह गईं, बुरे हैं हालात

तिरुवन्नामलाई (एजेंसी)। बंगाल की खाड़ी से उठे फेंगल तूफान के असर के चलते सोमवार को केरल, कर्नाटक, तेलंगाना और आंध्र में भारी बारिश हो रही है। फेंगल तूफान 30 नवंबर शाम 7.30 बजे पुडुचेरी के कराईकल और तमिलनाडु के महाबलीपुरम के बीच समुद्र तट से टकराया था। तूफान अब केरल, कर्नाटक, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में पहुंच गया है। तमिलनाडु में तिरुवन्नामलाई में पहाड़ी पर भूस्खलन हुआ। एनडीआरएफ के मुताबिक, लगभग 40 टन वजनी चट्टान पहाड़ से लुढ़ककर वीयूसी नगर की सड़क पर बने घरों पर गिरी जिससे 2 घर जमींदोज हो गए। 7 लोगों के मलबे में फंसे होने की आशंका है। लापता लोगों के नाम राजकुमार, मीना, गौतम, इनिया, राम्या, विनोदिनी और महा भी लापता हैं।

केरल के 8 जिलों में रेड अलर्ट

एर्नाकुलम, इडुक्की, त्रिशूर और पलक्कड़ के लिए बहुत भारी वर्षा की चेतावनी देते हुए ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया है। जबकि पथानामथिट्टा, अलप्पुझा और कोट्टायम के लिए भारी बारिश का यलो अलर्ट है। इडुक्की बारिश के कारण कुमिली से सबरीमाला तक मुक्कुझी–सत्रम वन मार्ग पर तीर्थयात्रियों की आवाजाही पर प्रतिबंध लगा दिया है। बेंगलुरु में बारिश का अनुमान है। चामराजनगर में एग्जाम वाले कॉलेजों को छोड़कर सब बंद करने की घोषणा की गई है।

यूपीएससी पढ़ाने वाले ओझा सर एएपी में शामिल

नई दिल्ली (एजेंसी)। सिर पर गमछा बांधकर यूपीएससी की पढ़ाई कराने वाले ओझा सर ने आम आदमी पार्टी जॉइन कर ली है। पार्टी के नेशनल कन्वेनर अरविंद केजरीवाल और सीनियर पार्टी लीडर मनीष सिसोदिया ने उन्हें पार्टी में शामिल किया। एएपी के टिकट पर चुनाव लड़ सकते हैं ओझा सर इस मौके पर ओझा सर ने कहा कि शिक्षा वो दूध है, जो पियेगा वो दहाड़ेगा। वो पिछले 22 सालों से छात्रों को कोचिंग दे रहे हैं। उनके सोशल मीडिया फॉलोअर्स की गिनती लाखों में है। अब फरवरी 2025 में होने जा रहे दिल्ली असेंबली इलेक्शंस में ओझा सर एएपी के टिकट पर चुनाव लड़ सकते हैं। अवध ओझा ने बताया था कि वो पिछले लोकसभा चुनावों में बीजेपी के टिकट पर चुनाव लड़ना चाहते थे।

मणिपुर में कुकी उग्रवादियों की पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट आई

- ज्यादातर को पीछे से गोली मारी गई, 4 शवों की 1-1 आंख गायब

इंफाल (एजेंसी)। 11 नवंबर को सुरक्षाबलों के साथ मुठभेड़ में मारे गए 10 कुकी उग्रवादियों की पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट (पीएम रिपोर्ट) सामने आ गई है।

इसमें पता चला है कि ज्यादातर को पीछे से गोली मारी गई थी। सभी के सिर से लेकर पैर तक पूरे शरीर में गोलियां लगी हैं। कुछ को 10 से ज्यादा गोलियां लगी हैं। इसके अलावा उनके शरीर पर कोई अन्य घाव या टॉर्चर के निशान नहीं हैं। हालांकि, चार शवों की एक-एक आंख गायब है। रिपोर्ट में बताया गया है कि जब शवों को असम के सिलचर मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में पोस्टमार्टम के लिए लाया गया तो ज्यादातर वर्दी और खाकी पोशाक में थे। मणिपुर पुलिस ने बताया था कि 11 नवंबर को हाईटेक हथियारों से लैस कुछ वर्दीधारियों ने जिरीबाम में बोरोबेक्रा पुलिस स्टेशन और उससे सटे सीआरपीएफ कैंप पर अंधाधुंध गोलीबारी की थी।

नक्बजनी और डकैती मामले में पुलिस को बड़ी सफलता हाथ लगी ,लुटेरा गिरफ्तार

भोपाल। थाना कटारा हिल्स को नकबजनी और डकैती मामले में बड़ी सफलता हाथ लगी है। लूट मामले में एक आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी सहित 5 लोगों ने कटारा हिल्स में एक चोरी की वारदात को अंजाम दिया था। इसके साथ ही चोरों ने कई और बड़ी वारदातों को रीवा कटनी सहित अन्य जगहों पर अंजाम दिया है। आरोपी मोटर साइकिल सहित घरों को निशाना बनाते थे।जबलपुर में भी जैन मंदिर में चोरी की घटना को आरोपियों ने अंजाम दिया है। पुलिस ने आरोपियों की घेराबंदी की। इस एक आरोपी पकड़ा गया। वहीं अन्य 4 आरोपी अंधेरे का फायदा उठाकर भाग गए। फिलहाल पुलिस उनकी तलाश में जुट गई है।आपको बता दें आरोपियों ने कटारा हिल्स में एक महिला को बंधक बनाकर घर में चोरी की घटना को अंजाम दिया था।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जबलपुर निवासी आईपीएस श्री हर्षवर्द्धन के निधन पर दुःख व्यक्त किया

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने जबलपुर निवासी कर्नाटक कैडर के 2023 बैच के आईपीएस श्री हर्षवर्द्धन के सड़क दुर्घटना में असामयिक निधन पर दुःख व्यक्त किया है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भारतीय पुलिस सेवा के युवा अधिकारी का इस तरह चले जाना निश्चित ही राष्ट्र के लिए क्षति है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बाबा महाकाल से दिवंगत पुण्यात्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान प्रदान करने और शोकाकुल परिजन के प्रति गहरी संवेदनाएं व्यक्त की हैं।

उल्लेखनीय है कि आईपीएस श्री हर्षवर्द्धन 'कर्नाटक पुलिस अकादमी' से प्रशिक्षण समाप्त कर हसन जिले में अपनी पहली पोस्टिंग के लिए लौट रहे थे। दुर्भाग्यवश सड़क दुर्घटना में श्री हर्षवर्द्धन का निधन हो गया।

मंत्रालय में हुआ राष्ट्र-गीत व राष्ट्र-गान का सामूहिक गायन

भोपाल (नप्र)। दिसम्बर माह के प्रथम शासकीय कार्य दिवस पर मंत्रालय स्थित सरदार वल्लभ भाई पटेल पार्क में राष्ट्र-गीत 'वंदे-

मातरम' एवं राष्ट्र-गान 'जन-गण-मन' का सामूहिक गायन हुआ। इस अवसर पर पुलिस बैंड ने मधुर धुनें प्रस्तुत की। वंदेमातरम गायन में राजस्व मंत्री श्री करण सिंह वर्मा, मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन, अपर मुख्य सचिव श्री अशोक बर्णवाल, श्री मनु श्रीवास्तव, सचिव श्री अनिल सुचारी सहित सतपुड़ा-विंध्याचल भवन के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित थे।

आनंद सबधाणी निर्विरोध सिंधी समाज के अध्यक्ष नियुक्त

बसंत चेलानी ने की सिंधी समाज उत्थान पंचायत के नए पदाधिकारियों की घोषणा

भोपाल (नप्र)। विजय नगर लालघाटी स्थित सिंधी समाज उत्थान पंचायत के चुनाव में शिक्षाविद व युवा समाजसेवी आनंद सबधाणी को निर्विरोध अध्यक्ष मनोनीत किया गया। इस अवसर पर चुनाव अधिकारी बसंत चेलानी द्वारा उन्हें निर्वाचन पत्र सौंपा गया। इसके अलावा पंचायत के 7 पदाधिकारियों का निर्विरोध चयन किया गया जिसमें किशनचंद आसुदानी (महासचिव), राधेश्याम नाथानी, नंदलाल मोतियानी, मनोहर आसुदानी, अर्जुन वाधवानी

(उपाध्यक्ष) बी.डी. चांदवानी (सचिव), हरचंद गूवालानी (कोषाध्यक्ष) का चयन भी निर्विरोध हुआ। इस अवसर पर सभी पदाधिकारियों का हार फूलों से स्वागत कर बधाईयां दी गई। अध्यक्ष सबधाणी ने सभी को साथ लेकर काम करने का आश्वासन दिया। गौरतलब है कि सिंधी समाज उत्थान पंचायत समाज के पर्वों त्योहारों को उत्साह उमंग के साथ मनाती हैं। युवाओं की शिक्षा के लिए काम करती है। विजय नगर सहित आसपास में निवास कर रहे सिंधी समाज की समस्याओं को भी उठाती है। वहीं भाषा समाज सिंधियत के संवर्धन के लिए पंचायत लगातार प्रयास करती रहती है।

नए डीजीपी मकवाना बोले-

साइबर अपराधों पर अंकुश लगाना प्राथमिकता

डिसिप्लिन और पीपुल्स फ्रेंडली पुलिसिंग करेंगे, सिंहस्थ 2028 की तैयारियां बड़ी चुनौती

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश पुलिस के वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी कैलाश मकवाना बतौर डीजीपी सोमवार को मीडिया से मुखातिब हुए। इस दौरान उन्होंने साइबर अपराधों पर अंकुश लगाना, डिसिप्लिन तथा रुल ऑफ लॉ का अधिक कड़ाई से पालन कराने को अपनी पहली प्राथमिकता बताया।

इसके साथ उन्होंने कहा कि पीपुल्स फ्रेंडली पुलिसिंग भी उनकी प्राथमिकताओं में शामिल रहेगी। नशे के सौदागरों के खिलाफ अभियान चलाकर पहले से अधिक सख्ती से कार्रवाई की जाएगी।

सिंहस्थ 2028 की तैयारियां बड़ी चुनौती- डीजीपी ने बताया कि 2028 में होने वाले सिंहस्थ की तैयारियां बड़ी चुनौती होगी। मैदानी पुलिस को अधिक मजबूती देने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तैयार की जाएगी। प्रदेश में ज्यादा से ज्यादा सीसीटीवी कैमरों का नेटवर्क का विस्तार करने पर उनका फोकस है।

लोग अपराधों से कम एक्सीडेंट से ज्यादा जान गवा रहे हैं, यह बड़ी चिंता का विषय है। सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने के लिए हर संभव प्रयास करेंगे। ब्लैक और डार्क स्पॉट चिह्नित कर इंजीनियरिंग की खामियों को तलाशेंगे। नए सिरे से ऐसे स्पॉट्स पर काम करेंगे।

बड़े स्तर पर अवेयरनेस प्रोग्राम चलाएंगे- डीजीपी ने कहा कि साइबर अपराधों से बचाने आम जनता को अवेयर करने के लिए प्रदेश भर में व्यापक स्तर पर अवेयरनेस प्रोग्राम चलाए जाएंगे। सोशल मीडिया पर भी लोगों को अवेयर करने के लिए पुलिस काम करेगी। जिससे साइबर अपराधों में कमी लाने में मदद मिल सके।

मानव तस्करी और बाल अपराधों अंकुश लगाएंगे- डीजीपी ने बताया कि मानव तस्करी और बाल अपराधों पर अंकुश लगाने समय-समय पर जागरुकता अभियान चलाए जाते हैं। बाल अपराधों के प्रति मध्य प्रदेश पुलिस संवेदनशील है। लगातार बाल अपराधों में लिप्त रहने वालों के खिलाफ अधिक प्रभावी कार्रवाई करांगे।

1988 बैच के आईपीएस हैं मकवाना- 1988 बैच के आईपीएस ऑफिसर कैलाश मकवाना इससे पहले मप्र पुलिस हाउसिंग कॉर्पोरेशन के चेयरमैन रहे हैं। अब वे एमपी के 32 वे डीजीपी बने हैं। मकवाना दिसंबर 2025 में रिटायर होंगे। बता दें कि पूर्व डीजीपी सुधीर सक्सेना 30 नवंबर 2024 को रिटायर हुए थे। डीजीपी का साढ़े तीन साल के अंदर 7 बार तबादला हुआ था। कमलनाथ सरकार के दौरान ही वे तीन बार इधर से उधर किए गए थे।

नेता प्रतिपक्ष सिंघार बोले-

सीएम को डायनासोर के अंडे पसंद

पटवारी ने कहा- कर्ज लेने में शिवराज से दो कदम आगे मोहन सरकार, 16 दिसंबर को विधानसभा घेरेगी कांग्रेस

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश कांग्रेस ने प्रदेश की मोहन सरकार से एक साल का हिसाब मांगा है। कांग्रेस ने 16 दिसंबर को विधानसभा का घेराव कर 'हिसाब दो जवाब दो' आंदोलन का ऐलान किया है।

सोमवार को भोपाल स्थित प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में पीसीसी चीफ जीतू पटवारी और नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर

इसकी जानकारी दी। इस दौरान दोनों ही नेताओं ने कई मुद्दों पर सरकार को घेरा। पीसीसी चीफ पटवारी ने आरोप लगाया है कि सीएम डॉ. मोहन यादव कर्ज लेने में शिवराज सरकार से दो कदम आगे हैं। वहीं नेता प्रतिपक्ष सिंघार ने कहा- प्रदेश के एक मुख्यमंत्री वो विदेश की सड़कें पसंद थी, एक मुख्यमंत्री को डायनासोर के अंडे पसंद हैं।

11 महीने में जनता ने सिर्फ भ्रष्टाचार देखा है- पीसीसी चीफ जीतू पटवारी ने कहा कि, 13 दिसंबर को मोहन यादव को मुख्यमंत्री की शपथ लिए एक साल हो जाएगा। एक साल लंबा पीरियड होता है। इस एक साल में मप्र ने क्या-क्या देखा? बेटियों से बलात्कार होते हुए देखे। एक साल में बहनों बच्चों को गायब होते देखा। माफिया राज को सरकार पर हावी होते हुए देखा। वल्लभ भवन की पांचवीं मंजिल से करप्शन कैसे नीचे तक आता है इसके नए आयाम पैदा होते देखा। मप्र में ड्रग्स माफिया का उद्योग पनपते हुए देखा। पिछले एक साल में कर्ज के कौशल को शिवराज सिंह से ज्यादा बढ़ाते हुए मोहन यादव को बढ़ाते हुए देखा। आपस में करप्शन की लूट के लिए भाजपा के नेताओं में जूतम पैमार करते हुए देखा। संकल्प पत्र के धोखे को एक साल में जनता ने भोगते हुए देखा।प्रदेश कांग्रेस कार्यालय पर पीसीसी चीफ जीतू और नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने प्रेसवार्ता कर सीएम मोहन यादव से उनको एक साल के काम का हिसाब मांगा।

नेता प्रतिपक्ष बोले- सीएम जिस नाव में बैठे उसमें छेद

नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने कहा- मुख्यमंत्री जी को उनके लोग ही बेनकाब करने में लगे हैं। वे जिस नाव में बैठे हैं उसमें छेद हो चुका है। मोहन यादव अब मौन यादव हो गए हैं। वे अभी लंदन गए थे। उनके जेब से हाथ बाहर नहीं निकले। लग रहा था कि मप्र के लिए भीख मांगने गए हैं। लेकिन मप्र को आर्थिक रुप से मजबूत क्यों नहीं करना चाहते? क्यों आपको कर्जे की आवश्यकता पड़ती है। शिवराज जी अमेरिका गए थे उन्हें सड़कें बड़ी अच्छी लगीं। मोहन यादव लंदन गए तो उनको डायनासोर के अंडे अच्छे लगे। तो ये मुख्यमंत्री हैं किसी को सड़कें पसंद हैं किसी को डायनासोर के अंडे पसंद हैं। प्रदेश में विकास की बात नहीं करते, कर्ज की बात करते हैं। 20-22 साल होने जा रहे हैं प्रदेश में कई इन्वेस्टर्स मीट हुई। सरकार कहती रही कि एक लाख करोड, दो लाख करोड निवेश आया? क्या एमओयू हुए, वहां धरातल पर वहां फैक्ट्रियां लगीं। अगर आर्थिक विकास होता तो प्रदेश को कर्ज लेने की आवश्यकता नहीं पड़ती। लंदन से 60 हजार करोड़ की घोषणा तो कर दी, कब एमओयू होंगे? कब आएंगे ये भविष्य की बात है मुझे नहीं लगता। क्योंकि, 22 साल का जो रिकॉर्ड रहा है उसमें ऐसी स्थिति नहीं रही।

सरकार ने 11 महीने में 30 बार कर्ज लिया

पटवारी ने आगे कहा कि, 11 महीने में देश के किसी राज्य की सरकार ने 30 बार कर्ज नहीं लिया। हर एक महीने में 14-15 दिन में औसतन तीन हजार करोड़ से 5 हजार करोड कर्ज लिया। 40536 हजार करोड इस अवधि में कर्ज लिया। यानि रोज 120 करोड से 125 करोड़ रुपए कर्ज लिया। घंटे के हिसाब से देखें तो 120 करोड़ रुपए का कर्ज हर घंटे लिया। ये जो कर्ज लिया उसका किया क्या? कर्ज लेकर प्रदेश के लिए एक भी इनोवेटिव काम नहीं किया।

लाडली बहन को नहीं दिए 3000 हजार

बीजेपी ने संकल्प पत्र में जो कहा था कि लाडली बहनों को तीन हजार रुपए देंगे। पटवारी ने सीएम मोहन यादव का वीडियो दिखाया जिसमें सीएम ने कहा था कि ये राशि 3 हजार से 5 हजार तक बढ़ती जाएगी। पटवारी ने शिवराज सिंह चौहान का लाडली बहना योजना में 3 हजार रुपए देने के बयान का वीडियो भी दिखाया। पटवारी ने कहा- झूठ बोलने और कर्ज लेने के कौशल में शिवराज सिंह चौहान से मोहन यादव दो कदम आगे हैं।

कर्ज चुकाने के लिए कर्ज लेती है सरकार

पटवारी ने आगे कहा कि 45000 करोड रुपए के कर्ज से सरकार ने एक भी इनोवेटिव काम नहीं किया। जिससे प्रदेश को लाभ हो। यह कर्ज लेते हैं तो 3 करोड रुपए हर महीने हवाई जहाज का चुकाते हैं। लगातार बड़े-बड़े इवेंट करते हैं। विज्ञापन देते हैं और करप्शन करने के नए-नए तरीके खोजते हैं। मध्य प्रदेश के हर व्यक्ति पर ?50000 कर्ज हो गया है। आरबीआई और ष्ठत्र की रिपोर्ट में भी कर्ज पर रोक लगाई है।

विधानसभा का घेराव करेगा विपक्ष

नेता प्रतिपक्ष सिंघार ने कहा कि 16 दिसंबर को कांग्रेस विधायकों और कार्यकर्ताओं के साथ विधानसभा का घेराव किया जाएगा। गांव गांव तक इसको लेकर एक जन जागरूकता अभियान चलाया जाएगा। परिचय पर चर्चा इस बात को लेकर हम गांव-गांव तक घर-घर तक बात पहुंचेंगे और जनता को उनके अधिकार दिलाने की कोशिश करेंगे।

नाबालिगों के आधारकार्ड पर निकालीं 12 सिम

डिजिटल अरेस्ट केस में गिरफ्तार आरोपी आधार अपडेट कैम्प लगाता था, यूपी में बेचीं सिमें

भोपाल (नप्र)। भोपाल में टेलीकॉम इंजीनियर को डिजिटल अरेस्ट करने के केस में गिरफ्तार आरोपी से नई बात पता चली है। उसने 150 सिम दूसरे लोगों के आधारकार्ड पर निकालकर बेची हैं। 12 सिम तो नाबालिगों के नाम पर हैं। इसके लिए वह जगह-जगह कैम्प लगाकर आधारकार्ड अपडेट करने का काम करता था।

भोपाल शहर में बजरिया इलाके के गायत्री नगर में रहने वाले टेलीकॉम इंजीनियर प्रमोद कुमार (38) को साइबर क्रिमिनल्स ने 12 नवंबर को डिजिटल हाउस अरेस्ट कर लिया था। इस केस में पहली गिरफ्तारी धीरेंद्र कुमार विश्वकर्मा की 28 नवंबर को हुई। पूछताछ में उसने बताया कि ई-केवाईसी (इलेक्ट्रॉनिक नो योर कस्टमर) के जरिए वह फर्जी तरीके से सिम इश्यू करा लेता था। कानपुर के दुर्गेश को 1 हजार रुपए में 1 सिम बेचा करता था। दुर्गेश ने उसे बता रखा था कि वह ऑनलाइन गेम खेलता है, इसके लिए उसे अलग-अलग सिम की जरूरत पड़ती है। बता दें, नाबालिगों के नाम से सिम इश्यू नहीं होती। पुलिस का कहना है कि इस बारे में पीओएस (पॉइंट ऑफ सेल) के संचालक से पूछताछ की जाएगी। सिम डिस्ट्रीब्यूटर से भी पूछताछ करेंगे। टेलीकॉम कंपनी को लेटर लिखकर जानकारी देंगे।धीरेंद्र को भोपाल क्राइम ब्रांच ने महोबा (उत्तरप्रदेश) से गिरफ्तार किया था। दुर्गेश की तलाश में दो टीमें जुटी हुई हैं। टेलीकॉम इंजीनियर प्रमोद कुमार (राइट) को बदमाश 6 घंटे तक डिजिटल हाउस अरेस्ट किए रहे थे। पुलिस ने पहुंचकर उन्हें छुड़ाया था। एडिशनल डीसीपी क्राइम ब्रांच शैलेंद्र सिंह चौहान (लेफ्ट) ने उनकी काउंसिलिंग कर बताया था कि डिजिटल अरेस्ट जैसा कुछ नहीं होता।

धीरेंद्र विश्वकर्मा, आरोपी

वीडियो कॉल पर धमकाने वालों की पहचान नहीं

टेलीकॉम इंजीनियर को वीडियो कॉल पर पुलिस की वर्दी में धमकाने वाले तीन में से एक आरोपी दुर्गेश के होने का पता चला है। दो आरोपियों की अभी पहचान नहीं हो सकी है। पुलिस का कहना है कि दुर्गेश की गिरफ्तारी के बाद गिरोह के दूसरे सदस्यों की जानकारी हो सकेगी। इसके बाद ही खुलासा होगा कि धीरेंद्र के जरिए बेची जा चुकीं 150 सिमों का इस्तेमाल कहां और कौन-कौन लोग कर रहे थे।

ऐसे आरोपी तक पहुंची पुलिस

पुलिस ने प्रमोद को कॉल पर धमकाने वाले डिवाइस का आईपी (इंटरनेट प्रोटोकॉल) एड्रेस ट्रेस किया था। इसकी लोकेशन कानपुर में मिली थी। फौरन भोपाल पुलिस ने कानपुर पुलिस को इनपुट दिया। हालांकि, इससे पहले ही कॉलर नंबर बंद कर अपनी लोकेशन को चेंज कर चुका था।

अगले दिन पुलिस की टीम कानपुर रवाना हुई। इसके पहले प्रमोद को धमकाने में इस्तेमाल सिम की जानकारी निकाली जा चुकी थी। यह विकास साहू के नाम पर रजिस्टर्ड थी। महोबा का एड्रेस था। टीम महोबा पहुंची और विकास को हिरासत में लिया।

गैस पीड़ितों की मांगों को लेकर भाकपा का प्रदर्शन आज

भोपाल। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा भोपाल गैस त्रासदी की 40 वीं बरसी पर भोपाल के गैस पीड़ितों की विभिन्न मांगों को लेकर कल 3 दिसम्बर को सुबह 11 बजे ट्रांसपोर्ट हम्माल मजदूर सभा के कार्यालय (इतवारा चौराहा के समीप) भोपाल में प्रदर्शन किया जाएगा।

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के मध्य प्रदेश राज्य सह सचिव कॉमरेड शैलेन्द्र शैली ने बताया कि भाकपा का यह प्रदर्शन भोपाल के प्रत्येक गैस पीड़ित को कम से कम 5 लाख रुपए का मुआवजा देने,सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के अनुसार सरकार द्वारा गैस पीड़ितों के लिए अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करने,वयोवृद्ध निराश्रित गैस पीड़ितों को प्रति माह 5 हजार रुपए की पेंशन देने,इस पेंशन हेतु पुनः सर्वेक्षण करने ,गैस पीड़ितों और उनके परिवार जनों का आजीवन निःशुल्क इलाज करने और इसे आयुष्मान योजना के दायरे से मुक्त करने,भोपाल में गैस त्रासदी का एक गरिमामय स्मारक और संग्रहालय बनाने की मांग को लेकर किया जा रहा है।

प्रदेश में 48 घंटे बाद बारिश के आसार

छिंदवाड़ा-सिवनी, बैतूल में गिरेगा पानी, ग्वालियर-चंबल और उज्जैन में चलेगी बर्फीली हवा

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में अगले 48 घंटे बाद यानी 3-4 दिसंबर को बारिश और कड़ाके की ठंड का दौर शुरू हो सकता है। छिंदवाड़ा, सिवनी, बैतूल समेत अन्य जिलों में हल्की बारिश होने का अनुमान है, जबकि बर्फीली हवा से पूरा प्रदेश ठिठुर सकता है। उत्तरी हिस्से के ग्वालियर, चंबल और उज्जैन संभाग में ठंड का असर ज्यादा देखने को मिल सकता है। इससे पहले रात के टेम्प्रेचर में 2-3 डिग्री की बढ़ोतरी संभव है।

मौसम वैज्ञानिक वीएस यादव ने बताया, चक्रवाती तूफान 'फेंगल' पूर्वी हिस्से में सक्रिय है। इस वजह से हवा का असर बढ़ा है। अनुमान है कि छिंदवाड़ा, सिवनी समेत अन्य जिलों में 3-4 दिसंबर को हल्की बारिश हो सकती है। उन्होंने बताया-उत्तर-पश्चिमी भारत के ऊपर एक वेस्टर्न डिस्टरबेंस एक्टिव है। इस वजह से पहाड़ों में बर्फबारी होगी और उत्तरी हवाएं मध्यप्रदेश में तेजी से आएंगी, जिससे पूरे प्रदेश में दिन-रात में ठंड बढ़ने का अनुमान है।

नवंबर के बाद दिसंबर की शुरुआत भी तेज ठंड से

इस बार नवंबर में ठंड ने रिकॉर्ड तोड़ दिया। राजधानी भोपाल में तो 36 साल बाद नवंबर में रात का तापमान सबसे कम रहा। ऐसा ही मौसम दिसंबर में भी रहने का अनुमान है। वहीं, इंदौर में पिछले 24 घंटे में दिन के तापमान में 1 डिग्री का इजाफा हुआ है। रविवार को तापमान 25.6 रिकॉर्ड किया गया। हालांकि, पहले ही दिन प्रदेश के कई शहरों में ठंड का असर देखने को मिला। रात के साथ रविवार को दिन में भी तापमान में गिरावट देखने को मिली।

बड़े शहरों की बात करें तो भोपाल में रविवार-सोमवार की रात पारा 8.8 डिग्री सेल्सियस पहुंच गया। इंदौर में 12 डिग्री, ग्वालियर में 9.8 डिग्री, उज्जैन में 10 डिग्री और जबलपुर में 11.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।भोपाल में लोग घर से गर्म कपड़ों में निकल रहे हैं। रात का पारा 8.8 डिग्री रहा।

गिरवर में पारा सबसे कम 6.1 डिग्री तापमान दर्ज

शाजापुर से जुड़े गिरवर में पारा सबसे कम 6.1 डिग्री दर्ज किया गया। राजगढ़ में 7 डिग्री, छतरपुर के नौगांव में 7.2 डिग्री, शिवपुरी के पिपरसमा में 7.7 डिग्री, हिल स्टेशन पचमढ़ी में 8.2 डिग्री, रायसेन-टीकमगढ़ में 9 डिग्री, खंडवा-खजुराहो में 9.4 डिग्री, उमरिया-बैतूल में 9.5 डिग्री और गुना में पारा 9.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। गुना, रतलाम, खरगोन, रीवा, धार, मंडला, नरसिंहपुर, सतना, सागर, सीधी में टेम्परेचर 12 डिग्री से कम रहा। इंदौर में दिन का तापमान 24.9 डिग्री, रात का तापमान 12 डिग्री के आसपास बना हुआ है।

कोहरा बढ़ेगा, ट्रेनों में फॉग सेफ डिवाइस लगाए

कड़ाके की ठंड के साथ ही अब कोहरे का असर भी बढ़ेगा। ऐसे में भोपाल मंडल से गुजरने वाली ट्रेनों में रेलवे ने फॉग सेफ डिवाइस भी लगाई है। लोको पायलटों को कुल 341 फॉग सेफ डिवाइस दी गई है। दरअसल, कोहरे के दौरान विजिबिलिटी बेहद कम हो जाती है। जिससे लोको पायलटों के लिए सिग्नल और ट्रैक की स्थिति का सही तरीके से आंकलन करना मुश्किल हो जाता है। ऐसे हालात में फॉग सेफ डिवाइस लोको पायलटों की मदद के लिए डिजाइन किया गया है। यह पायलट को अलर्ट कर देता है।

कर्मचारी मंच का जन जागरण आंदोलन शुरू

सरकार के प्रति कर्मचारियों का आक्रोश सामने आया, कहा-लड़ाई जारी रहेगी

भोपाल (नप्र)। स्थाईकर्मियों का वेतनमान संशोधित करने, अनुकंपा नियुक्त एवं तबादला सुविधा देने सहित 10 सूत्रीय मांगों को लेकर मध्य प्रदेश कर्मचारी मंच ने जन जागरण आंदोलन शुरू कर दिया। भोपाल में कर्मचारी नेता अशोक पांडे, जगदीश शर्मा, चांद सिंह सिंह, राजू सिंह, घनश्याम कटारे, राजाराम मौरे, लव प्रकाश पाराशर, भगवान दास बिल्लोरे, श्यामलाल विश्वकर्मा, केके कहार, बद्री गौर, शिवप्रसाद सांगुले, सत्येंद्र पांडे, प्रीतम मेहर आंदोलन में शामिल हुए।

पांडे ने बताया कि जनजागरण आंदोलन प्रदेश के 5 संवर्ग के अनियमित कर्मचारियों की प्रमुख 10 मांगों के समर्थन में किया जा रहा है।

उन्होंने बताया कि राज्य सरकार पिछले 20 वर्षों से अनियमित, अंशकालीन कर्मचारियों एवं

श्रमिकों की मांगों की उपेक्षा कर रही है। लगातार ज्ञापन देने के बाद भी मांगें मंजूर नहीं की जा रही हैं। जिस कारण प्रदेश के अनियमित संवर्ग के लाखों कर्मचारियों, अंशकालीन कर्मचारियों एवं श्रमिकों में राज्य सरकार के विरुद्ध असंतोष व्याप्त है।

कर्मचारियों की मांगें ....

- अकुशल स्थाई कर्मियों का वेतन 10 हजार रुपए करें।
- अर्द्धकुशल-स्थाई कर्मियों को 12500, कुशल स्थाई कर्मियों को 15 हजार वेतन दें।
- स्थाई कर्मियों को अनुकंपा नियुक्ति का लाभ दें।
- स्थाई कर्मियों को स्थानांतरण सुविधा का लाभ दें।
- स्थाई कर्मियों को सेवानिवृत्ति एवं मृत्यु होने पर 10 लाख ग्रेच्युटी दें।
- दैनिक वेतन भोगी कर्मचारियों को नियमित करें
- अंशकालीन कर्मचारी, वन समिति चौकीदारों एवं पीटीएस कर्मचारियों का वेतन 10 हजार रुपए करें।

संपादकीय

गैस त्रासदी: जख्म अभी बाकी

विश्व की भीषणतम औद्योगिक भोपाल गैस त्रासदी को हुए अब चालीस साल पूरे हो चुके हैं। इसकी याद में भोपाल में अभी भी कार्यक्रम और प्रदर्शन होते हैं। इस बीच गैस पीडितों को मुआवजा बंट चुका है और गैस त्रासदी के पश्चात यानी 3 दिसंबर 1984 के बाद जन्मी पीढ़ी भी अब अधेड़ होने की ओर बढ़ रही है। उसने तो गैस त्रासदी की सिर्फ कहानियां सुनी हैं। इस हादसे में आधिकारिक रूप से 3 हजार 787 और अपुष्ट रूप से 10 हजार से अधिक लोगों की जाने गई थी और हजारों स्थायी रूप से गैस पीड़ित हो गए थे। जिन लोगों ने इस मानव निर्मित त्रासदी को झेला और शायद आज तक किसी न किसी रूप में झेल रहे हैं, उनके जख्म कभी नहीं भरे जा सकेंगे। गैस पीड़ितों के पुनर्वास और यूनियन कार्बाइड फैक्टरी के जहरीले कचरे के निपटान को लेकर किए गए सरकारी वादे अभी तक अधूरे हैं। वो जहरीला कचरा जिसमें मिथाइल आइसो साइनेट जैसी जानलेवा गैस शामिल है, अभी भी यूका कारखाने की जमीन के नीचे दफन है। इसका मानव जीवन पर दुष्परिणाम कब दिखाई पड़ेगा, कह नहीं सकते। जहरीली गैस के कारण गैस प्रभावित इस इलाके का भूजल भी विषाक्त हो चुका है। इंडियन इंस्टीट्यूट आफ टॉक्सिकोलॉजी रिसर्च लखनऊ की रिपोर्ट में यह तथ्य उजागर हुआ कि यूका परिसर के आसपास की 42 बस्तियों के भूजल में हेवी मेटल, आर्गनो क्लोरीन मिला गया है, जो कैंसर और किडनी की बीमारी का कारण बन सकता है। हालांकि इस पूरे क्षेत्र में अब सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर रहवासियों को नर्मदा जल की आपूर्ति की जा रही है। लेकिन प्रदूषित भूजल की वर्ष 2018 के बाद से जांच ही नहीं की गई है। यूका के जहरीले कचरे को जलाने की कोशिशें कई बार हुईं लेकिन कोई न कोई अड़ंगा, इसमें आ जाता है। इसके लिए 126 करोड़ रू. भी स्वीकृत हैं और इस कचरे को पीथमपुर में जलाया जाना है। लेकिन वहां भी इसका काफी विरोध हो रहा है। इसी तरह गैस पीड़ितों के पुनर्वास के लिए 272 करोड़ रू. की राशि मंजूर हुई थी। इसमें भी 129 करोड़ रुपये आज तक खर्च नहीं हो पाए हैं। जानकारों के अनुसार गैस राहत एवं पुनर्वास विभाग आज तक इस राशि को खर्च करने की योजना ही नहीं बना पाया है। इसी तरह गैस पीड़ितों के आर्थिक पुनर्वास के लिए 104 करोड़ रुपये मिले थे। इनमें 18 करोड़ रुपये स्वरोजगार प्रशिक्षण पर खर्च हुए बाकी क्या हुआ, यह अभी भी स्पष्ट नहीं है। एक समस्या और है। बदले राजनीतिक हालात में गैस पीड़ितों की समस्या अब पृष्ठभूमि में चली गई है। सरकार यह मान बैठी है कि 1 लाख से ज्यादा गैस पीडितों को 1521 करोड़ रू. का मुआवजा बंट चुका है। ऐसे में अब कुछ और करने की जरूरत नहीं है। चालीस साल पहले भोपाल छोटा शहर था। तब उसके 36 वार्ड गैस प्रभावित हुए थे, जिसमें अधिकांश हिस्सा पुराने भोपाल का था। अब भोपाल के वार्ड पहले की तुलना में दोगुने से ज्यादा हो चुके हैं। आबादी भी करीब ढाई गुना यानी 25 लाख हो चुकी है। ऐसे में राजनीतिक सोच की दशा और दिशा भी बदल गई है। सरकारों की प्राथमिकता जो भी हो, लेकिन भोपाल गैस त्रासदी समूची मानवता के मन पर लगा ऐसा जख्म है, जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता, जैसे कि नागासाकी और हिरोशिमा या ?चेरन?बिल के हादसे। अब आधुनिक प्रौद्योगिकी से भरे युद्धों के मद्देनजर यह खतरा और गंभीर हो गया है। इसी परिप्रेक्ष्य में भोपाल गैस त्रासदी को भुलाया जाना भी नहीं चाहिए, क्योंकि यह त्रासदी मनुष्य की गलती से हुई थी।

नजरिया

अमित बैजनाथ गर्ग

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

महिलाओं पर भारी जलवायु परिवर्तन

संयुक्त राष्ट्र की ओर से हाल ही में महिला आधारित एक रिपोर्ट में बताया गया है कि साल 2050 तक जलवायु परिवर्तन के चलते 158 मिलियन से अधिक महिलाएं और लड़कियां गरीबी की ओर जा सकती हैं। वहीं 236 मिलियन से अधिक महिलाओं और लड़कियों को खाद्य असुरक्षा का सामना करना पड़ सकता है। एक अनुमान के अनुसार, दुनिया भर में हर साल 130 मिलियन लड़कियों को शिक्षा के मानवाधिकार से वंचित रखा जाता है और जलवायु संबंधी संकट इस दिक्कत को और अधिक बढ़ा देते हैं। ऐसे मुश्किल समय में लड़कियों की जल्दी शादी होने की संभावना अधिक होती है, क्योंकि उन्हें घर की जरूरतों में मदद करने के लिए सबसे पहले स्कूल से निकाला जाता है। जलवायु संकट, क्षमता से अधिक संसाधनों का उपभोग और अथाह वायु प्रदूषण ने जिन समस्याओं को जन्म दिया है, उनका सबसे अधिक सामना महिलाओं को ही करना पड़ रहा है।

जलवायु परिवर्तन और बढ़ते वायु प्रदूषण के चलते पूरी दुनिया में मां की कोख में पल रहे शिशु भी सुरक्षित नहीं है। डॉक्टरों का कहना है कि हवा में बिखरे हैवी मेटल्स मां की सांस के जरिए अजन्मे बच्चों को नुकसान पहुंचा रहे हैं। वायु प्रदूषण नवजातों के दिल, दिमाग और फेफड़ों के लिए घातक है। प्रदूषित वातावरण में सांस लेने पर पॉल्यूशन प्लेसेंटा को पार कर भ्रूण तक पहुंच रहा है। प्रदूषण खून के जरिए पोषक तत्वों को शिशु तक पहुंचने से रोकता है। इससे शिशु के दिमाग और फेफड़े सही से डेवलप नहीं हो पाते हैं। बच्चों में हार्ट में परेशानी, सांस की जन्मजात बीमारी, न्यूरो डेवलपमेंट पर दुष्प्रभाव, लंग्स की मैच्योरिटी पर भी असर होता है। कई बच्चों में ऑटिज्म और बौद्धिक दिव्यांगता की भी समस्या देखी गई है। चिंता की बात यह है कि गर्भावस्था की शुरुआती जांच में ही भ्रूण में प्रदूषण के कण मिल रहे हैं। लंबे समय तक अगर बच्चा इस प्रदूषण के संपर्क में रहता है, तो उसे कैंसर होने का खतरा भी बना रहता है।

चीन के गुआंगडोंग प्रांत में प्रदूषण से होने वाली प्रीमैच्योर डिलीवरी को लेकर एक शोध हुआ। इसमें शामिल 687 महिलाओं को प्रीमैच्योर डिलीवरी हुई थी और 1097 महिलाओं को कम वजन वाले बच्चे हुए थे। उनकी तुलना 1766 हेल्दी बर्थ वाली महिलाओं के साथ की गई। गौर करने वाली बात यह है कि चीन के इस प्रांत में पूरे देश के औसत से कम प्रदूषण होता है। चीन में भी उत्तर भारत की तरह सितंबर-अक्टूबर से वायु प्रदूषण बढ़ना शुरू होता है और गर्मियों में कम होता है। इस शोध में यह पता चला कि प्रेगनेंसी के पहले और आखिरी महीने में महिलाओं तथा गर्भस्थ शिशु को प्रदूषण से सबसे ज्यादा नुकसान होता है। वहीं अमेरिका में होने वाले कुल प्रीमैच्योर बर्थ में तीन फीसदी की वजह प्रदूषण होता है। ऐसे बच्चों की संख्या 16 हजार है। प्लोस मैगजीन के मुताबिक, दुनिया भर में करीब 60 लाख बच्चे प्रदूषण की वजह से समय से पहले जन्म ले रहे हैं। इनमें से आधे बच्चे अंडरवेट यानी कम वजन के हैं।

वहीं लैंसेट की ओर से भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश में वायु प्रदूषण के प्रेगनेंसी पर असर को लेकर एक स्टडी की गई थी। इसमें सामने आया कि तीनों देशों में प्रदूषण की वजह 29 प्रतिशत प्रेगनेंसी लॉस यानी गर्भपात हुआ। इसमें से अकेले 77 प्रतिशत प्रेगनेंसी लॉस भारत में हुआ, जबकि पाकिस्तान में 12 प्रतिशत और बांग्लादेश में 11 प्रतिशत मामले सामने आए। इस स्टडी में 34,197 महिलाओं को शामिल किया गया था, जिनमें से 27,480 महिलाओं ने मिसकैरेज और 6,717 स्टिल बर्थ (बच्चे की हार्ट बीट गायब होना) झेला। शोध में कहा गया कि प्रदूषण बढ़ने के साथ मानव स्वास्थ्य का खतरा भी बढ़ गया है। आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि वायु प्रदूषण महिला स्वास्थ्य के लिए दुनिया का सबसे बड़ा बाहरी खतरा बना हुआ है। विशेषज्ञों का कहना है कि एचआईवी-एड्स, मलेरिया और टीबी के लिए हर साल बड़े वैश्विक कोष का निवेश किया जाता है, लेकिन वायु प्रदूषण के लिहाज से ऐसा नहीं है।

असल में जलवायु परिवर्तन और वायु प्रदूषण के खतरनाक स्तर के कारण महिलाएं श्वसन एवं हृदय संबंधी समस्याओं, कैंसर और अन्य बीमारियों से जूझ रही हैं। हालांकि यह सभी को प्रभावित करता है। डॉक्टरों का कहना है कि महिलाओं को इससे कुछ अनोखी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उनमें स्तन कैंसर के मामले अधिक पाए गए हैं। वहीं लकड़ी वाले चूल्हे पर खाना पकाने जैसी गतिविधियां महिलाओं के स्वास्थ्य के लिए जोखिम बढ़ाती हैं। घर के अंदर वायु प्रदूषण सिर्फ खाना पकाने से नहीं, बल्कि हीटिंग और लाइट से भी होता है। यह वनों की कटाई और शहरीकरण से काफी बढ़ गया है। वहीं महिलाएं अपनी शारीरिक संरचना, बच्चे पैदा करने, संतुलित आहार न लेने, रसोई में अधिक समय बिताने और आर्थिक रूप से स्वतंत्र न होने के कारण अधिक प्रभावित होती हैं। डब्ल्यूएचओ का कहना है कि पिछले दो दशकों में जलवायु परिवर्तन और वायु प्रदूषण वैश्विक संकट बन गया है। यह खराब स्वास्थ्य में योगदान देने वाला प्रमुख पर्यावरणीय कारक है, जिससे दुनिया में सालाना लाखों मौतें होती हैं।

कोविड महामारी ने दर्शाया है कि आपात परिस्थितियों में स्वास्थ्य-देखभाल संसाधनों को नए खतरों से लड़ने और कम महत्वपूर्ण समझी जाने वाली सेवाओं के लिए इस्तेमाल में लाया जा सकता है। जलवायु परिवर्तन के कारण आपात परिस्थितियों की आवृत्ति बढ़ती है यानी कि यौन व प्रजनन स्वास्थ्य और अधिकार सेवाओं में कटौती की जा सकती है। हालांकि यौन और प्रजनन स्वास्थ्य व अधिकार सेवाएं अगर जारी रह भी पाएं, तो भी विस्थापित महिलाएं व लड़कियों के लिए वे अक्सर सुलभ नहीं होती हैं। इसकी वजह से अनचाहे गर्भधारण और यौन संचारित संक्रमणों के मामलों में वृद्धि देखी जा सकती है। चक्रवाती तूफान के बाद मोजांबिक में गर्भनिरोधक उपायों तक पहुंच न होने की वजह से प्रजनन आयु की 20 हजार से अधिक महिलाओं को अनचाहे गर्भधारण का जोखिम झेलना पड़ा। वहीं होंडुरास में प्रजनन उम्र की एक लाख 80 हजार महिलाओं के लिए परिवार नियोजन सेवाएं सुलभ नहीं थीं। जलवायु परिवर्तन के कारण फसलें बर्बाद होने से भी यौन व प्रजनन स्वास्थ्य पर असर पड़ता है।

महिलाओं और लड़कियों को जलवायु परिवर्तन से असमान रूप से प्रभावित होना पड़ता है, क्योंकि वे दुनिया के अधिकांश गरीबों में से हैं, जो अपनी आजीविका के लिए स्थानीय प्राकृतिक संसाधनों पर अत्यधिक निर्भर हैं। ग्रामीण इलाकों में महिलाएं और लड़कियां अक्सर अपने परिवारों के लिए भोजन, पानी और लकड़ी जुटाने के लिए जिम्मेदार होती हैं। सूखे और अनियमित वर्षा के समय ग्रामीण महिलाएं अधिक मेहनत करती हैं, अधिक दूर तक चलती हैं और अपने परिवारों के लिए आय और संसाधन जुटाने में अधिक समय बिताती हैं। यह उन्हें लिंग आधारित हिंसा के बढ़ते जोखिम के प्रति भी उजागर करता है, क्योंकि जलवायु परिवर्तन मौजूदा संघर्षों, असमानताओं और कमजोरियों को बढ़ाता है। मौसम संबंधी आपदाएं महिलाओं और बच्चों की मृत्यु की संभावना पुरुषों की तुलना में 14 गुना अधिक बढ़ाती हैं। जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से विस्थापित होने वाले पांच में से चार लोग महिलाएं और लड़कियां हैं। ये आपदाएं यौन और प्रजनन स्वास्थ्य देखभाल सहित आवश्यक सेवाओं को भी बाधित करती हैं, जिससे महिलाओं और लड़कियों पर नकारात्मक प्रभाव और भी बढ़ जाता है।

संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, जलवायु परिवर्तन के कारण विस्थापित होने वालों में 80 फीसदी महिलाएं या लड़कियां हैं, जो सुरक्षित स्थानों पर जाने के कारण गरीबी, हिंसा या अनपेक्षित गर्भधारण के बढ़ते जोखिम का सामना कर रही हैं। महिलाओं का स्वास्थ्य बढ़ते तापमान से सबसे ज्यादा प्रभावित होता है। वायु प्रदूषण और गर्मी के संपर्क में आने से समय से पहले बच्चे का जन्म, कम वजन वाले बच्चे, खराब मातृ स्वास्थ्य और गर्भावस्था के दौरान जटिलताओं का महिलाओं को सामना करना पड़ता हैं। यह प्रसव पूर्व मातृ तनाव को बढ़ाता है, जबकि स्तन के दूध में भारी धातुएं नवजात शिशुओं में एलर्जी और तंत्रिका संबंधी विकारों से जुड़ी हुई हैं। असल में जलवायु परिवर्तन का महिलाओं पर गहरे तक पड़ने वाला प्रभाव एक संवेदनशील मुद्दा है। इस पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। जागरुकता फैलाने, शिक्षा और स्वास्थ्य की पहुंच प्रदान करने, आर्थिक अवसर प्रदान करने और प्रभावी नीतियों को लागू करके हम महिलाओं और लड़कियों को शक्ति प्रदान कर सकते हैं, ताकि वे जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न होने वाली चुनौतियों का सामना कर सकें और अपने जीवन को बेहतर बना सकें।

विश्व विकलांग दिवस पर विशेष

रमेश सर्राफ धमोरा

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

दिव्यांगो को मिले बराबरी का अधिकार

संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 1992 में हर वर्ष 3 दिसम्बर को अंतर्राष्ट्रीय विकलांग दिवस के रूप में मनाने घोषणा की गयी। इसका उद्देश्य समाज के सभी क्षेत्रों में दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों को बढ़ावा देना और राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन में दिव्यांग लोगों के बारे में जागरूकता बढ़ाना था। मगर आज भी लोगों को तो इस बात का भी पता ही नहीं होता है कि हमारे आस-पास कितने दिव्यांग रहतें हैं। उन्हे समाज में बराबरी का अधिकार मिल रहा है कि नहीं। किसी को इस बात की कोई फिकर नहीं हैं।

समाज में दिव्यांगता को एक सामाजिक कलंक के रूप में देखा जाता है। जिसे सुधारने की आवश्यकता है। इस वर्ष का विषय 'समावेशी और टिकाऊ भविष्य के लिए विकलांग व्यक्तियों के नेतृत्व को बढ़ावा देना' विकलांग व्यक्तियों को अपने भाग्य को आकार देने और समाज में योगदान देने में अग्रणी भूमिका निभाने के लिए सशक्त बनाने के महत्व को रेखांकित करता है।

सरकार द्वारा देश में दिव्यांगो के लिए कई नीतियां बनायी गयी है। उन्हें सरकारी नौकरियों, अस्पताल, रेल, बस सभी जगह आरक्षण प्राप्त है। दिव्यांगो के लिए सरकार ने पेशन की योजना भी चला रखी है। लेकिन ये सभी सरकारी योजनाएं उन दिव्यांगो के लिए महज एक मजाक बनकर रह गयी हैं। जब इनके पास इन सुविधाओं को हासिल करने के लिए दिव्यांगता का प्रमाणपत्र ही नहीं है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि शारीरिक रूप से अशक्त लोगों के पास एक 'दिव्य क्षमता' है और उनके लिए 'विकलांग' शब्द की जगह दिव्यांग शब्द का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। प्रधानमंत्री ने विकलांगों को दिव्यांग कहने की अपील की थी। जिसके पीछे उनका तर्क था कि शरीर के किसी अंग से लाचार व्यक्तियों में ईश्वर प्रदत्त कुछ खास विशेषताएं होती हैं। विकलांग शब्द उन्हे हतोत्साहित करता है। प्रधानमंत्री मोदी के आह्वान पर देश के लोगों ने विकलांगो को दिव्यांग तो कहना शुरू कर दिया लेकिन लोगों का उनके प्रति नजरिया आज भी नहीं बदल पाया है। आज भी समाज के लोगों द्वारा दिव्यांगों को दयनीय दृष्टि से ही देखा जाता है। भले ही देश में अनेको दिव्यांगों ने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया हो मगर लोगों का उनके प्रति वहीं पुराना नजरिया बरकरार है।

दुनिया में अनेकों ऐसे उदाहरण मिलेंगे जो बताते है कि सही राह मिल जाये तो अभाव एक विशेषता बनकर सबको चमत्कृत कर देती है। भारत में दिव्यांगो की मदद के लिए बहुत सी सरकारी योजनाएं संचालित हो रही हैं। लेकिन इतने वर्षो बाद भी देश में आज तक आधे दिव्यांगो को ही दिव्यांगता प्रमाण पत्र मुहैया कराया जा सका है। ऐसे में दिव्यांगो के लिए सरकारी सुविधाएं हासिल करना महज मजाक बनकर रह गया हैं।

दुनिया में बहुत से ऐसे दिव्यांग हुए हैं जिन्होंने अपने साहस संकल्प और उत्साह से विश्व के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अपना नाम लिखवाया है। शक्तिशाली शासक तैमूर लंग हाथ और पैर से शक्तिहीन था। मेवाड़ के राणा सांगा तो बचपन में ही एक आंख गवाने तथा युद्ध में एक हाथ एक पैर तथा 80 घावों के बावजूद कई युद्धों में विजेता रहे थे। सिख राज्य की स्थापना करने वाले महाराजा रणजीत सिंह की एक आंख बचपन से ही खराब थी। सुप्रसिद्ध नृत्यांगना सुधा चंद्रन के दाईं टांग नहीं थी। फिल्मी गीतकार कृष्ण चंद्र डे तथा संगीतकार रविंद्र जैन देख नहीं सकते थे। पूर्व क्रिकेटर अंजन भट्टाचार्य मूकबधिर थे। वर्ल्ड पैरा चैम्पियनशिप खेलों में झुंझुनू जिले के दिव्यांग खिलाड़ी संदीप कुमार व जयपुर के सुन्दर गुर्जर ने भाला फेंक प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीत कर भारत का मान बढ़ाया है।

यह एक कड़वी सच्चाई है कि भारत में दिव्यांग आज भी अपनी जरूरतों के लिए दूसरों पर आश्रित है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के एक अनुमान के अनुसार विश्व स्तर पर 15 प्रतिशत आबादी किसी न किसी प्रकार की विकलांगता के साथ रहती है। जबकि उसमें से 80 प्रतिशत से अधिक लोग निम्न और मध्यम आय वाले देशों में रहते हैं। जबकि भारत में 140 करोड़ से अधिक लोग है। इस आबादी का 2.2 प्रतिशत से अधिक लोग किसी न किसी रूप में गंभीर मानसिक या शारीरिक विकलांगता से पीड़ित हैं। आज के प्रगतिशील युग में जहाँ सभी लोगों के एकीकरण और समावेशन पर सतत विकास के प्रवेश द्वार के रूप में जोर दिया जाता है। भारत में विकलांग लोगों को वर्गीकृत करने वाले मानदंडों की सूची को 2016 में नया रूप दिया गया था। 2016 के आरपीडब्ल्यूडी अधिनियम पर आधारित संशोधित परिभाषा में एसिड हमलों से संबंधित शारीरिक विकृति और चोटों को विकलांगता के रूप में मान्यता देना भी शामिल है। जो इन पीड़ितों को विभिन्न प्रकार की सरकारी सहायता और समर्थन का हकदार बनाता है।

विकलांगों के अधिकारों के लिए काम कर रहे संगठन नेशनल प्लेटफॉर्म फॉर द राइटस ऑफ डिसएबिल्ड ने प्रधानमंत्री मोदी के दिव्यांग शब्द पर उनको पत्र लिखकर कहा कि था कि केवल शब्द बदलने मात्र से ही विकलांगों के साथ होने वाले व्यवहार के तौर तरीके में कोई बदलाव नहीं आएगा। सबसे बड़ी जरुरत है विकलांगों से जुड़े अपयश, भेदभाव और हाशिए पर डालने के मुद्दों पर ध्यान देने की है। ताकि वो देश की राजनीति के साथ साथ आर्थिक, सामाजिक विकास में बेहतर भागीदारी कर सकें।

भारत में आज भी दिव्यांगता प्रमाण पत्र हासिल करना किसी चुनौती से कम नहीं है। सरकारी कार्यालयों और अस्पतालों के कई दिनों तक चक्कर लगाने के बाद भी लोगों को मायूस होना पड़ता है। हालांकि सरकारी दावे कहते हैं कि इस प्रक्रिया को काफी सरल बनाया गया है, लेकिन हकीकत इससे काफी दूर नजर आती है। दिव्यांगता का प्रमाणपत्र जारी करने के सरकार ने जो मापदण्ड बनाये हैं। अधिकांश सरकारी अस्पतालों के चिकित्सक उनके अनुसार दिव्यांगो को दिव्यांग होने का प्रमाण पत्र जारी ही नहीं करते है। जिसके चलते दिव्यांग व्यक्ति सरकारी सुविधायें पाने से वचिंत रह जाते हैं।

देश में दिव्यांगो को दी जाने वाली सुविधाएं कागजों तक सिमटी हुई हैं। अन्य देशों की तुलना में हमारे यहां दिव्यांगो को एक चौथाई सुविधाएं भी नहीं मिल पा रही है। केन्द्र सरकार ने देशभर के दिव्यांग युवाओं को केन्द्र सरकार में सीधी भर्ती वाली सेवाओं के मामले में दृष्टि बाधित, बधिर और चलने-फिरने में दिव्यांगता या सेरेब्रल पल्सी के शिकार लोगों को उम्र में 10 साल की छूट देकर एक सकारात्मक कदम उठाया है। दिव्यांगता शारीरिक अथवा मानसिक हो सकती है किन्तु सबसे बड़ी दिव्यांगता हमारे समाज की उस सोच में है जो दिव्यांग जनों से हीन भाव रखती है। जिसके कारण एक असक्षम व्यक्ति असहज महसूस करता है।

आधुनिक होने का दावा करने वाला हमारा समाज अब तक दिव्यांगो के प्रति अपनी बुनियादी सोच में कोई खास परिवर्तन नहीं ला पाया है। अधिकतर लोगों के मन में दिव्यांगों के प्रति तिरस्कार या दया भाव ही रहता है। ऐसे भाव दिव्यांगो के स्वाभिमान पर चोट करते हैं। भारत में दिव्यांगो की इतनी बड़ी संख्या होने के बावजूद इनकी परेशानियों को समझने और उन्हें जरूरी सहयोग देने में सरकार और समाज दोनों नाकाम दिखाई देते हैं।

अब दिव्यांग लोगों के प्रति अपनी सोच को बदलने का समय आ गया है। दिव्यांगो को समाज की मुख्यधारा में तभी शामिल किया जा सकता है जब समाज इन्हें अपना हिस्सा समझे। इसके लिए एक व्यापक जागरूकता अभियान की जरूरत है। हाल के वर्षों में दिव्यांगो के प्रति सरकार की कोशिशों में तेजी आयी है। दिव्यांगो को कुछ न्यूनतम सुविधाएं देने के लिए प्रयास हो रहे हैं। हालांकि योजनाओं के क्रियान्वयन को लेकर सरकार पर सवाल उठते रहे हैं। पिछले दिनों क्रियान्वयन की सुस्त चाल को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने सरकार को फटकार भी लगायी थी। दिव्यांगो को शिक्षा से जोडना बहुत जरूरी है। मूक-बधिरों के लिए विशेष स्कूलों का अभाव है। जिसकी वजह से अधिकांश विकलांग ठीक से पढ़-लिखकर आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नहीं बन पाते हैं।

मिक, त्रासदी और मल्टी नेशनल कंपनियां

भोपाल गैस कांड

डॉ. प्रदीप मिश्र

लेखक स्तंभकार हैं।

मेथिल आईसो साइनेट उर्फ मिक! यही नाम है उस हत्यारी गैस का। इसी ने 1984 के दो-तीन दिसम्बर की रात को कहर बरपाया था। पर हत्यारी उसे क्यों कहें? रसायनों का अपना दिमाग तो होता नहीं कि अच्छा-बुरा समझें ? उनके इस्तेमाल के लिए तो इंसान को अपना खुद का निजी दिमाग लगाना पड़ता है। अब उसी दिमाग के लगने-लगाने में कहीं चूक या शैतानी हुई तो मामला बिगड़ जाता है और सारा कुछ भोपाल में हुई गैस-त्रासदी के रुप में सामने आता है। कहने का मतलब यह की भोपाल गैस-त्रासदी, किसी रसायनों के दुष्चरित्र का नहीं, बल्कि इंसानी दिमाग के पैदलपने की निशानी है।

मिक, वह कच्चा सामान है, जो कार्बेमेट नाम के कीटनाशी के उत्पादन में जरुरी होता है। कार्बेमेट एक जरुरी रसायन है, जो कॉकरोज सहित दूसरे कीड़ों की जान का दुश्मन होता है। जिनके घरों में लॉन और छोटे बगीचे हैं, वे कार्बेमेट से बने कीटनाशियों का इस्तेमाल सामान्य रुप से करते हैं। इसी कार्बेमेट को बनाने के लिए भोपाल में मिक टैंकों में जमा किया गया था। यह एक वाष्पशील द्रव होता है, जो 39-41 डिग्री सेल्सियस पर उबलने लगता है। ताप में बहुत ज्यादा बढ़ोत्तरी न हो तो इससे सामान्यतः कोई खतरा नहीं होता या कहें कि जब तक मिक से छेड़छाड़ न की जाए यह उग्र नहीं होता। लेकिन फिर भी सुरक्षा के लिहाज से इसे नमी रहित, 4.5 डिग्री सेल्सियस ताप वाले ठंडे टैंकों में रखा जाता है और चूक भी निश्चिततौर पर इसी रख-रखाव में ही हुई थी।

2-3 दिसम्बर 1984 वाली रात भी काफी ठंडी थी। हाड़ कँपकपाती ठंड में तापमान इतना कम था कि औरों की तरह मिक भी अपने टैंक में दुबका पड़ा था। पर नहीं पता कहीं से पानी निकलकर टैंक में भरने लगा। अपने मुल्क में कौन सी चीज कहाँ से निकलकर कहाँ चली जाए, कहा नहीं जाता। मिक का टैंक कैसे फटा? इस सवाल का यही एक बेशर्मी भरा जवाब है कि, उसमें कहीं से पानी घुस गया था। पानी कहाँ से आया, यह किसी को नहीं पता, बस पानी आया और उसने टैंक को फोड़ दिया।

असल में मिक एक ऐसा पदार्थ है जिसकी पानी के साथ दाँत काटी रोटी की सी घनिष्ठता है। यह जब पानी से मिलता है तो ताप में अनायास ही काफी बढ़ौत्तरी होती है। और कयामत की उस रात में मिक और पानी की इस घनिष्ठता ने उस टैंक का ताप लगभग 200 डिग्री सेल्सियस कर दिया था। अब वह टैंक कब तक बरदाश्त करता? जाहिर है उसे फटना था और वह फटा भी। फिर क्या था मिक ने गैस का रुप धारण किया और धुंध, कोहरे, नमी और शीत लहर पर सवार होकर निकल लिया कहर बरपाने। वो तो तैंतीस करोड़ देवी-देवताओं, अल्लाह, वाहे गुरु और जीसस क्राईस का धन्यवाद दीजिए कि यह घटना कड़कड़ाती ठंड में हुई थी, जब मौसम ने मिक का फैलने में साथ नहीं दिया वरना यही घटना गर्मियों में हुई यह भयावह विषैली मिक गैस, हवा में मिलकर नामालूम कहाँ-कहाँ तक पहुँचती और कितनों के प्राण हरती सोचना भी नामुमकिन है।

बताने वाले बताते हैं कि मिक फेफड़े में घुसी तो बस वहीं की हो जाती है। अब जब फेफड़े में जब मिक रम गई तो ऑक्सीजन कैसे जाए? काफी दर्दनाक मौत का मंजर रहा होगा वह। पानी को सोखने वाली इस गैस ने शरीर का सारा पानी सोख लिया। पानी सोखने के काम के साथ, यह उससे क्रिया भी करती है और यूरिया फेमिली के एक पदार्थ को तत्काल पैदा करती है। मिक इतनी खौफनाक है कि इसने इंसानी खून (हीमोग्लाबिन) का रंग भी बदल दिया। जो जीवित बचे हैं काफी सालों से वो छाती के दर्द, दमा, आँख-कान-गले की बीमारियों के साथ ही त्वचा रोगों से भी परेशान हैं।

वैज्ञानिकों ने बहुत अध्ययन किए। गैस निकलने के दूसरे ही दिन से लेकर अब तक नामालूम कितने शोध, अध्ययन, विमर्श....चल रहें हैं और आगे भी चलेंगे। असल में क्या हुआ था, क्यों हुआ था, कैसे हुआ था....यही सब जानने की बातें थीं, और आज भी हैं और आगे भी रहेंगी। सब कुछ जानने में ही आदमी की बेहतरी भी है। भोपाल गैस त्रासदी से भी बड़ी त्रासदी तब होगी जब हम इस घटना से सबक नहीं लेंगे।

मल्टीनेशनल कम्पनियाँ आने को हैं। विदेशियों पर कारखाने लगाने के लिए डोरे डाले जा रहे हैं। सब ठीक है, जरुरी भी है, लेकिन इन कंपनियों से जो करार हो उसमें एक अनिवार्य शर्त यह भी होनी चाहिए कि,' वे हिन्दुस्तानियों को इंसान भी मानेंगी?' यूनियन कार्बाईड ने तो नहीं माना था।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

प्रदीप मिश्र

लेखक व्यंग्यकार है

एक्यूआई...पड़ोसी की याद आई

परम प्रसन्नता की बात है कि पाकिस्तान की भी हवा प्रदूषित हो गई है। ताजा जानकारी के मुताबिक लाहौर में (हवा की गुणवत्ता) 1900 को पार कर गया है। लाहौर दुनिया का सबसे प्रदूषित शहर बन गया है। भारत अभी तक एशिया के प्रदूषित शहरों और जिलों में ही अपनी गिनती करा पाता है। जल प्रदूषण में भी हम पाकिस्तान के बराबर नहीं हैं। खराब हवा के कारण पाकिस्तान के लोग मास्क लगाने लगे हैं। देशप्रेमियों के लिए परेशानी की बात यह है कि आखिरकार क्या कारण हैं कि हम पड़ोसी या यों कहिए अपने कलेजे के विछड़े टुकड़े से पीछे रह गए। इसी वजह से हमें मुंह छिपाने की जरूरत पड़ रही है। सेल्फी का एक सुनहरा अवसर और पर्यावरण की सुरक्षा के लिए ग्लोबल वार्मिंग, ओजोन परत, ऋतु चक्र आदि पर गूगल से आयातित ज्ञान को प्रसारित करने का मौका मिस हो रहा है। अब फेफड़ों में सूजन और आंखों में जलन के मामले में जैसे ही पड़ोसी आगे जाएगा। ईर्ष्या में ही सही आईक्यू और एक्यूआई में फर्क समझ आएगा।

दिल्ली में छठ पूजा पर यमुना में जल प्रदूषण को मुद्दा गरमाया। सत्ता ने सरकार के विरुद्ध भरमाया। दिल्ली में बसने, आने-जाने पर रोक और दिल्ली वालों को उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर ले जाने का खयाल क्यों नहीं आया। अच्छी, शुद्ध, ताजी हवा के लिए क्यों न नई कंपनियां लाई जाएं। कुछ वे और कुछ सब कमाएं। पूंजीवादियों के लिए ये क्रांतिकारी कदम होगा। कारोबारियों के हाथों में होंगी अवाम की सांसें और लोगों का दम होगा। कोई दानी यों ही इस धंधे में नहीं आएगा। कमाई सफाई के लिए नहीं, मलाई के लिए धन लगाएगा। कुछ दिन तक बहुत शोर होगा। केंद्र और राज्य सरकारों का जोर होगा। धीरे-धीरे हर कोई बोलेगा। गंदी हवा के बीच अपनी जुबां खोलेगा। ' ई का हुइ गवा...हवा के लिए चाहिए दवा....' इसलिए दिल्ली के विधानसभा चुनाव में मुफ्त पानी, बिजली के बाद निशुल्क हवा का वायदा किया जाएगा। खुद को फिर से खांसी हो जाए, मफलर बांध कर इसे दिया जाएगा।

'कश्तियां बच जाती हैं तूफान में किंतु हस्तियां डूब जातीं हैं अभिमान में...' को ध्यान में रखकर ही राष्ट्रवादी विरोधियों-विद्रोहियों-देशद्रोहियों को पाकिस्तान जाने की सलाह देते हैं। प्रदूषण के मामले में पाकिस्तान से पिछड़ने के पश्चात बड़े पैमाने पर लोगों को वहां भेजने का फरमान दिया जाएगा। अलग-अलग एजेंसियों द्वारा इनकी गिनती कर ली गई है। देश की शान और आत्मनिर्भरता के लिए इनसे पड़ोस में जाने की विनती कर ली गई है। राष्ट्रव्यापी अभियान के मद्देनजर ' पंछी, दरिया, पवन के झोंके, कोई सरहद ना इसे रोके...' को नारा और नैरेटिव बनाया जाएगा। पाकिस्तान के हालात बताने के साथ बॉर्डर दिखाया जाएगा। जब इस गाने के बोल सोचे-लिखे गए होंगे, कितना प्यार रहा होगा। नफरत की राजनीति का कारोबार नहीं रहा होगा। जब से आंकड़े भी मन के मुताबिक होने लगे हैं। गड़े मुर्दों की तरह अपना अर्थ ही खोने लगे हैं। हमारी एक आदत बन गई है। अंतरराष्टीय संस्थाओं के आंकड़ों से अदावत बन गई है। एक कवियत्री ने लिखा था-'खुद ही अदावत करें, खुद ही फैसले कर लें, हमको इन वकीलों, अदालत की जरूरत क्या है।'

पहले भारत का सऊर बोलता था। अब गुरूर बोलता है। गलती पहले भी होती थी। छिपाने के बजाय क्षमायाचना या खामोशी होती थी। अब फर्जी आंकड़े बताने, रिपोर्ट खारिज करने, विदेशी साजिश बताने में गर्मजोशी होती है। थोड़ी हठधर्मी, थोड़ी बेरुखी, थोड़ा द्वेष और थोड़ी बेहोशी होती है। जब हम सामाजिक नहीं, जंगली हो जाते हैं। शुभकामनाएं देते समय ही मंगली हो जाते हैं। दुर्भाग्य, बिडंबना और बदकिस्मती पुराने शब्द हो गए हैं। निशाना, डंका और परचम अदृश्य शक्ति से आबद्ध हो गए हैं। कभी रुपये की गिरावट पर शोकाकुल होकर हाहाकार मचाने वाले गूंगे-बहरे हो चुके हैं। 15 नवंबर को एक डॉलर की कीमत 84.45 रुपये थी। विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) ने अक्तूबर में 94,017 करोड़ के शेयर बेच दिए थे। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में भारत में आठ वर्ष पहले की गई चमत्कारिक नोटबंदी को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया गया है। मिस्टर इंडिया के शोध के निष्कर्ष को किस्सा बनाया गया है। अच्छा है, विदेशी जितना जिक्र करेंगे। राष्ट्रवादी 'बंटेंगे तो कटेंगे' की तर्ज पर बेफिक्र रहेंगे।

पर्यावरण

ललित गर्ग

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

प्रदूषण से बढ़ती मौतों के लिये कौन जिम्मेदार?

जीवन-शैली ऐसी बन गयी है कि आदमी जीने के लिये सब कुछ करने लगा पर खुद जीने का अर्थ ही भूल गया, इस गंभीर होती स्थिति को यूनिसेफ और अमेरिका के स्वतंत्र अनुसंधान संस्थान 'हेल्थ इफेक्ट्स इंस्टीट्यूट' की साझेदारी में जारी रिपोर्ट ने बयां किया है, इस रिपोर्ट के आंकड़े परेशान एवं शर्मसार करने के साथ चिन्ता में डालने वाले हैं, जिसमें वर्ष 2021 में वायु प्रदूषण से 21 लाख भारतीयों के मरने की बात कही गई है। ज्यादा दुख की बात यह है कि मरने वालों में 1.69 लाख बच्चे हैं, जिन्होंने अभी दुनिया ठीक से देखी ही नहीं थी। निश्चय ही ये आंकड़े जहां व्यथित, चिन्तीत व परेशान करने वाले हैं। वहीं सरकार के नीति-नियंताओं के लिये यह शर्म का विषय होना चाहिए, लेकिन उन्हें शर्म आती ही कहा है? तनिक भी शर्म आती तो सरकारें एवं उनके कर्ता-धर्मा इस दिशा में गंभीर प्रयास करते। सरकार की नाकामयियों ही हैं कि जिन्दगी विषमताओं और विसंगतियों से घिरी होकर उसे कहीं से रोशनी की उम्मीद दिखाई नहीं दे रही है।

राष्ट्रीय प्रदूषण नियंत्रण दिवस हर साल 2 दिसंबर को मनाया जाता है। यह दिन प्रदूषण के हानिकारक प्रभावों के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए मनाया जाता है। इस दिन को मनाने का मकसद, प्रदूषण नियंत्रण तकनीकों, नीतियों, और प्रदूषण को कम करने के महत्व पर ध्यान आकर्षित करना है। यह दिन भोपाल गैस त्रासदी में अपनी जान गंवाने वाले लोगों की याद में मनाया जाता है। यह त्रासदी 2-3 दिसंबर, 1984 की रात को हुई थी। इस त्रासदी में ज़हरीली गैस मिथाइल आइसोसाइनेट (एमआईसी) के कारण सैकड़ों लोगों की मौत हो गई थी। कहते हैं जान है तो जहान है, लेकिन भारत में बढ़ते प्रदूषण के कारण जान और जहान दोनों ही खतरे में हैं। देश एवं दुनिया की हवा में घुलते प्रदूषण का 'जहर' अनेक बार खतरनाक स्थिति में पहुंच जाना चिन्ता का बड़ा कारण हैं। प्रदूषण की अनेक बंदिशों एवं हिदायतों के बावजूद प्रदूषण नियंत्रण की बात खोखली साबित हो रही है। यह कैसा समाज है जहां व्यक्ति के लिए पर्यावरण, अपना स्वास्थ्य या दूसरों की सुविधा-असुविधा का कोई अर्थ नहीं है। प्रदूषण के कारण जल, भूमि, और वायु प्रदूषित होता है, जिससे मौतें होती हैं, प्रदूषण से जीवन और स्वास्थ्य की गुणवत्ता प्रभावित होती है।

जीवन-शैली ऐसी बन गयी है कि आदमी जीने के लिये सब कुछ करने लगा पर खुद जीने का अर्थ ही भूल गया, इस गंभीर होती स्थिति को यूनिसेफ और अमेरिका के स्वतंत्र अनुसंधान संस्थान 'हेल्थ इफेक्ट्स इंस्टीट्यूट' की साझेदारी में जारी रिपोर्ट ने बयां किया है, इस रिपोर्ट के आंकड़े परेशान एवं शर्मसार करने के साथ चिन्ता में डालने वाले हैं, जिसमें वर्ष 2021 में वायु प्रदूषण से 21 लाख भारतीयों के मरने की बात कही गई है। ज्यादा दुख की बात यह है कि मरने वालों में 1.69 लाख बच्चे हैं, जिन्होंने अभी दुनिया ठीक से देखी ही नहीं थी। निश्चय ही ये आंकड़े जहां व्यथित, चिन्तीत व परेशान करने वाले हैं। वहीं सरकार के नीति-नियंताओं के लिये यह शर्म का विषय होना चाहिए, लेकिन उन्हें शर्म आती ही कहा है? तनिक भी शर्म आती तो सरकारें एवं उनके कर्ता-धर्मा इस दिशा में गंभीर प्रयास करते। सरकार की नाकामयियों ही हैं कि जिन्दगी विषमताओं और विसंगतियों से घिरी होकर उसे कहीं से रोशनी की उम्मीद दिखाई नहीं दे रही है।

बढ़ता वायु प्रदूषण न केवल भारत के लिये बल्कि दुनिया के लिये एक गंभीर समस्या है। चीन में भी इसी कालखंड में 23 लाख लोग वायु प्रदूषण से मरे हैं। जहां तक पूरी दुनिया में इस वर्ष मरने वालों की कुल संख्या का प्रश्न है तो यह करीब 81 लाख बतायी जाती है। चिंता की बात यह है कि भारत व चीन में वायु प्रदूषण से मरने वालों की कुल संख्या के मामले में यह आंकड़ा वैश्विक स्तर पर 54 फीसदी है। जो हमारे तंत्र की विफलता, गरीबी और प्रदूषण नियंत्रण में शासन-प्रशासन की कोताही एवं लापरवाही को ही दर्शाता है। इसमें आम आदमी की लापरवाही भी कम नहीं है। आम आदमी को पता ही नहीं होता है कि किन प्रमुख कारणों से यह प्रदूषण फैल रहा है और किस तरह वे इससे बचाव कर सकते हैं। प्रश्न है कि आम आदमी एवं उसकी जीवनशैली वायु प्रदूषण को इतना बेपरवाह होकर क्यों फैलाती है? क्यों आदमी मृत्यु से नहीं डर रहा है? क्यों भयभीत नहीं है? देश की जनता दुख, दर्द और संवेदनहीनता के जटिल दौर से रूबरू है, प्रदूषण जैसी समस्याएं नये-नये मुखौटे ओढ़कर डराती है, भयभीत करती है। विडम्बना तो यह है कि विभिन्न राज्यों की सरकारें इस विकट होती समस्या का हल निकालने की बजाय राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप करती है, जानबूझकर प्रदूषण फैलाती है ताकि एक-दूसरे की छीछालेदर कर सके।

दिल्ली सहित उत्तर भारत के ज्यादातर इलाकों में प्रदूषण बेहद खतरनाक स्थिति में बना रहता है। हालत ये बनते हैं कि कभी-कभी सांस लेना मुश्किल हो जाता है और लोगों को घरों में ही रहने को मजबूर होना पड़ता है। दिल्ली, नोएडा, गाजियाबाद, फरीदाबाद, गुरुग्राम में प्रदूषण का बड़ा कारण पड़ोसी राज्यों से आने वाला पराली का धुआं होता है। पराली के बाद पटाखों का धुआं भी बड़ी समस्या है, इसके अलावा सड़कों पर लगातार बढ़ते निजी वाहन, गुणवत्ता के ईंधन का उपयोग न होना, निर्माण कार्य खुले में होना, उद्योगों की घातक गैसों व धुएं का नियमन न होने जैसे अनेक कारण वायु प्रदूषण बढ़ाने वाले हैं। वहीं दूसरी ओर आवासीय कॉलोनियों व व्यावसायिक संस्थानों का विज्ञानसम्मत ढंग से निर्माण न हो पाना भी प्रदूषण बढ़ाने की एक वजह है। यह कैसी शासन-व्यवस्था है? यह कैसा अदालतों की अवमानना का मामला है? यह सभ्यता की निचली सीढ़ी है, जहां तनाव-ठहराव की स्थितियों के बीच हर व्यक्ति, शासन-प्रशासन प्रदूषण नियंत्रण के अपने दायित्वों से दूर होता जा रहा है।

यूनीसेफ की रिपोर्ट में वायु प्रदूषण से 1 लाख 69 हजार बच्चे जिनकी औसत आयु पांच साल से कम बतायी गई है, मौत के शिकार होते हैं। जानलेवा प्रदूषण का प्रभाव गर्भवती महिलाओं पर होने से बच्चे समय से पहले जन्म ले लेते हैं, इनका समुचित शारीरिक विकास सही ढ़ंग से नहीं हो पाता। इससे बच्चों का कम वजन का पैदा होना, अस्थमा तथा फेफड़ों की बीमारियां से पीड़ित होना हैं। हमारे लिये चिंता की बात यह है कि बेहद गरीब मुल्कों नाइजीरिया, पाकिस्तान, बांग्लादेश, इथोपिया से ज्यादा बच्चे हमारे देश में वायु प्रदूषण से मर रहे हैं। विडंबना यह है कि ग्लोबल वार्मिंग तथा जलवायु परिवर्तन के संकट ने वायु प्रदूषण से होने वाली मौतों की संख्या को बढ़ाया ही है। एक अरब चालीस करोड़ जनसंख्या वाले देश भारत के लिये यह संकट बहुत बड़ा है। दिल्ली सहित देश के कई महानगरों में प्रदूषण जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गयी है।

हर कुछ समय बाद अलग-अलग वजहों से हवा की गुणवत्ता का स्तर 'बेहद खराब' की श्रेणी में दर्ज किया जाता है और सरकार की ओर से इस स्थिति में सुधार के लिए कई तरह के उपाय करने की घोषणा की जाती है। हो सकता है कि ऐसा होता भी हो, लेकिन सच यह है कि फिर कुछ समय बाद प्रदूषण का स्तर गहराने के साथ यह सवाल खड़ा होता है कि आखिर इसकी असली जड़ क्या है और क्या सरकार की कोशिशें सही दिशा में हो पा रही है? इस विकट समस्या से मुक्ति के लिये ठोस कदम उठाने होंगे। सिर्फ दिल्ली ही नहीं, देश के कई शहर वायु प्रदूषण की गंभीर मार झेलते हैं। इसका पता तब ज्यादा चलता है जब वैश्विक पर्यावरण संस्थान अपने वायु प्रदूषण सूचकांक में शहरों की स्थिति को बताते हैं। पिछले कई सालों से दुनिया के पहले बीस प्रदूषित शहरों में भारत के कई शहर दर्ज होते रहे हैं। जाहिर है, हम वायु प्रदूषण के दिनोंदिन गहराते संकट से निपट पाने में तो कामयाब हो नहीं पा रहे, बल्कि जानते-बूझते ऐसे काम करने में जरा नहीं हिचकिचा रहे जो हवा को जहरीला बना रहे हैं।

चिंता की बात यह है कि मृत्यु दर का सबसे बड़ा कारण वायु प्रदूषण ही है। उसके बाद उच्च रक्तचाप, कुपोषण तथा तंबाकू सेवन से होने वाली मौतों का नंबर आता है। दरअसल, गरीबी और आर्थिक असमानता के चलते बड़ी आबादी येन-केन- प्रकारेण जीविका उपार्जन में लगी रहती है, उसकी प्राथमिकता प्रदूषण से बचाव के बजाय रोटी ही है। वहीं ढुलमुल कानूनों, तंत्र की काहिली तथा जागरूकता के अभाव में वायु प्रदूषण रोकने की गंभीर पहल नहीं हो पाती। मुश्किल यह है कि वायुमंडल के घनीभूत होने की वजह से जमीन से उठने वाली धूल, पराली की धुंध और वाहनों से निकलने वाले धुएं के छंटने की गुंजाइश नहीं बन पाती है। नतीजन, वायु में सूक्ष्म जहरीले तत्व घुलने लगते हैं और प्रदूषण के गहराने की दृष्टि से इसे खतरनाक माना जाता है। हमारा राष्ट्र एवं दिल्ली सहित अन्य राज्यों की सरकारें नैतिक, आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक एवं व्यक्तिगत सभी क्षेत्रों में मनोबल के दिवालिएपन के कगार पर खड़ी है। देश में वायु प्रदूषण से होने वाली मौतों के हेल्थ इफेक्ट्स इंस्टीट्यूट के आंकड़े इस वास्तविकता को उजागर करते हुए प्रदूषण की समस्या का कोई दीर्घकालिक और ठोस हल निकालने के लिये चेता रहे हैं। प्रदूषण को कम करने के लिए लोगों को जागरूक करना ज़रूरी है, विचार और योजनाएं बनानी चाहिए।

भोपाल गैस त्रासदी

गैस त्रासदी की याद: पत्तों-सी मृत्यु

ध्रुव शुक्ल

लेखक साहित्यकार हैं।

दो दिसंबर 1984 की उस ठण्डी रात हमारे चारों तरफ़ ज़हर की अदृश्य दीवारें थीं। इन दीवारों में ज़हरीली खिड़कियां और दरवाजे थे, ज़हर की छत थी। हम सारी खिड़कियां, दरवाजे और दीवारें फांदकर ऐसी जगह खोज रहे थे, जहां हमारी चिरपरिचित साँस हो।

देह पर मृत्यु का असहज स्पर्श। यह स्पर्श इतना भारी था कि गृहस्थी के साथ सारे सपने पीछे छूटते जा रहे थे। अपने शहर में विस्थापितों की तरह भागते लोगों के मन में उस एक साँस की कामना थी जो ज़िन्दगी को बहाल कर सके। वह साँस हमें दूर शहर के कोनों में दुबकी मिली। एक खदेड़ी हुई बदहवास साँस जो हमारे इंतज़ार में बेकरार थी। वह अब भी बेकरार है उन लोगों के लिए जो उस साँस के करीब पहुँच नहीं पाये।

शहर को अचानक जैसे किसी पतझर ने घेर लिया हो।

वृक्षों की पत्तियां ज़हर से काली-पीली होकर टहनियों से टूटकर गिरने लगीं। शहर के अस्पतालों, कब्रिस्तानों और श्मशानों में ज़िन्दगी सूखी पत्तियों-सी बिखर गयी। पत्तियों की ऐसी मौत पहले कभी नहीं देखी थी। शहर के वृक्षों की शाखें पत्रहीन होने लगीं। वे रेखा चित्रों-से दीखने लगे। फिर उन पर कोंपलें ही नहीं आयीं।

शायद किसी को याद रह गयी हो उन पत्तों की मृत्यु, जिन्हें ज़हरीली हवा न जाने कहाँ उड़ा ले गयी। राज्य व्यवस्था ने दूर देश के अजनबियों को ज़हर की खेती करने का पट्टा दिया था और वह जीवन की जिम्मेदारी के प्रति बेपरवाह थी। उसने मुरझाये जीवन को मौत के मुआवजे में बदल दिया। चालीस साल बाद भी वह ज़हर भोपाल की आब-ओ-हवा में घुला हुआ है। उसके घेरे में फँसे लोग आज भी अपनी बची-खुची सांसों से उस ज़हर के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाते रहते हैं.....

भोपाल गैस त्रासदी की 40वीं बरसी पर विशेष

योगेश कुमार गोयल

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

40 साल बाद भी हरे हैं गैस त्रासदी पीड़ितों के जख्म

यह हादसा पत्थर दिल इंसान को भी इस कदर विचलित कर देने वाला था कि हादसे में मारे गए लोगों को सामूहिक रूप से दफनाया गया और उनका अंतिम संस्कार किया गया जबकि करीब दो हजार जानवरों के शवों को विसर्जित करना पड़ा और आसपास के सभी पेड़ बंजर हो गए थे। एक शोध में यह तथ्य सामने आया है कि भोपाल गैस पीड़ितों की बस्ती में रहने वालों को दूसरे क्षेत्रों में रहने वालों की तुलना में किडनी, गले तथा फेफड़ों का कैंसर 10 गुना ज्यादा है। इसके अलावा इस बस्ती में टीबी तथा पक्षाघात के मरीजों की संख्या भी बहुत ज्यादा है। इस गैस त्रासदी में पांच लाख से भी ज्यादा लोग प्रभावित हुए थे, जिनमें से हजारों लोगों की मौत तो मौके पर ही हो गई थी और जो जिंदा बचे, वे विभिन्न गंभीर बीमारियों के शिकार होकर जीवित रहते हुए भी पल-पल मरने को विवश हैं। इनमें से बहुत से लोग कैंसर सहित बहुत सी गंभीर बीमारियों से जूझ रहे हैं और घटना के 40 साल बाद भी इस गैस त्रासदी के दुष्प्रभाव खत्म नहीं हो रहे हैं। विषैली गैस के सम्पर्क में आने वाले लोगों के परिवारों में इतने वर्षों बाद भी शारीरिक और मानसिक रूप से अक्षम बच्चे जन्म ले रहे हैं।

मध्य प्रदेश के भोपाल शहर में 1984 में हुई भयानक गैस त्रासदी की घटना को पूरी दुनिया के औद्योगिक इतिहास की सबसे बड़ी और हृदयविदारक औद्योगिक दुर्घटना माना जाता है। 3 दिसम्बर 1984 को आधी रात के बाद यूनियन कार्बाइड इंडिया लिमिटेड (यूसीआईएल) से निकली जहरीली गैस 'मिथाइल आइसोसाइनाइट' ने हजारों लोगों की जान ली थी। उस जानलेवा त्रासदी से लाखों लोग प्रभावित हुए थे। दुर्घटना के चंद घंटों के भीतर ही कई हजार लोग मारे गए थे और मौतों का यह दिल दहलाने वाला सिलसिला उस रात से शुरू होकर कई वर्षों तक अनवरत चलता रहा। भोपाल गैस कांड को 40 साल बीत जाने के बाद भी इसका असर पूरी तरह खत्म नहीं हुआ है और इस त्रासदी से पीड़ित होने वालों के जख्म आज भी हरे हैं। यह हादसा पत्थर दिल इंसान को भी इस कदर विचलित कर देने वाला था कि हादसे में मारे गए लोगों को सामूहिक रूप से दफनाया गया और उनका अंतिम संस्कार किया गया जबकि करीब दो हजार जानवरों के शवों को विसर्जित करना पड़ा और आसपास के सभी पेड़ बंजर हो गए थे। एक शोध में यह तथ्य सामने आया है कि भोपाल गैस पीड़ितों की बस्ती में रहने वालों को दूसरे क्षेत्रों में रहने वालों की तुलना में किडनी, गले तथा फेफड़ों का कैंसर 10 गुना ज्यादा है। इसके अलावा इस बस्ती में टीबी तथा पक्षाघात के मरीजों की संख्या भी बहुत ज्यादा है। इस गैस त्रासदी में पांच लाख से भी ज्यादा लोग प्रभावित हुए थे, जिनमें से हजारों लोगों की मौत तो मौके पर ही हो गई थी और जो जिंदा बचे, वे विभिन्न गंभीर बीमारियों के शिकार होकर जीवित रहते हुए भी पल-पल मरने को विवश हैं। इनमें से बहुत से लोग कैंसर सहित बहुत सी गंभीर बीमारियों से जूझ रहे हैं और घटना के 40 साल बाद भी इस गैस त्रासदी के दुष्प्रभाव खत्म नहीं हो रहे हैं। विषैली गैस के सम्पर्क में आने वाले लोगों के परिवारों में इतने वर्षों बाद भी शारीरिक और मानसिक रूप से अक्षम बच्चे जन्म ले रहे हैं। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक गैस त्रासदी से 3787 की मौत हुई और गैस से करीब

558125 लोग प्रभावित हुए थे। हालांकि कई एनजीओ का दावा रहा है कि मौत का यह आंकड़ा 10 से 15 हजार के बीच था तथा बहुत सारे लोग अनेक तरह की शारीरिक अपंगता से लेकर अंधेपन के भी शिकार हुए। विभिन्न अनुमानों के मुताबिक करीब 8 हजार लोगों की मौत तो दो सप्ताह के भीतर ही हो गई थी जबकि करीब 8 हजार अन्य लोग रिसी हुई गैस से फैली संबंधित बीमारियों के चलते मारे गए थे। हजारों लोगों के लिए काल बने और लाखों लोगों की जिंदगी बर्बाद कर देने वाले भोपाल में यूसीआईएल के कारखाने का निर्माण वर्ष 1969 में हुआ था, जहां 'मिथाइल आइसोसाइनाइट' (मिक) नामक पदार्थ से कीटनाशक बनाने की प्रक्रिया शुरू की गई थी। वर्ष 1979 में मिथाइल आइसोसाइनाइट के उत्पादन के लिए एक नया कारखाना खोला गया लेकिन भोपाल गैस त्रासदी की घटना के समय तक उस कारखाने में सुरक्षा उपकरण ठीक हालात में नहीं थे और वहां सुरक्षा के अन्य मानकों का पालन भी नहीं किया जा रहा था। 3 दिसम्बर 1984 को इसी कार्बाइड फैक्टरी से करीब 40 टन गैस का रिसाव हुआ था। गैस के रिसाव के उपरांत गैस के बादल में फोस्जीन, हाइड्रोजन सायनाइड, कार्बन मोनो-ऑक्साइड, हाइड्रोजन क्लोराइड इत्यादि के अवशेष भी पाए गए थे। जिन लोगों के फैंफड़ों में सांस के जरिये गैस की ज्यादा मात्रा पहुंच गई, वे सुबह देखने के लिए जीवित ही नहीं बचे। बहुत सारे लोग ऐसे थे, जिन्होंने नींद में ही अपनी आखिरी सांस ली। लोगों को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि आखिर यह सब हो क्या रहा है? गैस के कारण लोगों की आंखों और सांस लेने में परेशानी हो रही थी, सिर चकरा रहा था, बहुतों को कुछ दिखाई ही नहीं दे रहा था। हजारों लोगों के एकाएक अस्पतालों में पहुंचने से डॉक्टरों को भी कुछ समझ नहीं आ रहा था कि जहरीली गैस से पीड़ित इतने सारे लोगों का किस प्रकार और क्या इलाज किया जाए क्योंकि उनके पास भी मिक गैस से पीड़ित लोगों के इलाज का कोई अनुभव नहीं था। वे इस रासायनिक आपदा के उपचार के लिए पूर्ण रूप से तैयार नहीं थे।

भले ही गैस रिसाव के करीब आठ घंटे बाद भोपाल को जहरीली गैस के असर से मुक्त मान लिया गया था किन्तु हकीकत यह है कि इस गैस त्रासदी के 40 वर्षों बाद भी भोपाल उस हादसे से उबर नहीं पाया है। हादसे से पर्यावरण को भी ऐसी क्षति पहुंची, जिसकी भरपाई सरकारें आज तक नहीं कर पाई हैं। सरकारों का इस पूरे मामले में रूख संवेदनहीन ही रहा है। कई रिपोर्टों में इस क्षेत्र में भूजल प्रदूषण की पुष्टि होने के बाद भी सरकार द्वारा जमीन में दफन जहरीले कचरे के निष्पादन की कोई ठोस नीति नहीं बनाई गई। दरअसल इस भयावह गैस त्रासदी के बाद हजारों टन खतरनाक अपशिष्ट भूमिगत दफनाया गया था और सरकारों ने भी स्वीकार किया है कि यह क्षेत्र दूषित है। विभिन्न रिपोर्टों में बताया जाता रहा कि यूनियन कार्बाइड संयंत्र के आसपास की 32 बस्तियों का भूजल प्रदूषित है और यह सरकारी संवेदनहीनता की पराकाष्ठा ही रही कि गैस पीड़ित वर्ष 2014 तक इसी प्रदूषित भूजल को पीते रहे। हालांकि वर्ष 2014 में इन क्षेत्रों में पानी की पाइपलाइन डाली गई लेकिन तब तक जहरीले रसायन लोगों के शरीर में गहराई तक घुल चुके थे।

पाढर में अभिमुखीकरण कार्यक्रम संपन्न

बैतूल। बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ.अनंत सक्सेना के आदेश के परिपालन में एनएसएस के विस्तार हेतु नर्सिंग कॉलेज पाढ़र में अभिमुखीकरण कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम प्राचार्य हरिओम कुमार, जिला संगठक डॉ.सुखदेव डोंगरे एवं भीमपुर के कार्यक्रम अधिकारी प्रो.शंकर सातनकर की उपस्थिति में आयोजित किया गया। जिसमें डॉ.सुखदेव डोंगरे ने रासेयो के उद्देश्य, सिद्धांत, प्रतीक चिन्ह, प्रतीक पुरुष, 10+2 विद्यालय में ए प्रमाण पत्र, महाविद्यालय में बी एवं सी प्रमाण पत्र प्रतिवर्ष 120 कार्य घंटे, विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को समाज सेवा सेवा से जोडऩा नेतृत्व के गुण विकसित करना, बोलने की कला, परेड, योग, ध्यान आदि के विषय में विस्तारपूर्वक समझाया। प्रो.शंकर सातनकर ने बताया कि एनएसएस व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास करता है। अभिमुखीकरण कार्यक्रम में 10 शिक्षकों एवं 105 विद्यार्थियों ने सहभागिता की। कार्यक्रम का संचालन आशीष दुन ने और आभार हरिओत कुमार ने किया व्यक्त किया।

शोभाराम को पीएचडी अवार्ड

बैतूल। जेएच कॉलेज में प्राणी शास्त्र विभाग के शोधार्थी शोभाराम पाटील को बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल से पीएचडी अवार्ड हुई है। इन्होने पीएचडी शोध विषय फिश डायवर्सिटीस इन सापना जलाशय (रिसवायर) विथ फीशिकोकेमिकल एनालासिस फेक्टर पर की है। श्री पाटिल ने यह शोघ कार्य जेएच कॉलेज के डॉ.सुखदेव डोंगरे के मार्गदर्शन में पूर्ण किया है। आमजन के कल्याण के लिए बताया। डॉ.बीडी नागले, डॉ.मनोहर गावंडे, प्रो.संजय विश्वकर्मा, डॉ.कमलेश अहिरवार, प्रो.प्रतिभा चौरे, प्रो.किरण खातरकर, प्रो.शंकर सातनकर, डॉ.संदीप राने, डॉ.रामचवन्द्र गुजरे, डॉ.राजेश हनोते, डॉ.विजय डढोरे व कॉलेज स्टाफ ने श्री पाटिल को बधाई दी है।

5 मवेशियों का शिकार, ग्रामीणों में दहशत

बैतूल। चोपना पुलिस थाना क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले ग्राम पूंजी में हिंसक प्राणी ने एक साथ पांच मवेशियों का शिकार किया। जिससे ग्रामीणों सहित पशु पालकों में दहशत व्याप्त हो गई है। सूचना मिलने पर वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची। टीम को पगमार्क भी मिलते हैं। टीम द्वारा इन पगमार्कों की जांच-पड़ताल की जा रही है। प्राप्त जानकारी के अनुसार रविवार सुबह गाँव के पास खेत में दिलीप विश्वास के 3 मवेशियों के मृत पाए जाने एवं उनके गले में जंगली जानवरों के दाँत के निशान दिखाई दिये। आसपास के झाडियों में ढूंढने पर 2 और मवेशी के शव मिले। जिसकी सूचना वन विभाग की टीम को दी गई। टीम ने मौके का मुआयना किया है। टीम को मौके से मवेशियों को घसीटते ले जाने के निशान के साथ-साथ हिंसक प्राणी के पगमार्क भी मिले हैं। वन विभाग ने शिकार हुए मवेशियों के पास नाइट विजन कैमरे भी लगा दिए हैं, ताकि यह स्पष्ट हो सके कि अंततः शिकार किस हिंसक वन्य प्राणी ने किया है। इधर मवेशियों के शिकार के बाद ग्रामीणों में दहशत व्याप्त हो गई है। वन विभाग के अधिकारियों ने ग्रामीणों को सतर्क रहते हुए झाडियों में नहीं जाने की समझाईश दी है। इसके साथ ही ग्रामीणों को शाम या रात के समय घर से नहीं निकलने का भी कहा है। एसडीओ अजय वाहने का कहना है कि अभी जानकारी एकत्रित की जा रही है, जैसी जानकारी मिलती है वैसे ही अवगत करा दी जाएगी। पशु पालक को मुआवजा भी दिया जाएगा।

अनियंत्रित होकर पुलिया में लटकी बस

बैतूल। एक निजी कंपनी की बस रविवार रात बरेठा घाट के पास पुलिया पर हादसे का शिकार होते-होते बची। जिस समय यह घटना हुई, उस वक्त बस में करीब 25 यात्री सवार थे। उन्होंने इमरजेंसी डोर से बाहर निकलकर अपनी जान बचाई। बस बैतूल से नर्मदापुरम के लिए रात में निकली थी, तभी बरेठा घाट में बस ड्राइवर ने सामने से आ रही गाड़ी को ओवरटेक करते वक्त नियंत्रण खो दिया, जिससे बस पुलिया पर लटक गई। यात्रियों ने इमरजेंसी डोर से बाहर निकलकर अपनी जान बचाई। घटना के बाद यात्रियों को दूसरी बस से उनके स्थान तक पहुंचाया गया। बताया जा रहा है कि रात का समय होने के कारण रास्ता साफ नहीं दिख रहा था। जब बस नेशनल हाईवे के चौड़े रास्ते से संकरे रास्ते पर आई, तब यह हादसा हुआ।

डॉ.सिंह अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी कोलंबो में सम्मानित हुए

बैतूल। श्रीलंका की राजनाधी कोलंबो में विगत दिनों अंतर्राष्टीय प्रदर्शनी संपन्न हुई। जिसमें पूरे विश्व के कलाकार ने हिस्सा लिया। प्रदर्शनी में मूर्तिकला और चित्रकला विद्या में डॉ.कीर्ति सिंह ठाकुर को सम्मानित किया गया। बैतूल निवासी और वर्तमान में शासकीय गीतांजली कॉलेज भोपाल में आर्ट टीचर डॉ.सिंह को चित्रकला व मूर्तिकला ग्रुप प्रदर्शनी में हिस्सा लिया था। कीर्ति ने भोपाल से रिलेशन टू नेचर पर आधारित दो पेंटिंग एवं एक मूर्ति कोलंबो लें गए थे। स्थानीय कला प्रेमियों एवं ख्याति प्राप्त कलाकारों ने कीर्ति के उत्कृष्ट कार्य को देखते हुए लियोनेल वेंडट आर्ट सेंटर द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि अभी तक डॉ.कीर्ति को देश में साथ ही दुबई, इंडोनेशिया बाली ओमान, मारीशस, श्रीलंका आदि देशों में अवार्ड मिल चुके हैं। डॉ.सिंह ने बैतूल जिले के लिए अनेकों महापुरुषों की मूर्तियां निशुल्क बनाई हैं। डॉ.सिंह कहते हैं कि बैतूल उनके हृदय में बसता है। इनकी इस उपलब्धि पर जिले के कलाप्रेमियों ने बधाई दी है।

सडक़ निर्माण में देरी, व्यापारियों में बढ़ रही नाराजगी

डेढ़ साल में भी पूरी नहीं हो सकी सडक़, धूल से जनता परेशान

संजय द्विवेदी, बैतूल। मुल्ला पेट्रोल पंप से थाना कोतवाली चौक तक बनने वाली सडक़ अभी तक अधूरी ही है। मुल्ला पेट्रोल पंप से कोतवाली चौक तक सडक़ निर्माण की घोषणा हुए लगभग ड़ेढ साल बीत चुका है और विधानसभा चुनाव के समय भी इस रोड का मुद्दा जनचर्चा का विषय रहा था। यूं तो पिछले कुछ दिनों से इस रोड पर व्यापारियों के विरोध के बाद नगरपालिका द्वारा टैंकरों से रोजाना सुबह तराई तो की जा रही है। लेकिन यह केवल औपचारिक मात्र ही सिद्ध हो रही है, क्योंकि 1-2 घंटे में ही पुनः सडक़ सूखने से धूल उडऩा शुरू हो जाती है। जिससे शहर की इस सबसे व्यस्त रोड पर प्रदूषण फैलने से राहगीरों एवं व्यापारियों को रोजाना समस्याओं का सामना करना पड़ता है। खासकर दुकानदार नगरपालिका की इस रस्म अदायगी से खासे परेशान है। इसके अलावा इस रोड के एक भाग मुल्ला पेट्रोल पंप कोठीबाज़ार से बस स्टैंड तक, सडक़ के दोनों ओर पोल शिफ्टिंग करके सडक़ तो बनाई गई। परंतु यहां नाली एवं फुटपाथ का काम अधूरा ही है। इसके बाद वाले भाग बस स्टैंड से कोतवाली चौक तक सडक़ का निर्माण अभी तक नहीं हुआ है। केवल गडढ़ों को भरने का काम आज सोमवार से शुरू किया जाना नपा के अधिकारीयों द्वारा बताया गया। यहां के व्यापारियों का कहना है कि आज भी सिर्फ तराई का काम ही हुआ है, इस रोड के गडडो पर पेचवर्क का कार्य नहीं किया गया, अब देखना यह है कि स्थिति जस की तस ही बन रहती है या इस रोड पर व्यापारियों और राहगीरों को प्रदूषण एवं धूल उडऩे से मुक्ति मिलती है। व्यापारियों का कहना है कि धूल-डस्ट से दुकान पर बैठना दुश्वार हो जाता है, दुकान के सामने लगे कांच पर एवं बाहर खड़े वाहनों पर धूल की मोटी परत चढ़ जाती है।

पोल शिफ्टिंग नहीं होने से भी हो रही देरी- सडक़ निर्माण में देरी को लेकर नगरपालिका सीएमओ सतीश मटसेनिया का कहना है कि एमपीईबी के सुपरविजन में काम कर रहे पोल शिफ्टिंग के ठेकेदार द्वारा अनावश्यक देरी की जा रही है। अभी तक पोल शिफ्टिंग का काम पूरा नहीं होने से सडक़ निर्माण का काम नहीं कर पा रहे है। जिसका खामियाजा आमजनता को भुगतना पड़ रहा है। इस मामले में एमपीईबी एवं नगरपालिका पोल शिफ्टिंग में देरी के लिए एक-दूसरे पर टालामटोली कर रहे प्रतीत हो रहे है। जिसके कारण आमजनता को सडक़ पर धूल-डस्ट और गड्ढों का सामना करना पड़ रहा, लेकिन कोई जिम्मेदारी नही ले रहा है। इस रोड पर दुकान चलाने वाले व्यापारियों का कहना है कि सडक़ बनाने की घोषणा हुए तो डेढ़ साल से ज्यादा समय बीत चुका है, लेकिन अभी तक सडक़ बनने की कोई स्म्भाना सम्भावना नजर नहीं आ रही है। सडक़ पर गड्ढे होने से जहां वाहन चालक परेशान होते है, वहीं गड्ढो में पानी जमा होने से यह पानी राहगीरों पर भी उछलता है जिससे आए दिन विवाद की स्थिति बनती है।

प्राक्कलन में बार-बार बदलाव - करीब डेढ़ करोड़ रुपये की लागत से कोतवाली थाना तक सडक़ निर्माण के प्राक्कलन में बार-बार बदलाव करने से भी कार्य नहीं हो पा रहा है। इस रोड के व्यापारियों का कहना है कि सडक़ का निर्माण नहीं हो पा रहा है तो नगर पालिका के अधिकारियों एवं जनप्रतिनिधियों को ठेका निरस्त कर देना चाहिए। उनका कहना है कि सडक़ का निर्माण कार्य बिना अनावश्यक विलम्ब किए व्यवस्थित तरीके से होगा, तो हम सभी इसमें पूरा सहयोग करेगे, ताकि हमे रोज-रोज की इस समस्या से परमानेंट छुटकारा मिल सके।

धूल से बीमार हो सकते है लोग- चिकित्सकों का कहना है कि धूल के कणों से कई घातक बीमारियां जन्म लेती हैं। आंखों में इंफेक्शन, हृदय रोग, फेफड़ों से संबंधित रोग, सांस संबंधित रोग होने की आशंका रहती है। खुले में बिकने वाले खाद्य पदार्थों पर भी धूल के कण जमने से ये घातक बीमारी का कारण बन सकते हैं। आंखों की रोशनी धुंधली हो जाती है। आंखों में खुजली, गले में खराश और त्वचा पर चकत्ते होने लगते हैं। बुजुर्गों के हृदय पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। सांस में कठिनाई आने पर हार्ट अटैक की आशंका बनी रहती है। इसके अलावा रोड पर पानी जमा होने से भी कई बीमारियों का सामना करना पड़ता है।

इनका कहना है -

मुल्ला पेट्रोल पंप से कोतवाली तक रोड पर पोल शिफ्टिंग न होने से सडक़ निर्माण में अनावश्यक देरी हो रही है। पोल शिफ्टिंग का काम जल्द से जल्द पूरा कर लिया जाएगा। एमपीईबी के सुपरविजन में पोल शिफ्टिंग का कार्य कर रहे भोपाल के ठेकेदार को इसके लिए अल्टीमेटम भी दे दिया गया है। अभी इस रोड पर धूल से बचने के लिए रोजाना सुबह तराई की जा रही है। इसके अलावा आज से इस रोड पर जहां-जहां बड़े- बड़े गड्ढे हो गए है, वहां पेंचवर्क का कार्य भी चालू कर दिया गया है। लल्ली चौक से थाना कोतवाली चौक तक अगले माह जनवरी के शुरुआत से 22 मीटर चौड़ी सीसी रोड का निर्माण कार्य शुरू कर दिया जाएगा। इसके लिए पीडब्ल्यूडी के साथ समन्वय स्थापित कर कार्य योजना भी तैयार की जा चुकी है।

- सतीश मटसेनिया, सीएमओ नगरपालिका, बैतूल

-- पोल शिफ्टिंग का काम नपा के ठेकेदार को करना है। 5 प्रतिशत सुपरविजन में स्टीमेट सेंक्शन हुआ है। उन्होंने पैसा भी भर दिया है और हमने वर्क आर्डर भी जारी कर दिया है। अब पोल शिफ्टिंग की कार्रवाही नगरपालिका को ठेकेदार से करवानी चाहिए।

- भूपेन्द्र सिंह बघेल, कार्यपालन अभियंता, दक्षिण संभाग, बैतूल

आरडी स्कूल में डिस्ट्रिक्ट लेवल इंटर स्कूल कॉम्पिटिशन आयोजित

प्रतिस्पर्धा की भावना आगे बढऩे से होती है मददगार-ऋतु खण्डेलवाल

बैतूल। क्वालिटी एजुकेशन के लिए ख्यातिनाम आरडी पब्लिक स्कूल बैतूल विद्यार्थियों को कॅरियर गाइडेंस देने के साथ ही सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से मंच प्रदान कर उनकी प्रतिभा को निखारने के लिए महती भूमिका अदा कर रहा है। आरडी पब्लिक स्कूल बैतूल की फाउन्डर डायरेक्टर श्रीमती ऋतु खण्डेलवाल के मार्गदर्शन में आयोजित डिस्ट्रिक्ट लेवल इंटर स्कूल डांस फेस्ट में दर्जन भर स्कूलों के दो सैकड़ा विद्यार्थियों ने सहभागिता कर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। इसी के साथ ही आरडी किड्स का डांस फेस्ट भी आयोजित हुआ। बच्चों के साथ उनकी मदर्स ने भी डांस की प्रस्तुति दी। जिला स्तरीय डांस फेस्ट कार्यक्रम में लगभग ढाई हजार पालक, विद्यार्थी, शिक्षक सहित अन्य लोग शामिल हुए। कार्यक्रम में बच्चों ने फूड स्टाल और गेम जोन का भी लुफ्त उठाया। डिस्ट्रिक्ट लेबल इंटर स्कूल डांस फेस्ट को संबोधित करते हुए आरडी स्कूल की फाउंडर-डायरेक्टर श्रीमती ऋतु खण्डेलवाल ने कहा कि उच्च गुणवत्ता की पढाई के साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों को मंच प्रदान करना हमारी पहचान है। अलग-अलग स्कूलों के विद्यार्थियों को एक मंच पर लाकर उनकी प्रतिभा को निखारना इस कार्यक्रम का उद्देश्य है। इससे विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्धा की भावना आएगी। जो उन्हें आगे बढाने में मददगार साबित होगी। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों के बहुमुखी विकास के लिए पढाई के साथ ही कॅरियर गाइडेंस, खेल,

कला एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में सहभागिता भी जरूरी है।

डांस में आरडी-द्रोणा पब्लिक स्कूल रहे प्रथम- आरडी पब्लिक स्कूल बैतूल में आयोजित डिस्ट्रिक्ट लेवल इंटरस्कूल डांस फेस्ट में एलएफएस स्कूल बैतूल, आरडी पब्लिक स्कूल मुलताई, आरडी पब्लिक स्कूल बैतूल, द्रोणा पब्लिक स्कूल, सीएम राइज स्कूल, संजीवनी स्कूल, मानसरोवर स्कूल, विद्या आनंद स्कूल आठनेर, ज्ञानदीप स्कूल, श्री श्री ज्ञान मंदिर, पोद्दार स्कूल के दो सैकडा विद्यार्थियों ने डांस-गाने कॉम्पीटीशन में सहभागिता की। डांस में आरडी पब्लिक स्कूल बैतूल एवं द्रोणा पब्लिक स्कूल बैतूल संयुक्त रूप से प्रथम रहे। श्री श्री ज्ञान मंदिर ने द्वितीय एवं ज्ञानदीप स्कूल ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। गाने में आरडी पब्लिक स्कूल बैतूल ने प्रथम, आरडी पब्लिक स्कूल मुलताई ने द्वितीय तथा एलएफएस स्कूल बैतूल ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। सभी स्कूलो को सांत्वना पुरूस्कार प्रदान किए गए।

आरडी किड्स में भी रही डांस फेस्ट की धूम- आरडी किड्स बैतूल में भी डांस फेस्ट की धूम रही। डांस फेस्ट में नर्सरी, केजी-1, केजी-2 के लगभग एक सैकडा विद्यार्थियों ने डांस की प्रस्तुति दी। साथ ही बच्चों की मदर्स ने भी डांस फेस्ट में सहभागिता की। डांस फेस्ट में केजी-1 से नित्या धुर्वे प्रथम, अर्निका सोनी द्वितीय, ध्वनि साहू तृतीय रहे। केजी-2 से काशवी वागद्रे प्रथम, कनिष्का घोडकी तृतीय, नायशा बर्डे तृतीय तथा नर्सरी से निष्ठा लोटे प्रथम, स्वर्णिका बिसेन द्वितीय एवं वाराही राठौर तृतीय स्थान पर रहे। डांस करने वाली मदर्स में प्रीति सतीजा ने प्रथम, सुरभि भंडारी ने द्वितीय तथा ज्योति तावड़े ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

शासकीय कॉलेज में हुआ संगोष्ठी का आयोजन

शाहपुर। शासकीय कॉलेज शाहपुर में राष्ट्रीय सेवा योजना और रेड रिबन के संयुक्त तत्वाधान में विश्व एड्स दिवस के अवसर पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र शाहपुर के टेक्निकल सुपरवाइजर डॉ. प्रणय नायक एवं साथिया वेलफेयर सोसाइटी के जितेंद्र प्रजापति मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। इस अवसर पर डॉ. प्रणय नायक ने एड्स रोगी और एड्स से बचाव हेतु आवश्यक जानकारी देते हुए कहा कि समाज द्वारा रोगी को हीन भावना से ना देखा जाए। बल्कि उसकी पारिवारिक एवं सामाजिक कार्यों में सहभागिता सुनिश्चित की जाये तथा परिवारजनो को उसके उपचार के साथ साथ उसके खान पान का भी समुचित ध्यान रखना चाहिए। डा. नायक ने बताया कि शरीर में एचआईवी वायरस का संक्रमण होने पर शरीर की रोग प्रतिरोधी क्षमता क्षीण हो जाती है और शरीर के सभी अंग अपना कार्य कम करना आरम्भ कर देते हैं। विशेष कर सर्दी ?काम, बुखार, ठंड लगना, शरीर में दर्द होना, त्वचा पर दाने निकलना, सिर दर्द, गले में खराश होना, वमन, जी मिचलाना, बेचौनी, पेट खराब रहना, थकावट व अत्यधिक कमजोरी, रात में सोते हुए पसीना आना, वजन कम होना आदि लक्षण संक्रमण के एक माह पश्चात प्रकट हो जाते हैं। जितेंद्र प्रजापति ने अपने व्याख्यान में कहा की एचआईवी (ह्यूमन इम्यूनोडेफिशिएंसी वायरस) संक्रमण से पीड़ित लोगों में टीबी (तपेदिक) का खतरा सामान्य व्यक्तियों की तुलना में 20 गुना अधिक होता है। कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली के कारण ये दोनों बीमारियां एक साथ गंभीर जटिलताएं उत्पन्न कर सकती हैं डॉ ओम झा ने कहा की एचआईवी होने पर व्यायाम आपके स्वास्थ्य की रक्षा करने का एक अच्छा तरीका है। इससे आपके तनाव को कम किया जा सकता है, आपके मसल्स और हड्डियों को सुरक्षित रखा जा सकता है।प्रो सी.के. वाघमारे द्वारा अपने व्याख्यान में कहा की लोगों में जागरूकता से ही एड्स में कमी आएगी। उन्होंने एचआईवी के कारण एवं एचआईवी से हो रही मृत्युदर को कैसे कम किया जाए, इस पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन डॉ ज्योति वर्मा एवं आभार प्रदर्शन प्रो आजाबराव इवने द्वारा किया गया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से डॉ संजय बाणकर, प्रो नीतू मोहरे,डॉ सुभाष वर्मा, डॉ सचिन नागले,डॉ देवेंद्र रोडगे सहित विधार्थी उपस्थित थे।

बिट्टू नागले हत्याकांड के मुख्य आरोपी को सिवनी से किया गिरफ्तार

बैतूल। हत्या कर शव को नदी में फेंकने वाले मुख्य आरोपी को गंज पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। इस मामले में चार नाबालिग आरोपी पहले ही पकड़े जा चुके है। बिट्टू की पिटाई का सीसीटीवी फुटेज सामने आने के बाद इस हत्याकांड का पिछले दिनों खुलासा हुआ था। पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार 7 नवंबर को गणेश नागले ने थाना गंज में अपने भाई अजय उर्फ बिट्टू नागले के लापता होने की सूचना दी। पुलिस ने गुमशुदगी दर्ज कर जांच शुरू की थी। इसी बीच दो दिन बाद 9 नवंबर को माचना नदी में एक अज्ञात शव मिलने की सूचना पर शव की पहचान अजय उर्फ बिट्टू नागले के रूप में की गई। जांच में पाया गया कि मृतक के सिर और जबड़े में गंभीर चोट आई थी, जिससे उसकी हत्या की पुष्टि हुई। घटनास्थल से मिले साक्ष्य और सीसीटीवी फुटेज के आधार पर पांच आरोपियों की पहचान हुई, जिनमें आशीष धुर्वे, अजय डेहरिया और चार नाबालिग शामिल थे। पूर्व में आशीष धुर्वे और चार नाबालिगों को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया जा चुका है। मुख्य आरोपी अजय डेहरिया घटना के बाद से फरार था। जिसकी गिरफ्तारी के लिए एएसपी कमला जोशी और एसडीओपी शालिनी परस्ते के सुपरविजन में गठित टीम को सूचना मिली कि आरोपी सिवनी जिले में छिपा हुआ है। थाना गंज की टीम ने सिवनी जाकर आरोपी को गिरफ्तार किया और घटना में प्रयुक्त ऑटो रिक्शा व मोटरसाइकिल बरामद कर जब्त की।

सुबह-सुबह, वार्ड-वार्ड घूम रहे हैं योग साधक

तीन दिवसीय योग-आरोग्य शिविर के लिए जगा रहे अलख

बैतूल। इस भारी ठंड में जब लोग सुबह उठ नहीं पाते हैं तब योग की अलख जगाने योग साधक बैतूल के वार्डो में रैली निकालकर घूम रहे हैं। योग रैली के पहले ओपन आडिटोरियम में योग भी होता है। दरअसल आगामी 13, 14 और 15 दिसंबर को तीन दिवसीय योग-आरोग्य शिविर बैतूल के लाल बहादुर शास्त्री स्टेडियम और शिवाजी ओपन ऑडिटोरियम में होने जा रहा है। योग-आरोग्य शिविर के संयोजक सुनील व्दिवेदी ने जिले के सभी लोगों से अपील की है कि इस निशुल्क शिविर में शामिल होकर स्वास्थ्य लाभ कमाएं और पीड़ित लोगों को स्वास्थ्य लाभ दिलवाएं। इस संबंध में भारत स्वाभिमान न्यास और पंतजलि योग समिति बैतूल के जिला प्रभारी सुनील कुबड़े और युवा भारत के जिला प्रभारी हितेश पटेल ने बताया कि योग का महाकुंभ का आयोजन लंबे समय बाद बैतूल में होने जा रहा है। इसमें पंतजलि के मुख्य केन्द्रीय प्रभारी और स्वामी रामदेव के अतिप्रिय शिष्य और देशभर में युवासंत के रूप में लोकप्रिय स्वामी डा परमार्थदेव के साथ प्रदेश भर के योगी विशेष रूप से मौजूद रहेंगे। स्टेडियम में जहां सुबह 6 से 8 तक योग शिविर होगा। वहीं सुबह 9 से शाम 5 बजे तक आडिटोरियम में आरोग्य चिकित्सा शिविर लगेगा जिसमें आयुर्वेद, पंचकर्म और प्राकृतिक चिकित्सा के प्रसिध्द चिकित्सक निशुल्क अपनी सेवाएं देंगे।

योग शिविर की आयोजन समिति से जुड़े संजय शुक्ला पप्पी ने बताया कि बैतूल जिले के हर घर से इन तीन दिनों लोगों को स्टेडियम और आडिटोरियम लाने व उनका तन-मन ठीक करने के लिए योग साधकों की टीम हर सुबह वार्ड-वार्ड अलख जगा रही है। प्रत्याशा संस्था की तूलिका पचौरी और लायंस क्लब की नीलम दुबे ने बताया कि करो योग-रहो निरोग के नारे लगाते ये साधक जब सडक़ों पर घूमते हैं तो आम लोग भी इनके साथ जुडक़र योग शिविर में शामिल होने का संकल्प लेते हैं। प्रतिदिन वार्डो में निकल रही रैली में पतंजलि समिति के विमल दुबे, श्रीमती रोमा पटेल, श्रीमती रत्नमाला कुबड़े, माधुरी खातरकर, रामदयाल बोरबन, तेजस कुबड़े, लक्ष्मीकांत साहू मनोहर साहू, दिनेश लिखितकर, गणेश मायवाड़े, भूपेंद्र सोनी, एमएस पवार, मोतीलाल यादव, नारायण यादव ,अनिल साहू, मनोहर साहू, नरेश अंघोरे हरकचन्द सोलंकी , हितेंद्र देशमुख, लालचंद सिनोटिया आदि प्रमुखता से शामिल हो रहे हैं।

हम होगे कामयाब पखवाड़ा के तहत निकाली रैली

बैतूल। हम होगे कामयाब पखवाड़ा अंतर्गत परियोजना कार्यालय में परियोजना स्तरीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के उद्देश्य के बारे में परियोजना अधिकारी निरंजन सिंह डोडवे ने विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि भारत सरकार द्वारा जेंडर आधारित हिंसा की रोकथाम के लिए 25 नवंबर से 10 दिसंबर तक जागरूकता अभियान आयोजित किया जा रहा है। इसी तारतम्य में पीसी, पीएनडीटी एक्ट के बारे में वन स्टॉप सेंटर की काउंसलर शिखा भौरासे ने विस्तार से जानकारी दी। कन्या भ्रूण हत्या रोकथाम एक्ट के

बारे में जानकारी देते हुए बताया कि यदि कोई भी भ्रुण लिंग परीक्षण करवाता है तो वह अपराध की श्रेणी में आता है। लिंग चयन करने व कराने वाले दोनों के लिए कानून में सजा का प्रावधान है। अधिनियम के तहत अल्ट्रासाउंड जैसी तकनीकों, अपंजीकृत स्वास्थ्य केन्द्रों में प्रसव पूर्व निदान तकनीको का इस्तेमाल करना अपराध है। इस अवसर पर पर्यवेक्षक अर्चना तिवारी, श्वेता शुक्ला, कविता गढ़वाल व केस वर्कर माधुरी पंवार द्वारा भी अलग-अलग विषयों पर जानकारी दी गई। इस अवसर पर महिलाओं द्वारा जागरूकता रैली निकाली गई।

सृजन

डॉ.महेन्द्र अग्रवाल

विराट की विराट ग़ज़ल-साधना

अपनी ग़ज़लों को मुक्तिका कहने के आग्रह के साथ चन्द्रसेन विराट ने विराट गजल साहित्य का सृजन किया है।चौदह गीत संग्रह आठ मुक्तक संग्रह दो दोहा संग्रह के साथ उनके बारह गजल संग्रह प्रकाशित हुए हैं।उनके गजल संग्रह हैं-निर्वसना चांदनी 1970 आस्था के अमलतास 1980 कचनार की टहनी 1983 धार के विपरीत 1986 परिवर्तन की आहट 1987 लड़ाई लम्बी है 1988 न्याय कर मेरे समय 1991 फागुन मांगे भुजपाश 1993 इस सदी का आदमी 1997 हमने कठिन समय देखा है 2002 खुले तीसरी आंख और बोली मेरी ज़िन्दगी।कुल छत्तीस काव्य संग्रह वह हिन्दी साहित्य के सुधी पाठकों को भेंट कर चुके हैं।उनके इस महत्वपूर्ण योगदान को दृष्टिगत रखते हुए उन पर पांच लिखित/संपादित कृतियां भी प्रकाशित हुई हैं।इसमें हिन्दी गजल के आधिकारिक विद्वान डॉ.मधु खराटे द्वारा संपादित चंद्रसेन विराट की प्रतिनिधि हिंदी ग़ज़लें भी शामिल है।

विराट ने लेखन के प्रारम्भिक दौर में गीतों की भांति ग़ज़लों में प्रणय बांसुरी की धुनें संजोयी थीं किन्तु धीरे-धीरे समय के साथ उनकी चिन्तना में परिवर्तन का चक्र चला जिसने कल्पना लोक में व्याप्त सौन्दर्य की देवी के मोहपाश को काट फेंका और वह समयानुरूप अपने तेवर बदलने के लिये बाध्य हो उठे। निर्वसना चांदनी की मूल संवेदना का एहसास निम्नांकित शेरों के माध्यम से सहज संभव है-

छवि के रूपांकन का क्षण है
जैसे गीत सृजन का क्षण है

'आस्था के अमलतास में प्रेम की पीर और अधिक घनीभूत हो उठती है जबकि कवि कहीं स्वयं को कालिदास मानने लगता है और कहीं पीड़ा का मुखर कवि घनानंद। ये दो शेर देखें-

आपके रूप की सुधा पीकर
प्राण नित कालिदास रहते हैं
सांस मेरी सुजान बन बैठी
मन घनानन्द कर लिया मैंने

और कचनार की टहनी के तो कहने ही क्या हैं।रंग जीवन में घुलते भी हैं और बिखरते भी हैं।

झुकी मन के गवाक्षों पर किसी कचनार की टहनी
हमारे द्वार तक आई किसी के द्वार की टहनी
इधर का मोगरा करता निवेदित गीत गंधों के
उधर की रात्रि-गंधा की झुकी वयभार की टहनी

धार के विपरीत गजल संग्रह से उनकी गजलों की धारा कुछ बदलती दिखाई देती है-

हंसना नहीं है ठीक न रोना है आजकल
इस जिन्दगी का स्वाद अलोना है आजकल

'परिवर्तन की आहट तक आते आते विराट अपने विकासक्रम में परिवर्तन की आहट को मुखरित करने लगते हैं परिणामतः उनका मूल स्वर भी परिवर्तित होता दिखाई देता है।उनकी काव्य दृष्टि जो प्रधानतः अर्न्तजगत में केन्द्रित थी बर्हिजगत की ओर बढ़ने लगती है।उनकी दृष्टि का नुकीलापन जीवन जगत के समस्त आवरणों को भेदने में सक्षम सिद्ध होता है।यहां आकर उनकी अनुभूति भी बदलती है और अभिव्यक्ति भी-

आप रोजी से लगा दें अहसां
उम्र भर मैं न भुलाऊं साहब
छत बैठी दीवारें टूटीं कोई खिड़की दर न रहा
अबके ऐसी बारिश आई अपना कच्चा घर न रहा

विराट अपने काव्य-विकास के प्रत्येक सोपान पर न सिर्फ अपनी सुविकसित चेतना का परिचय देते हैं अपितु हिन्दी के तत्सम शब्दों से अत्यधिक लगाव काफिये के परम्परागत अनुशासन से अपरिचय व उच्छृंखन व ग़ज़ल की कहन के प्रति लापरवाही बरतने जैसे आरोपों का खंडन भी करते रहते हैं।भाव भाषा और शिल्प तीनों ही स्तरों पर उनका उत्तरोत्तर विकास इन ग़ज़ल संग्रहों में दृष्टव्य है।परिवर्तन की आहट वास्तव में उनकी सृजन प्रक्रिया के संदर्भ में परिवर्तन का शंखनाद है जिसमें कवि गीत के जादू से भी उबरने लगता है।

'लड़ाई लम्बी है की ग़ज़लें कविवर विराट को यह प्रमाणपत्र देती हैं कि अपनी कई कमजोरियों पर उन्होंने किसी हद तक काबू पा लिया और मुक्तिकाकार को नई ग़ज़ल के प्रतिनिधि कवियों की सूची में सम्मिलित करना ही उसके साथ न्याय होगा। दरअसल ग़ज़ल अपनी रचना प्रक्रिया के विभिन्न पड़ावों से गुजरते हुए जितना समय चाहती है विराट उतना समय देने लगते हैं।एक कुशलहस्त ग़ज़लकार के रूप मे उनकी ख्याति निर्विवाद है।देखिये-

गांव फिर ढूंढ न पाये हमको
ऐसे शहरों में आके खोये हैं

कविता या कहानी जिस तथ्य को मीलों लम्बा फासला तय करने के बाद व्यक्त करती है उसके लिये विराट केवल एक शेर से काम चला लेते हैं।उनका यही काव्य कौशल उनका वैशिष्ट्य है और ग़ज़लकार होने की एक शर्त भी जिसे विराट जी पूरा करते हैं।उपर्युक्त शेर में अनुभूति और अभिव्यक्ति का आयाम बहुत विस्तृत है।

'न्याय कर मेरे समय चन्द्रसेन विराट के सातवें ग़ज़ल संग्रह का शीर्षक मात्र ही नहीं वरन् हिन्दी साहित्य जगत से कवि के अर्न्तमन की पुकार भी है क्योंकि 1965 से साधनारत कवि वर्तमान तक दस गीत संग्रह, सात ग़ज़ल संग्रह व एक मुक्तक संग्रह साहित्य जगत को भेंट कर चुका था।इस संग्रह में संकलित 52 ग़ज़लें भी कवि की उस पहचान को परिवर्तित करने का प्रयत्न करती हैं जो कि कवि द्वारा निर्मित है।यह ग़ज़लें न सिर्फ उनकी रचनाधर्मिता के प्रति आश्वस्त करती हैं अपितु इस बिन्दु से कवि के लिये पुनः संभावनाओं के नए द्वार खोलती हैं।यह संग्रह इस दृष्टि से भी लीक से हटकर है कि इसमें पहली बार विराट जी ने ग़ज़ल पर खुलकर चर्चा की है व औरों से भी यह चर्चा करते रहने का आग्रह किया है।इसमें विराट जी मुक्तिका शब्द पर बल देते नजर नहीं आते।उनकी भंगिमा भी अलग है-

टेक मत्था और फिर अर्जी बढ़ा के बात कर
ये बड़े साहब कि इनसे गिड़गिड़ा के बात कर
बात जिससे कर रहा वह तंत्र का सम्राट है
कायदे से पेश आ सिर को झुका के बात कर

'फागुन मांगे भुजपाश में उनकी ग़ज़लों का भावपट अपेक्षाकृत और अधिक फैला हुआ दिखाई देता है। अपने समय की अनेक समस्याओं जैसे बेरोजगारी रिश्वतखोरी भाई-भतीजावाद राजनीतिक दुराचार शासक वर्ग का पाखण्ड लालफीता शाही वर्तमान जीवन का संत्रास व्यक्ति की स्वार्थी प्रवृत्ति निम्न वर्ग की दयनीयता आदि को लेकर कवि चिंतित प्रतीत होता है।कवि गजल के रंग में डूबने लगता है गजल में नए प्रयोग करने लगता है-

पेड़ से आंधी सभी पत्ते उड़ा ले जाएगी
नाम जो अंकित तने पर है कहां ले जाएगी
नाव कागज की घरौंदा शंख घोंघे सीपियां
एक आएगी लहर सब कुछ बहा ले जाएगी

सृजन का मूल आधार है आंतरिक पीड़ा बेचैनी छटपटाहट जो आंसू के रूप में नहीं अपितु रचना के माध्यम से साकार होती है।यह काव्य उर्जा उनके पास है।विराट सिर्फ इसलिये नई ग़ज़ल के प्रतिनिधि कवि नहीं है कि उनकी ग़ज़लों में समग्र जीवन से साक्षात्कार समसामयिकता और संघर्ष व आशावाद का स्वर मुखर है अपितु इसलिये भी कि वह परम्परा की पोटली लादकर चलने वाले कवि नहीं है।

'इस सदी का आदमी की ग़ज़लों में वह बिल्कुल जमीन पर खड़े हैं।जैसे कवि अपने जीवनानुभवों की पोटली खोलकर खड़ा हो-

बस हथेली ही आपकी अपनी धूप में सायबान होती है वह परिस्थितियों से परिवेश से कुछ नाराज दिखाई देते हैं और कुछ प्रश्न भी उछालते हैं-

आदमी के खून से अपना नरक रचता हुआ
खून में खुद तरबतर है इस सदी का आदमी

वर्तमान जीवन की कड़वाहट का यथार्थ चित्रण परिवेश का अंकन राजनीति की आलोचना एवं नैतिक मल्यों के पतन के प्रति जागरूकता के साथ अपने नए गजल संग्रह का शीर्षक रखते हैं-'हमने कठिन समय देखा है।इस कठिन समय की बानगी-

अंधेरे के इलाके में किरण मांगा नहीं करते
जहां हो कंटकों का वन सुमन मांगा नहीं करते
परों में शक्ति हो तो नाप लो उपलब्ध नभ सारा
उड़ानों के लिए पंछी गगन मांगा नहीं करते

अंतिम संग्रह खुले तीसरी आंख के नामकरण से भी उनकी भावनाएं व्यक्त होती हैं।वह साफ साफ और दो टूक कहने लगते हैं।कुछ उदाहरण देखें-

हारा नहीं है सत्य परेशान है मगर
संघर्ष में ये उसकी थकावट का दौर है

अग्रिम पंक्ति के गंभीर रचनाकार गजलकार के रूप में अपने लेखन को सार्थक सिद्ध करने के लिए वह संघर्ष और आत्मविश्वास के लिए प्रेरित करते हैं-

हिम्मत जो अपने आप जुटाओ तो बात है
सूरज से जम के आंख मिलाओ तो बात है

इस जुझारूपन को देखकर लगता है जैसे वह ग़ज़ल को नए सिरे से नए संदर्भो के साथ परिभाषित करने की चेष्टा कर रहे हैं।विराट जी की गजलों कुछ आलोचकों का मत रहा कि विराट कच्चे माल को अतिशीघ्र रचना में बदल देते हैं इससे परिमाण में रचनाएं तो बढ़ जाती हैं किन्तु उनका कोई परिणाम नहीं निकलता।छंद पर उनका अधिकार है इसमें दो मत नहीं।उनकी ग़ज़लें अधिकांशतः उर्दू बहरों की तुलना मात्रिक छंदों पर आधारित हैं जिनमें लय भी है और गेयता भी।

भाषा के स्तर पर उनके अपने कुछ आग्रह हैं । उर्दू शब्दों या उर्दू लहजे से उन्हें परहेज है। वह हिन्दी की तत्सम शब्दावली को कहीं अधिक पसंद करते हैं।उनकी ग़ज़लें हिन्दी संस्कृति और हिन्दी संस्कारों की ग़ज़लें हैं।मराठी भाषी होने के बावजूद हिन्दी भाषा पर उनकी गहरी पकड़ है।उसमें सहजता व सरलता है।उनके द्वारा सम्प्रेषित विचार सूत्र ग्रहण करने के लिए पाठक या श्रोता किंचित भी श्रम नहीं करता। उनकी अभिव्यक्ति पर किसी व्यक्ति या परम्परा का कोई प्रभाव नहीं है।उनके पास जो कुछ है उनका अपना है और यही उनके काव्य का वैशिष्ट्य है।उनकी ग़ज़लों पर उनका एक चर्चित शेर-

मेरी ग़ज़ल मरुस्थलों में सांस तोड़ते
प्यासे हिरण के कंठ की व्याकुल पुकार है।

3 दिसम्बर 1936 को इंदौर में जन्मे विराट शासकीय सेवा में कहीं भी पहुंचे मगर इन्दौर से उनका साथ चोली दामन जैसा रहा।बियासी वर्ष की उम्र में 15 नवम्बर 2018 को इंदौर में ही उन्होंने अंतिम सांस ली।

डॉक्टर अनुश्री शुक्ला गोल्ड मेडल से सम्मानित

सुबह सवेरे सोहागपुर। प्रतिष्ठित शुक्ला परिवार की बेटी डॉक्टर अनुश्री शुक्ला को लगातार तीन वर्षों में एमबीबीएस पाठ्यक्रम के प्रत्येक विषय में टॉपर रहने पर लोक स्वास्थ्य एवं जलसंसाधन मंत्री डॉ तुलसीराम सिलावट ने गोल्ड मेडल प्रदान कर सम्मानित किया ।इस अवसर पर प्राचार्य एवं डीन के साथ इन्दौर विधायक गोलू शुक्ला उपस्थित थे। महात्मा गांधी मेडिकल कॉलेज हाल में आयोजित एकेडमिक एक्सीलेंस अवॉर्ड कार्यक्रम में अनुश्री को वर्ष 2020 में कॉलेज टॉपर अवॉर्ड के रूप में गोल्ड मेडल एवं प्रशंसा पत्र प्रदान किया गया।इसके साथ अनुश्री शुक्ला को बेच टॉपर्स के लिए 3 एवं प्रत्येक विषय में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने के लिए 9 गोल्ड मेडल प्रदान किए गए हैं। उल्लेखनीय है कि डॉक्टर अनुश्री शुक्ला एजीपी राजीव शुक्ला एवं शिक्षिका अंजना शुक्ला के बेटी हैं। इस उपलब्धि पर नगरवासियों एवं स्नेहियो ने हर्ष व्यक्त करते बधाईयां दी हैं।

सांची के बौद्ध स्तूप की पवित्रता देश-विदेश में विख्यात है: रिजिजू

शांति और कल्याण के लिए भगवान बुद्ध के बताए मार्ग पर चलना होगा

रायसेन। भारत सरकार के अल्पसंख्यक तथा संसदीय कार्य विभाग मंत्री किरेन रिजिजू ने प्रसिद्ध पर्यटन नगरी सांची स्थित बुद्ध जम्बूदीप पार्क में आयोजित महाबोधी महोत्सव में अपने संबोधन में कहा कि मध्यप्रदेश के लोगों को इस बात का एहसास होगा कि वह कितने पवित्र स्थान के पास रहते हैं। सांची के बौद्ध स्तूप की पवित्रता और ज्ञान देश-विदेश में विख्यात है।

पूरे विश्व में बौद्ध धर्म को मानने वालों के मन में यह इच्छा जरूर होती है कि वह अपने जीवनकाल में भारत दर्शन करें और सांची की पवित्र नगरी जरूर देखें।उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वर्ष 2014 में संयुक्त राष्ट्र में दुनिया को संदेश दिया कि भारत ने दुनिया को युद्ध नहीं बुद्ध दिया है। सम्राट अशोक के बाद दुनिया को इतना बड़ा संदेश प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने दिया है। इस दुनिया में समृद्धि और शांति के लिए भगवान बुद्ध की शरण में जाना होगा। भारत सरकार के नेतृत्व में वर्ष 2014 में बुद्ध जयंती को मनाने के लिए समिति ने निर्णय लिया। उन्होंने कहा कि कोई भी देश अगर दुनिया में प्रभाव डालना चाहता है तो उसको भगवान बुद्ध के बताए शांति के मार्ग पर चलना होगा। दुनिया इस रास्ते पर चलकर ही खुशहाल और समृद्ध रहेगी। बुद्ध विहार और अन्य स्थलों को विकसित किया जाएगा।

केन्द्रीय मंत्री श्री रिजिजू ने कहा कि भारत देश सामान्य देश नहीं है, यह सदियों से लोगों को शांति का संदेश देता आ रहा है। उन्होंने सांची महोत्सव का उल्लेख करते हुए कहा कि सांची महोत्सव मनाने की शुरूआत वर्ष 1952 में डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी के नेतृत्व में हुई थी। तभी से यह महोत्सव मनाया जा रहा है। सांची में भगवान बुद्ध के दो महान अनुयायी सारिपुत्र और महामोदग्लायान, इनके अस्थि अवशेष हैं। भारत के पास परम्परा, आध्यात्म की विरासत है। महाबोधि सोसायटी के चीफ वानगल उपतिस नायक थेरो, सांची विधायक डॉ प्रभुराम चौधरी ने भी संबोधित किया। केंद्रीय मंत्री श्री रिजिजू को थाईलैंड से आए संस्थापक, महासचिव बोधि गयाविज्जालय 980 संस्थान, भारत डॉ सुपाचाई वेरोपुचांग ने बुद्ध की प्रतिमा भेंट की।

बौद्ध कलाओं पर आधारित सांस्कृतिक प्रस्तुतियां

महाबोधि महोत्सव के प्रथम दिवस प्रख्यात कलाकारों द्वारा बौद्ध कलाओं पर आधारित विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां दी गईं। सांस्कृतिक कार्यक्रमों की पहली कड़ी में जापानी लोक नृत्य एवं गायन की प्रस्तुति दी गई। इसके उपरांत कृति थियेटर एण्ड स्पोर्ट अकादमी नागपुर के कलाकारों द्वारा भगवान बुद्ध की जीवन कथा पर केन्द्रित महानाट्य धम्मचक्र की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम की अगली कड़ी में भोपाल आकृति मेहरा एवं साथी द्वारा भक्ति संगीत की प्रस्तुति दी गई।

आदिवासी ग्रामों में रामकृष्ण आश्रम भोपाल ने 7 सौ स्वेटर ,5 सौ पचास कंबल बांटे

सुबह सवेरे सोहागपुर। स्वामी नितयज्ञाननद, रामकृष्ण आश्रम सचिव भोपाल, स्वामी अवीनीपालाननद भोपाल ,रामकुमार द्विवेदी, प्रतीक चौरे,शेखर कर्माकर, भोपाल, आशुतोष, नर्मदापुरम, राजकुमार विश्वकर्मा सोहागपुर आदि ने शीत बचाव कार्यक्रम अन्तर्गत सर्वे करके आदिवासी ग्राम ग्राम, नया कांकरी,साकई, नया वोरी,विरजी खापा,खरदाआदि में सेवा कार्य करके गरम कपड़े लगभग 700, स्वेटर,550 कंबलों का वितरण किया।। वकील प्रांजल तिवारी ने जानकारी देते हुए बताया कि श्री रामकृष्ण आश्रम भोपाल द्वारा रामकृष्ण परमहंस के आदर्श जीव पर दया नहीं शिव मानकर सेवा को शिरोधार्य कर सेवा कार्य किया जा रहा है।

इस्कॉन का उद्देश्य पूरे विश्व में जीवों को भगवत गीता और हरिनाम संकीर्तन से जोड़ना - प्रणव प्रभु

नर्मदापुरम। बांगलादेश में भक्त को गिरफ्तार करके प्रताड़ित करने की जो घटना हुई है वह पहली बार नहीं हुई है। यह बात इस्कॉन मंदिर प्रमुख प्रणव दास प्रभु ने कही श्री प्रभु आगे कहते हैं कि ऐसी घटनाएं इतिहास में बार-बार होती आ रही है। जैसे कि भागवत कथा में प्रह्लाद महाराज को भगवान की भक्ति करने पर स्वयं उनके पिता द्वारा मृत्यु दण्ड देने का प्रयत्न किया गया और भारत के इतिहास में ऐसा समय देखने को मिला कि, जीसस क्राइस्ट को भी सूली पर चढ़ा दिया गया था , चैतन्य महाप्रभु के काल में भी हरिदास ठाकुर को बाईस बाजार में मार मार कर मृत्युदंड देने का प्रयत्न किया गया। अब प्रश्न उठता है कि जब हम ऐसी परिस्थिति में हों तो शास्त्रों के अनुसार हमें क्या करना चाहिए..? शास्त्रों के अनुसार हमें भगवान की शरण ग्रहण करना चाहिए जिस प्रकार जब द्रोपदी का वस्त्रहरण हो रहा था तो उस समय उसकी मदद करने कोई भी आगे नहीं बड़ा और उसने स्वयं से अपनी रक्षा करने का भी पूरा प्रयत्न कर डाला था, फिर भी स्वयं से और अन्य किसी की मदद से उसकी रक्षा नहीं हो पा रही थी तब उन्होंने भगवान श्री कृष्ण की शरण ग्रहण कर और भगवान के दिव्य नामों का उच्चारण किया जिससे भगवान तुरंत ही द्रौपदी की रक्षा करने के लिए वहां पर प्रकट हुए और द्रौपदी की रक्षा करी। भगवत गीता का भी यही संदेश है भगवान श्री कृष्ण की सभी जीवों को शरण ग्रहण करनी चाहिए। उसी से ही हमारी रक्षा हो सकेगी। वर्तमान बांग्लादेश के मुद्दे पर बहुत से संगठनों ने हमसे सम्पर्क किया है। अत: नर्मदापुरम इस्कान मंदिर आप सभी से निवेदन है कि भगवत गीता का वास्तविक संदेश तो यह है कि हम शरीर नहीं आत्मा है और आत्मा के स्तर पर परमात्मा से जुड़ना और उनकी सेवा करना ही सनातन धर्म है। इस्कॉन का उद्देश्य पूरे विश्व के जीवों को भगवत गीता और हरी नाम संकीर्तन के माध्यम से जोड़ना है और इसी से वास्तविक वैश्विक सुख शांति भाईचारा स्थापित हो सकेगा। बंग्लादेश में घटित घटना के विरुद्ध हम भी बहुत क्षुब्ध हैं इसके विरोध में हम कल दिनांक 3 दिसंबर को एलआईसी दफ्तर के उपर द्वितीय तल स्थित इस्कॉन मंदिर से सुबह 10 बजे महा हरिनाम संकीर्तन करेंगे और भक्तों के साथ 10.30 बजे नगर संकीर्तन के लिए प्रस्थान करेंगे जो मीनाक्षी चौक, बस-स्टैंड, सतरास्ता, हलवाई चौक, इंद्रा चौक, नेहरू पार्क, विवेकानंद घाट होते हुए वापस मंदिर पहुंचेंगे।

सेंट पैट्रिक्स स्कूल का 8वां वार्षिक उत्सव संपन्न, छात्र छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम में उत्कृष्ट प्रस्तुति दी

सुबह सवेरे सोहागपुर

सेंट पैट्रिक्स इंग्लिश मीडियम स्कूल में आठवां वार्षिकोत्सव आर्कविशप ए.दुरईराज,के मुख्य आतिथ्य एवं अनुविभागीय अधिकारी असवनराम चिरामन, बीआरसी राकेश रघुवंशी, प्राचार्य फादर दिलीप मिंज, मेनेजर आईजेक एक्का आदि की उपस्थिति में संपन्न हुआ। इस अवसर पर अतिथियों ने शाला के आठवें उत्सव 'यूफोरिया 2024' का दीप जला कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कार्यक्रम में करीबन एक हजार से अधिक छात्र छात्राओं ने करीबन 30 सांस्कृतिक प्रस्तुतियां तालियों की गड़गड़ाहट की बीच दी।इस सांस्कृतिक कार्यक्रम में नृत्य, गीत, आर्केस्ट्रा, नाटिकाएं प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम का संचालन विद्यालय के छात छात्राओं ने करके वाहवाही बटोरी। इसी क्रम में अतिथियों ने शाला के पूर्व विद्यार्थियों का सम्मान भी किया गया। कार्यक्रम में अभिभावक गणों के अलावा गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। कार्यक्रम के अंत में फादर दिलीप मिंज के आभार व्यक्त किया।

उत्तरप्रदेश के व्यावसायिक शिक्षा, कौशल विकास और उद्यमिता राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री कपिल देव शर्मा ने ग्लोबल स्किल पार्क की विश्वस्तरीय प्रयोगशाला पहुँचकर प्रशिक्षणार्थियों से ट्रेनिंग की बार।

भोपाल में लायंस क्लब ने किया मेडी बैंक का शुभारंभ

मरीजों को नि :शुल्क पलंग, चेयर और अन्य आवश्यक चिकित्सा उपकरण की सुविधा

भोपाल (नप्र)। लायंस क्लब भोपाल संस्कार द्वारा एक महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट मेडी बैंक का शुभारंभ हुआ। इस पहल का उद्घाटन डिस्ट्रिक्ट गवर्नर लायन मनीष शाह ने किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि यह प्रोजेक्ट न केवल भोपाल बल्कि पूरे डिस्ट्रिक्ट के लिए एक गौरव का विषय है। उन्होंने क्लब के अध्यक्ष लायन दिनेश धीर और सभी सदस्यों को इस पहल के लिए शुभकामनाएं दीं और उम्मीद जताई कि यह मेडी बैंक जरूरतमंदों के लिए एक संजीवनी साबित होगा।

भोपाल के शिर्डी पुरम, कोलार रोड पर स्थित इस मेडी बैंक का संचालन हिमांशु वेलफेयर सोसाइटी के सहयोग से किया जाएगा। यहाँ पर मरीजों को निःशुल्क पलंग, चेयर और अन्य आवश्यक चिकित्सा उपकरण मिलेंगे।

इस कार्यक्रम में लायंस क्लब भोपाल संस्कार के सचिव लायन रूपक राव द्वारा मेडिकल इक्विपमेंट प्रदान किए गए, जबकि लायंस क्लब भोपाल सर्वोदय की अध्यक्ष लायन मीनाक्षी श्रीवास्तव ने वॉकर और लायन डॉ. सीमा सक्सेना ने एक बेड भेंट किया।

इस आयोजन में लायन डॉ. सीमा सक्सेना, लायन अनिता मिश्रा, लायंस भोपाल कोऑर्डिनेटर लायन अजीम खान, को-कोऑर्डिनेटर लायन इंदरपाल सिंह, लायन आबिद बैग सहित कई अन्य सदस्य उपस्थित थे।

कार्यक्रम के अंत में लायन मनीष शाह ने अल्टीमेट कैंपस, कोलार रोड के सुरक्षा गार्ड्स को कंबल वितरित किए, जो समाज की भलाई के लिए क्लब की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

महाकाल के दर्शन करने उज्जैन पहुंचे सोनू सूद

कहा- इंसानियत के लिए काम करेंगे तो कोई धर्म-जाति नहीं पूछेगा

उज्जैन (नप्र)। महाकालेश्वर मंदिर में सोमवार को प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता सोनू सूद पहुंचे। मंदिर में उन्होंने भगवान महाकाल के दर्शन कर आशीर्वाद लिया। मीडिया से चर्चा के दौरान उन्होंने कहा कि अपनी फिल्म 'फतेह' की शुरुआत करने के पहले बाबा महाकाल के दर्शन किए थे। आज फिल्म के प्रमोशन के पहले महाकाल के दर्शन कर फिल्म की सफलता के लिए आशीर्वाद मांगा है। सोनू सूद ने कहा कि जब तक इंसानियत के लिए काम करते रहेंगे, तब तक यह सवाल नहीं उठेगा कि आप किस धर्म या जाति से हैं।

महाकाल से आशीर्वाद लेकर प्रमोशन करूंगा- एक्टर सोनू सूद ने मंदिर के गर्भगृह के बाहर देहरी से भगवान महाकाल का पूजन कर दर्शन किए। दर्शन के बाद मंदिर परिसर के बाहर मीडिया से चर्चा करते हुए सोनू सूद ने कहा, 'मैं अपनी फिल्म फतेह' की शुरुआत बाबा महाकाल के दर्शन से ही की थी। आज एक महीना बाकी है फिल्म के रिलीज होने में, 10 जनवरी को फिल्म रिलीज होगी।

आम जनता की है फिल्म- सोनू सूद ने फिल्म की विषय

वस्तु को लेकर बताया कि कोरोना काल के दौरान जब वह लोगों की मदद कर रहे थे, तब बहुत लोगों के साथ साइबर क्राइम हो रहा था। बैंकों से पैसे निकाल लिए जाते थे और फेक लोन बनाए जाते थे। इस सब्जेक्ट को उठाकर फिल्म 'फतेह' बनाई गई है। यह फिल्म आम जनता की है।

अच्छे काम करें, फर्क नहीं पड़ता किस जाति-धर्म के हैं- धर्म को लेकर उन्होंने कहा, मैं हमेशा मानता हूं कि देश में सबके लिए जगह है। हिंदू राष्ट होना चाहिए, लेकिन मुझे लगता है कि हमें अच्छे कार्य करते रहना चाहिए। फर्क नहीं पड़ता कि आप किस धर्म से हैं, किस जाति के हैं। जब तक इंसानियत के लिए काम करते रहेंगे, तब तक यह सवाल नहीं उठेगा कि आप किस धर्म या जाति से हैं। मुझे लगता है कि हमारा देश और इंसानियत हमेशा बरकरार रहेगी।

भोपाल का नाम भोजपाल किया जाए

भोजपाल मेला अध्यक्ष ने सीएम को बताया रामभद्राचार्य का संकल्प

मेला संस्कृति लोगों को आपस में जोड़ती है- सीएम यादव

- **शहनाज अख्तर बोलीं- रायसेन मंदिर खुलवा दो**

भोपाल (नप्र)। दो साल पहले जगद्गुरु रामभद्राचार्य महाराज ने भोपाल के भेल दशहरा मैदान पर रामकथा के दौरान कहा था कि जब तक भोपाल का नाम भोजपाल नहीं हो जाता, मैं यहां अगली कथा करने नहीं आउंगा।रामभद्राचार्य महाराज द्वारा कही गई बात इस बार फिर सीएम की मौजूदगी में दोहराई गई।

सीएम से कहा-भोपाल का नाम भोजपाल हो- भोजपाल मेला का उद्घाटन करने पहुंचे मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के सामने मेला समिति के अध्यक्ष सुनील यादव ने कहा-जगद्गुरु रामभद्राचार्य महाराज जी यहीं मंच पर रामकथा कहते हुए तत्कालीन मुख्यमंत्री के समक्ष एक मांग रखते हुए ये संकल्प लिया था कि जब तक भोपाल का नाम भोजपाल नहीं होगा। भोपाल की धरा पर दूसरी कथा नहीं करूंगा। हमारी समिति और सनातन धर्मियों की इच्छा है कि भोपाल का नाम भोजपाल हो।

सुनील यादव ने सीएम से कहा- भोपाल मेला उत्सव समिति के लोग पिछले 9 सालों से इस भोजपाल मेले का आयोजन इसलिए कर रहे हैं क्योंकि, सनातन संस्कृति के महान राजा, मां सरस्वती के वरद पुत्र राजा भोज के नाम से पहचाने जाने वाले शहर का नाम मुगल शासकों द्वारा सनातन संस्कृति को नष्ट करने की मंशा से भोपाल कर दिया गया। कार्यक्रम में मंत्री विश्वास सारंग, राज्यमंत्री कृष्णा गौर, बीजेपी के प्रदेश मीडिया प्रभारी आशीष अग्रवाल, विकास वीरानी मौजूद थे।

ग्वालियर की तरह भोजपाल मेले में भी छूट मिले- मेला समिति के अध्यक्ष सुनील यादव ने सीएम से कहा- हमारी पहली मांग है कि भोपाल का नाम भोजपाल हो और दूसरी मांग है कि ग्वालियर मेले की तरह इस भोजपाल मेले में भी वाहन खरीदने वालों को रजिस्ट्रेशन में टैक्स की छूट दी जाए।

सीएम ने कहा- सनातन के लिए किसी से कंप्रोमाइज नहीं करेंगे- सीएम ने कहा- हमारे राजा भोज के नाम पर स्थापित इस मेले में आकर मुझे बेहद प्रसन्नता हुई। सीएम ने भजन गायिका शहनाज अख्तर को सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि, भगवान राम कृष्ण और सभी 33 करोड़ देवी देवताओं के सम्मान में हमारी जिंदगी जाती है। सनातन धर्म के लिए हम किसी की निंदा और अपमान नहीं करते लेकिन, अपने सनातन धर्म के लिए किसी से कंप्रोमाइज नहीं करेंगे। आप आपकी जय करो हमारी तो विजय होने ही वाली है।

भगवान राम अयोध्या में मुस्करा रहे हैं तो हमारा कलेजा 56 इंच से बाहर निकल कर आ रहा - सीएम ने कहा- भगवान राम अयोध्या में मुस्करा रहे हैं तो हमारा कलेजा 56 इंच से बाहर निकल कर आ रहा है। भगवान राम के बाद अब जमुना जी के कृष्ण कन्हैया बुलवा रहे हैं। मेला संस्कृति हमें अतीत से जोड़ती है। जिसके जरिए मेल मिलाप होता है अनजान व्यक्ति अपना अपना टिकट लेकर एक साथ झूलते हैं। इस मेले के लिए हमारे देवी देवता भी तरसते हैं।

राजा भोज की कहावत गलत बोली जाती है- सीएम ने कहा राजा भोज के जीवन को याद करें जिनकी बौद्धिक क्षमता हर क्षेत्र में अद्वितीय थी। हर जगह राजा भोज दिखाई देते हैं। ऐसे व्यक्तित्व के धनी जिनके जीवन में उन्होंने दो-दो युद्ध लड़े। एक गांगेय से था और दूसरा और तैलंग से। गलत कहावत चलती है राजा भोज की। उनकी सही कहावत है कहां राजा भोज, कहां गांगे-तैलभ। ये गलती मत करना जो आपने बोली है। एक साथ इतनी बड़ी सत्ता को हराने का सामर्थ्य राजा भोज में हैं। वे अपने कवियों को कविता के एक-एक शब्द के लिए सोने की ईंट दान में देते थे। वे इतने विशाल ह्रदय के व्यक्ति थे।

भजन गायिका अख्तर बोलीं- रायसेन किले का शिवमंदिर खुलवा दीजिए

मेले में आई भजन गायिका शहनाज अख्तर ने सीएम से कहा हम सब भक्तों की एक कामना है कि हम शिव भक्तों को कैलाश पर्वत के दर्शन सुलभ करा दीजिए। आप सरकार के पास हमारी बात रखें।शहनाज ने कहा- रायसेन जिले के किले में बंद पड़े शिवमंदिर की आवाज सबने उठाई लेकिन आवाज दबा दी गई। उस मंदिर को शिवभक्तों की मांग पर खुलवा दीजिए।

जगद्गुरु रामभद्राचार्य का प्रण ; भोजपाल नाम नहीं हो जाता, तब तक भोपाल नहीं आऊंगा

दो साल पहले भोपाल के भेल दशहरा मैदान पर रामकथा के दौरान जगद्गुरु रामभद्राचार्य महाराज ने कहा था जब तक भोपाल का नाम भोजपाल नहीं होता, तब तक अगली कथा करने नहीं आऊंगा। भोजपाल नगरी के राजा भोज पालक थे। जब सरकार होशंगाबाद का नाम नर्मदापुरम कर चुकी है। इलाहाबाद का नाम प्रयागराज हो गया है, फैजाबाद का नाम बदलकर अयोध्या कर दिया गया है, तो भोपाल का नाम बदलकर भोजपाल क्यों नहीं किया जा सकता? मैं अपने अनुज मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान से कहूंगा कि विधानसभा चुनाव के पहले इसका नाम बदल दें।

दुआ-ए-खास के साथ इज्तिमा का समापन

आखिरी दिन 10 लाख से ज्यादा लोग पहुंचे, भोपाल से रवाना होंगी 2 हजार जमातें

भोपाल (नप्र)। भोपाल में चल रहे चार दिवसीय आलमी तब्लीगी इज्तिमा का समापन सोमवार को दुआ-ए-खास के साथ हुआ। दोपहर करीब 12.30 बजे हुई दुआ में मौलाना साद ने लोगों से मोहब्बत से रहने की बात कही। उन्होंने खास तौर पर उम्मत को गुनाहों से दूर रहने के अलावा ईमान वाला बनने की दुआ की। इससे पहले फजर की नमाज हुई।

इज्तिमा के मीडिया कार्डिनेटर उमर हफीज ने बताया, इज्तिमा के पहले तीन दिन में करीब 8 लाख लोग इज्तिमा में शामिल हुए हैं। आखिरी दिन 600 एकड़ का पूरा एरिया फुल हो गया, जिसके चलते कई लोगों को पार्किंग में शिफ्ट करना पड़ा। सुबह तीन नई पार्किंग बनाई गईं। भीड़ बढ़ने पर इंडस्ट्रियल एरिया के पास खाली जगहों पर लोगों को बिठाया गया। दुआ के पहले ही लोगों की संख्या करीब 10 लाख तक पहुंच गई थी।

दो घंटे बाद निकाली गईं टू व्हीलर- इज्तिमा प्रबंधन के अनुसार, दुआ के बाद इज्तिमा से लगभग 2,000 जमातें देशभर के अलग-अलग हिस्सों के लिए रवाना होने लगी हैं। ऐसे में पुराने भोपाल की सड़कों पर भारी ट्रैफिक रहेगा। दुआ के बाद करीब एक घंटे तक पैदल जाने वाले लोगों को निकलने दिया गया। इसके बाद इज्तिमा की सभी पार्किंगों से दो पहिया वाहन निकालने दी गईं।

करीब दो घंटे बाद पार्किंग से चार पहिया वाहन निकालने की इजाजत दी गई। इसके बाद हैवी व्हीकल निकाले गए। वहीं ट्रेनों से जाने वाले यात्रियों को इस्तकबादल नंबर 4 से सीधे गाड़ियों से स्टेशन पहुंचाया गया।

इन रूट्स पर होगा भारी ट्रैफिक- पुराने भोपाल से इज्तिमा स्थल की ओर आवागमन करने वाले मार्गों, जैसे - मुबारकपुर से पटेल नगर नया बायपास, गांधी नगर से अयोध्या नगर बायपास, रत्नागिरी, लाम्बाखेड़ा से करोंद, भोपाल टॉकीज, पीरगेट, मोती मस्जिद, रॉयल मार्केट, लालघाटी चौराहा, नादरा बस स्टैंड, भोपाल मुख्य रेलवे स्टेशन, अल्पना तिराहा, भारत टाकीज, बोगदा पुल आदि क्षेत्रों में भारी संख्या में जनसमुदाय और वाहनों की आवाजाही के कारण यातायात दबाव रहेगा।

स्टेशन और एयरपोर्ट के लिए यह रहेगा रूट

एयरपोर्ट की ओर जाने वाले वाहन भदभदा चौराहा, नीलबड़, रातीबड़, झागरिया रोड से खजूरी बायपास, मुबारकपुर बायपास होकर एयरपोर्ट जा सकेंगे।

भोपाल शहर से मुख्य रेलवे स्टेशन की ओर जाने वाले वाहन रोशनपुरा, लिंक रोड 2, बोर्ड ऑफिस, चेतक ब्रिज से प्रभात चौराहा, 80 फीट रोड होकर प्लेटफॉर्म-1 की तरफ आ सकेंगे।

अगले दो दिन तक भोपाल स्टेशन पर बनेगा जमातियों के लिए खाना।

अगले दो दिन तक भोपाल स्टेशन पर बनेगा जमातियों के लिए खाना।

इज्तिमा में बना 50 हजार लोगों का खाना

भोपाल स्टेशन पर इज्तिमा कमेटी ने जायरिनों के लिए खास इंतजाम किए हैं। इज्तिमा कमेटी ने यहां पर करीब 40 से 50 हजार लोगों का खाना बनाया गया है। इसके अलावा, रेलवे ने यहां स्पेशल टिकट काउंटर लगाए हैं। (ऑटोमैटिक टिकट वेंडिंग मशीन) की संख्या भी बढ़ाई है।

रेलवे ने दो ट्रेनों में बढ़ाए एक्स्ट्रा कोच

भोपाल-इटारसी एक्सप्रेस और राजस्थान जाने वाले लोगों के लिए भोपाल-जोधपुर एक्सप्रेस में एक-एक कोच बढ़ाया है। 2 दिसंबर को भोपाल स्टेशन पर 4 टिकट काउंटर भी बढ़ाने का फैसला लिया है। 2 टिकट काउंटर 6 नंबर प्लेटफॉर्म स्थित पंडाल में और दो काउंटर और बढ़ाए जाएंगे।

इन ट्रेनों में दो दिन रहेंगे एक्स्ट्रा कोच

- गाड़ी संख्या 11272-भोपाल-इटारसी एक्सप्रेस में 2 और 3 दिसंबर को अतिरिक्त जनरल कोच रहेगा।
- गाड़ी संख्या 14814-भोपाल-जोधपुर एक्सप्रेस में 2 और 3 दिसंबर को अतिरिक्त जनरल कोच रहेगा।

2 टिकट काउंटर और 6 एटीवीएम मशीन

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक सौरभ कटारिया ने बताया कि भोपाल रेलवे स्टेशन पर यात्रियों की सुविधा के लिए 6 नियमित टिकट काउंटर के अलावा 2 अतिरिक्त टिकट खिड़कियां शुरू की गई हैं।

6 एटीवीएम मशीनों से टिकट जारी किए जा रहे हैं। श्रद्धालुओं की भीड़ को व्यवस्थित तरीके से नियंत्रित करने के लिए अतिरिक्त टीटीई स्टाफ की तैनाती की गई है। सुरक्षा के मद्देनजर, जीआरपी, आरपीएफ और अन्य सुरक्षा बल तैनात किए गए हैं।

दोनों फुटओवर ब्रिज (एफओबी) पर यात्रियों के आने-जाने को आसान बनाने के लिए मार्गों को अलग-अलग डायवर्ट किया गया है। आपातकालीन चिकित्सा सेवाओं के लिए चिकित्सा सहायता केंद्र भी उपलब्ध कराया गया है।

वन्य प्राणियों की मौत की पीएम रिपोर्ट ऑनलाइन होगी

इन्वेस्टिगेशन क्लियरियटी के लिए मौत वाली जगह की गूगल लोकेशन भी होगी शेयर

भोपाल (नप्र)। प्रदेश के टाइगर रिजर्व और अन्य राष्ट्रीय उद्यानों में वन्य प्राणियों की सुरक्षा पर फोकस करने वाला वन महकमा अब इनकी मौत के कारणों की पूरी जानकारी भी ऑनलाइन रखेगा।

इस मामले में खासतौर पर पिछले माह बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व में 10 हाथियों की मौत के बाद गंभीरता दिखाई गई है और सरकार के फैसले के बाद वन विभाग ने वन्य प्राणियों की मौत के बाद वेब आधारित पोस्टमार्टम रिपोर्टिंग सिस्टम तैयार किया है।वाइल्डलाइफ पोस्टमार्टम रिपोर्ट सिस्टम के नाम से तैयार किए गए इस सिस्टम का फायदा यह होगा कि वन्य प्राणियों की पीएम रिपोर्ट ऑनलाइन देखी जा सकेगी। केंद्र सरकार द्वारा इसके लिए चार फार्मेट तैयार किए गए हैं, जिनके आधार पर एमपी में भी व्यवस्था लागू की गई है ताकि देश के अन्य राज्यों के साथ रिपोर्ट की एकरूपता बनी रहे।

वेटरनरी डॉक्टर्स को होगा रजिस्ट्रेशन- वन अफसरों के अनुसार, वन्य प्राणियों का पोस्टमार्टम करने वाले वेटरनरी डॉक्टर्स का इस पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन होगा। साथ ही फॉरेस्ट के सभी उच्च अधिकारियों को रिपोर्ट पहुंचाने की सुविधा भी इसमें होगी।इसके लिए अफसरों को पासवर्ड दिए जाएंगे। यह पासवर्ड उपयोग कर सर्कल वाइज, वनमंडल वार तथा केस टाइप और डॉक्टर्स की रिपोर्ट देखी जा सकेगी। इसमें यह भी व्यवस्था की गई है कि वन्य प्राणी की मृत्यु के बाद जहां पर उसकी डेडबॉडी मिली है, उसकी लोकेशन गूगल मैप से देखी जा सके। इस रिपोर्ट को वन महकमा लीगल कार्यों में भी उपयोग कर सकेगा।

इस तरह चार फार्मेट में रहेगी रिपोर्ट

बाघ फार्मेट रिपोर्ट- इसमें बाघों के साथ तेंदुआ और चीतों की पीएम रिपोर्ट रहेगी।

वन्य प्राणी रिपोर्ट- इसमें अन्य सभी वन्य प्राणियों की पीएम रिपोर्ट रहेगी।

बॉडी पार्ट एग्जामिनेशन रिपोर्ट- इसमें वन्य प्राणियों के शरीर के परीक्षण की रिपोर्ट होगी।

चिड़ियाघर वन्य प्राणी रिपोर्ट- इसमें चिड़ियाघर में रहने वाले वन्य प्राणियों की पीएम रिपोर्ट की जानकारी रहेगी।

मोहन का मंत्रालय

आशीष

जागो मंत्री जी... ..जागो....

मुख्यमंत्री डॉक्टर मोहन यादव सरकार में राज्य शासन के एक विभाग का भगवान ही मालिक है। मालिक हम इसलिए कह रहे हैं कि विभाग के मुखिया या कहे कि मंत्री ने शपथ लेने के बाद विभागीय अधिकारियों के साथ आज तक कोई महत्वपूर्ण बैठक नहीं की। बैठक से आशय यह है कि मंत्री की अधिकारियों के साथ परिचयात्मक बैठक भी आज तक ठीक से नहीं हुई। विभाग के अधिकारी बताते हैं कि विभाग इतना महत्वपूर्ण है लेकिन मंत्री उतने ही गैर जिम्मेदार तौर पर अपनी कार्यप्रणाली प्रदर्शित कर रहे हैं। विभाग के ज्यादातर निर्णय शीर्ष स्तर से ही लिए जा रहे हैं। आपको बता दें इस विभाग ने न केवल एनडीए सरकार में बल्कि यूपीए सरकार में भी बेहतर परफॉर्मेंस की बदौलत कई अवार्ड जीते। विभाग ने अपनी कार्यप्रणाली से विकास दर भी चमत्कारिक तौर पर हासिल की।

नई परंपरा या डेकोरम

पिछले दिनों राज्य मंत्रालय यानी वल्लभ भवन में एक नई परंपरा देखी गई. मुख्य सचिव अनुराग जैन ने मान्य परंपराओं से हटकर नई परंपरा की शुरुआत की और सेवानिवृत हो रहे डीजीपी सुधीर सक्सेना को मंत्रालय में विदाई दी। विदाई कार्यक्रम में मंत्रालय के तमाम आला अधिकारी मौजूद थे। विदाई कार्यक्रम को लेकर प्रशासनिक हल्को में कई तरह की चर्चा है। चर्चा है कि मुख्य सचिव ने डीजीपी का विदाई कार्यक्रम मंत्रालय में आयोजित कर एक तरह से डेकोरम ही मेंटेन किया है। मुख्य सचिव ने विदाई कार्यक्रम के जरिए एक संदेश आला अधिकारियों को दिया है कि वह कर्तव्य पालन को लेकर कितने सख्त है और शिष्टाचार (डेकोरम) को निभाने वाले हैं।

तय थी हार ?

मोहन सरकार के वन मंत्री रामनिवास रावत की हार को लेकर राजनीतिक हल्को में तमाम तरह के कयास लगाए जा रहे हैं और भाजपा के पराजित प्रत्याशी रामनिवास रावत ने अपनी हार का ठीकरा भी दूसरों पर फोड़ना शुरू कर दिया है लेकिन इस सब के बीच यह बात भी उभर कर सामने आई है कि विजयपुर में संगठन ने चुनाव लड़ने से पहले ही हार मान ली थी। बताया जाता है कि संगठन ने हार के अंतर को कम करने के लिए रावत के पक्ष में हर संभव प्रयास किया लेकिन संगठन के तमाम प्रयास काम नहीं है। भाजपा के एक कद्दावर नेता ने तो इस हार को अपनी प्रतिष्ठा से जोड़ लिया है। प्रदेश संगठन के ही एक शीर्ष पदाधिकारी ने चुनावी नतीजे सामने आने के बाद दबी जुबान में कहा कि क्षेत्र के आदिवासी इलाकों में रामनिवास रावत को लेकर नकारात्मकता थी और संगठन ने इस बात को दिल्ली तक पहुंचा दी थी।

अगला नंबर सिरोंज का

राजनीति के मंच से नेतागण शिकवे शिकायत करते हैं या फिर तारीफ में कसीदे करते हैं लेकिन मध्य प्रदेश के तेजतर्रार मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने विदेश दौरे से लौटने के बाद स्टेट हैंगर पर स्वागत में आयोजित सभा में जब उनकी पार्टी के विधायक का नाम लेकर यह कहा कि अगला नंबर सिरोंज का है। तब लोगों के कान खड़े हो गए और अपने अपने स्तर पर कयास लगाए जा रहे हैं कि इस अगला नंबर के मायने क्या है? चर्चा है कि सिरोंज को जिला बनाया जा सकता है या फिर विधायक की बल्लेबल्ले होने वाली है.. खैर मुख्यमंत्री का आशय जो भी हो पर उनकी इस एक लाइन ने राजनीतिक बाजार में ठंड के माहौल में गर्मी पैदा कर दी है... वैसे जानकारों का यह भी कहना है कि विधायक जी सिरोंज को जिला बनाए जाने के पक्षधर नहीं है।

उधार का गुलदस्ता से स्वागत

मध्य प्रदेश के एक प्रभावशाली मंत्री और उनका स्टाफ भी पद के गुमान में भूल गये कि मुख्यमंत्री के स्वागत सत्कार में प्रोटोकॉल भी कुछ होता है। मंत्री महोदय अपने स्टाफ के साथ विदेश यात्रा से लौटे मुख्यमंत्री का स्वागत करने पहुंच गए लेकिन जब उन्हें पता चला कि स्वागत करने के लिए उनके पास गुलदस्ता तक नहीं है। तब चेहरा तमतमा गया... गुस्से से लाल पीले मंत्रीजी के सामने ही स्टाफ ने इधर-उधर नजरें दौड़ाई। तभी उनको भोपाल में प्राधिकरण में पदाधिकारी रहे नेताजी दिख गए तो उन्होंने उनसे अनुनय विनय कर और गुलदस्ते का पैसा देने का कहकर एक गुलदस्ता गिडगिडाते हुए माँग लिया। नेताजी को भी मंत्रि जी पर तरस आ गया और मंत्री जी के स्टाफ को गुलदस्ता दे दिया.. तब जाकर मंत्री महोदय मुख्यमंत्री का गुलदस्ते से स्वागत कर पाए।

7 साल बाद मिली स्कॉलरशिप

इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर एक प्राइवेट कंपनी में नौकरी तक कर रही एक इंजीनियरिंग छात्रा को स्कॉलरशिप के लिए 7 साल इंतजार करना पड़ा। उज्जैन निवासी इंजीनियरिंग छात्रा को 7 साल बाद मुख्यमंत्री के हस्तक्षेप के बाद स्कॉलरशिप मिली। सूत्र बताते हैं कि पिछले दिनों छात्रा ने 181 सीएम हेल्पलाइन में इस बाबत शिकायत की तो पिछड़ा वर्ग कल्याण विभाग में तूफान बच गया।

वर्ष 2017 से छात्रा की स्कॉलरशिप किन फाइलों में अटकी है इसकी खोज खबर शुरू हो गई ? तब जाकर यह बात सामने है कि कॉलेज वालो ने छात्रा की स्कॉलरशिप के लिए जो दस्तावेज भेजे थे उसमें कमी थी। लेकिन कॉलेज वाले छात्रा को शासन से ही स्कॉलरशिप मंजूर नहीं होने का हवाला देकर टालते रहे। 181 सीएम हेल्पलाइन में इसकी शिकायत के बाद तेजी से कार्रवाई हुई तो कॉलेज वालों ने ही छात्रा के तमाम दस्तावेज विभाग को भेजे और स्कॉलरशिप मंजूर हुई। विभाग के अधिकारियों ने कालेज प्रबंधन को जमकर लताड़ भी लगाई और नोटिस इशू करने की बात कही।